'**सुखहीन योग**' बनायेगा। जातक के पीछ पीछे निन्दा होगा। जातक के भौतिक सुखों में बाधा आती रहेगी।

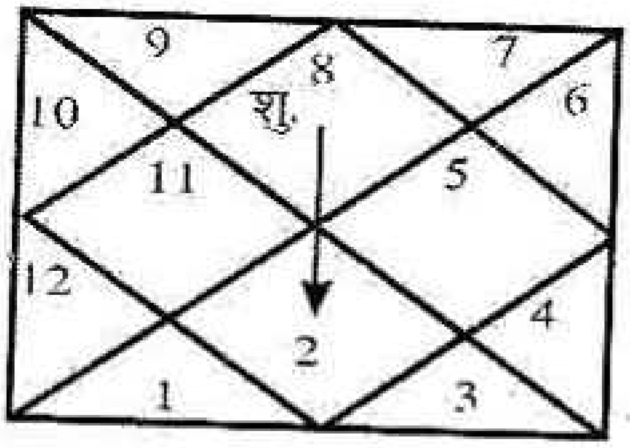
7. **बृहस्पति+राहु**–यहां दोनों ग्रह तुला राशि मे है। बृहस्पति यहां शत्रु राशि में तो राहु मित्र राशि में बैठकर '**चाण्डाल योग**' बना रहा है। बृहस्पति की इस स्थिति के कारण '**धनहीन योग**' एवं '**संतानहीन योग**' भी बनेगा। ऐसे जातक को धनसंग्रह में बाधाओं का सामना करना पड़ेगा। पुत्र संतति को लेकर चिंता रहेगी। जातक परोपकार, ब्राह्मण भोजन, धार्मिक अनुष्ठान एवं यात्राओं में रुपया खर्च करेगा।

8. **बृहस्पति+केतु**–बृहस्पति के साथ केतु होने से जातक धार्मिक होगा एवं परोपकार में रुपया खर्च करेगा।

❑❑❑

वृश्चिकलग्न में शुक्र की स्थिति

वृश्चिकलग्न में शुक्र की स्थिति प्रथम स्थान में



वृश्चिकलग्न में शुक्र सप्तमेश एवं व्ययेश है। वृश्चिकलग्न में शुक्र मुख्य मारकेश है, इसलिए इससे शुभफल की अपेक्षा रखना व्यर्थ है। यहां शुक्र प्रथम स्थान में वृश्चिक (सम) का होने से **'कुलदीपक योग'** बना रहा है। ऐसा जातक सुन्दर, आकर्षक एवं प्रभावशाली व्यक्ति का धनी होगा। शुक्र यहां वृष राशि से सातवें एवं तुला राशि से दूसरे स्थान पर होने से जातक को नजला, कफ, जुकाम आदि की शिकायत रहेगी।

दृष्टि–लग्नस्थ शुक्र की दृष्टि सप्तम भाव अपने ही घर वृष राशि पर होगी। ऐसे जातक की पत्नी सुन्दर होगी। सुन्दर सुघड़ होगी। सभ्य व विनम्र होगी।

निशानी–'लोमेश संहिता' अध्याय 7/श्लोक 1 के अनुसार सप्तमेश यदि लग्न में हो तो व्यक्ति परस्त्री गमन करता है एवं हृदयरोगी होता है।

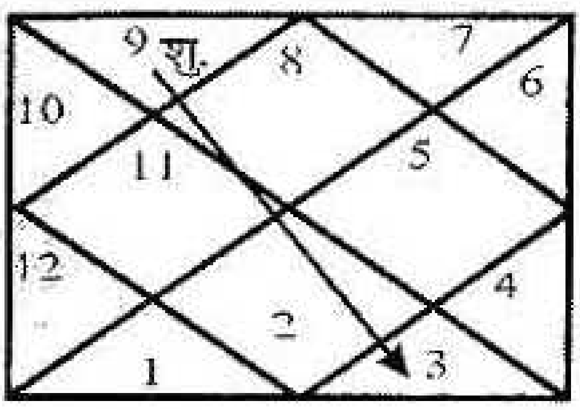
दशा–शुक्र की दशा-अंतर्दशा शुभ फल देगी। जातक की उन्नति होगी।

शुक्र का अन्य ग्रहों से संबंध–

1. **शुक्र+सूर्य**–शुक्र के साथ सूर्य 'पद्मसिंहासन योग' बनायेगा। जातक कीचड़ मे कमल के साथ खिलता हुआ उच्च पद व प्रतिष्ठा को प्राप्त होता है ऐसा जातक
2. **शुक्र+चंद्र**–शुक्र के साथ चंद्र होने से जातक परम सौभाग्यशाली, सुंदर एवं यशस्वी होगा।
3. **शुक्र+मंगल**–शुक्र के साथ मंगल **'रुचक योग'** बनायेगा। ऐसा जातक राजा के समान पराक्रमी एवं ऐश्वर्यशाली होगा।

4. **शुक्र+बुध**–शुक्र के साथ बुध होने से जातक व्यापार प्रिय एवं वैभवशाली होगा।
5. **शुक्र+गुरु**–शुक्र के साथ बृहस्पति होने से जातक धनवान होगा। आध्यात्मिक होगा।
6. **शुक्र+शनि**–शुक्र के साथ शनि होने से जातक को सांसारिक सुख पूर्ण मात्रा में मिलेगे। जातक की पत्नी पतिव्रता एवं व्यवहारिक ज्ञान से परिपूर्ण होगी।
7. **शुक्र+राहु**–शुक्र के साथ राहु '**लम्पट योग**' बनायेगा। जातक विलासी एवं धूर्त होगा। वैवाहिक सुख में बाधा बनी रहेगी।
8. **शुक्र+केतु**–शुक्र के साथ केतु जातक को धैर्यहीन बनायेगा। जातक कामी होगा।

वृश्चिकलग्न में शुक्र की स्थिति द्वितीय स्थान में



वृश्चिकलग्न में शुक्र सप्तमेश एवं व्ययेश है। वृश्चिकलग्न में शुक्र मुख्य मारकेश है, इसलिए इससे शुभफल की अपेक्षा रखना व्यर्थ है। शुक्र यहां द्वितीय स्थान में धनु (सम) राशि में है। ऐसा जातक विवाह के बाद धनी होता है। शुक्र यहां वृषभ राशि में अष्टम एवं तुला राशि में तृतीय स्थान पर होने के कारण धन, यश, पद-प्रतिष्ठा प्राप्ति में हल्की सी रुकावट महसूस होगी। जातक को धनसंग्रह में भी दिक्कतों का सामना करना पड़ेगा।

दृष्टि–द्वितीयस्थ शुक्र की दृष्टि अष्टम भाव (मिथुन राशि) पर होगी। जातक दीर्घजीवी होगा पर उसके गुप्त शत्रु बहुत होंगे।

निशानी–'लोमेश संहिता' अध्याय 7/श्लोक 3 के अनुसार ऐसा जातक अनेक स्त्रियों से समागम करने वाला होता है।

दशा–शुक्र की दशा-अंतर्दशा में सांसारिक सुखों की प्राप्ति होगी। शुक्र की दशा मिश्रित फल देगी।

शुक्र का अन्य ग्रहों से संबंध–

1. **शुक्र+सूर्य**–शुक्र के साथ सूर्य जातक को धनी बनायेगा। विवाह के बाद 'राजयोग' दिलायेगा।
2. **शुक्र+चंद्र**–शुक्र के साथ चंद्र जातक को महाधनी बनायेगा। जातक की वाणी अत्यन्त विनम्र एवं शिष्टाचार से युक्त होगी।

3. **शुक्र+मंगल**–शुक्र के साथ मंगल जातक को आर्थिक विषमता के साथ सफलता देगा।

4. **शुक्र+बुध**–शुक्र के साथ बुध जातक अर्थ संकट देगा। यहां अष्टमेश व्ययेश की युति वाणी में दोष उत्पन्न करेगी।

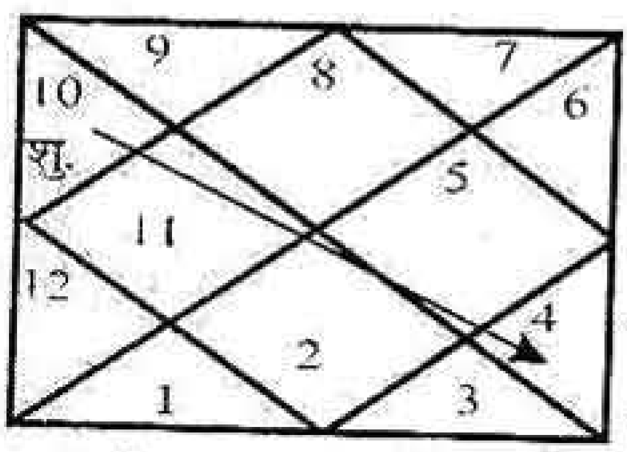
5. **शुक्र+गुरु**–शुक्र के साथ बृहस्पति जातक को महाधनी बनायेगा। भाग्योदय विवाह के बाद होगा।

6. **शुक्र+शनि**–शुक्र के साथ शनि मित्रों से धन लाभ एवं जीवन में सभी प्रकार की भौतिक सुविधाएं सहज में प्राप्त होगी।

7. **शुक्र+राहु**–शुक्र के साथ राहु '**लम्पट योग**' बनायेगा। जातक का धन गलत कार्यों में खर्च होगा। अर्थाभाव रहेगा।

8. **शुक्र+केतु**–शुक्र के साथ केतु धन संग्रह में बाधक है। जातक शौक-मौज में बहुत पैसा खर्च करेगा।

वृश्चिकलग्न में शुक्र की स्थिति तृतीय स्थान में



वृश्चिकलग्न में शुक्र सप्तमेश एवं व्ययेश है। वृश्चिकलग्न में शुक्र मुख्य मारकेश है, इसलिए इससे शुभफल की अपेक्षा रखना व्यर्थ है। यहां तृतीय स्थान में शुक्र मकर (मित्र) राशि में है। शुक्र पिता व सहोदर का सुख देगा। जातक पराक्रमी होगा। मित्रों से लाभ होगा। खासकर स्त्री-मित्रों से लाभ होगा। जातक को सामाजिक पद-प्रतिष्ठा, मान-सम्मान की प्राप्ति होगी। जातक को विदेश यात्रा या प्रतियोगी परीक्षाओं में सफलता मिलेगी।

दृष्टि–तृतीय भावगत शुक्र की दृष्टि भाग्य स्थान (कर्क राशि) पर होगी। जातक भाग्यशाली होगा।

निशानी–'लोमेश संहिता' अध्याय 7/श्लोक 5 के अनुसार सप्तमेश तृतीय में हो तो उस मनुष्य का पुत्र जीवित नहीं रहता कदाचित् कन्या के पश्चात् उत्पन्न हुआ पुत्र ही जीवित रहता है।

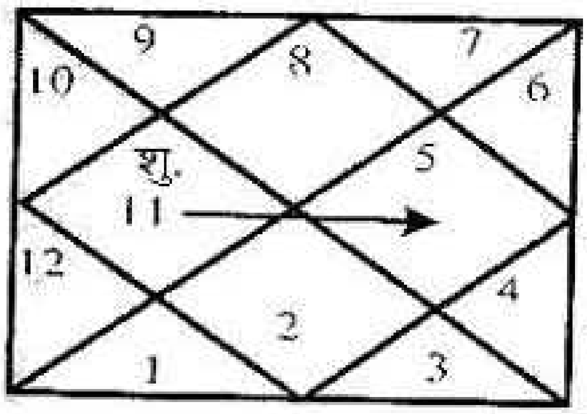
दशा–शुक्र की दशा-अंतर्दशा में शुभ फलों की प्राप्ति होगी।

शुक्र का अन्य ग्रहों से संबंध–

1. **शुक्र+सूर्य**–शुक्र के साथ सूर्य जातक को महान् पराक्रमी बनायेगा। जातक को मित्रों से लाभ होगा।

2. **शुक्र+चंद्र**–शुक्र के साथ चंद्र भाई-बहनों का सुख देगा। व्यक्ति भाग्यशाली होगा।
3. **शुक्र+मंगल**–शुक्र के साथ मंगल उच्च का जातक को महान् पराक्रमी बनायेगा।
4. **शुक्र+बुध**–शुक्र के साथ बुध जातक को अधिक बहनों का सुख देगा। स्त्री-मित्रों से लाभ रहेगा।
5. **शुक्र+गुरु**–शुक्र के साथ बृहस्पति नीच का जातक को भाई-बहन दोनों का सुख देगा। मित्रों द्वारा धन प्राप्ति भी होगी।
6. **शुक्र+शनि**–शुक्र के साथ शनि स्वगृही मित्र वर्ग से लाभ देगा।
7. **शुक्र+राहु**–शुक्र के साथ राहु **'लम्पट योग'** बनायेगा। जातक को झूठी बदनामी मिलेगी।
8. **शुक्र+केतु**–शुक्र के साथ केतु कीर्तिदायक है। स्त्री-मित्रों से लाभ है।

वृश्चिकलग्न में शुक्र की स्थिति चतुर्थ स्थान में



वृश्चिकलग्न में शुक्र सप्तमेश एवं व्ययेश है। वृश्चिकलग्न में शुक्र मुख्य मारकेश है, इसलिए इससे शुभफल की अपेक्षा रखना व्यर्थ है। यहां चतुर्थ स्थान में शुक्र कुंभ (मित्र) राशि में है। शुक्र के कारण यहां **'कुलदीपक योग'** बनेगा। ऐसे जातक को माता-पिता, घर, जमीन-जायदाद का सुख होता है। जातक को उत्तम वाहन की प्राप्ति होती है। उसे पैतृक सुख आंशिक मिलेगा।

दृष्टि–चतुर्थ भावगत शुक्र की दृष्टि दशम स्थान (सिंह राशि) पर होगी। जातक की राजनीति में रुचि रहेगी। राजा (सरकार) से सम्मान मिलेगा।

निशानी–'लोमेश संहिता' अध्याय 7/श्लोक 4 के अनुसार सप्तमेश यदि चतुर्थ स्थान में हो तो मनुष्य की स्त्री पतिव्रता नहीं होती। जातक को दांतों में कोई न कोई रोग अवश्य होगा।

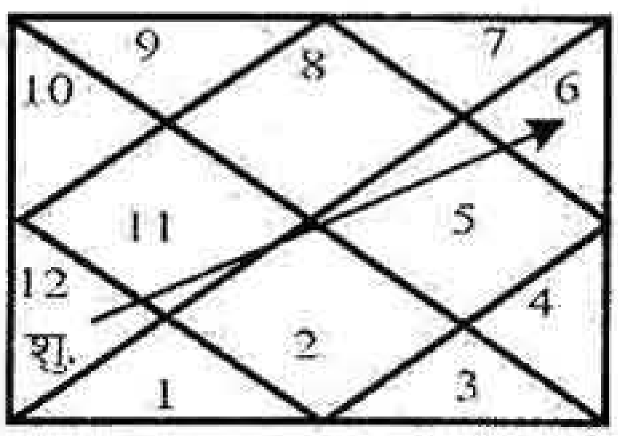
दशा–शुक्र की दशा-अंतर्दशा शुभ फल देगी। जातक को भौतिक सुखों की प्राप्ति होगी।

शुक्र का अन्य ग्रहों से संबंध–

1. **शुक्र+सूर्य**–शुक्र के साथ सूर्य **'पद्मसिंहासन योग'** बनायेगा। जातक मध्यम परिवार में जन्म लेकर कीचड़ में कमल की तरह आगे बढ़ेगा।

2. **शुक्र+चंद्र**–शुक्र के साथ चंद्र माता का सुख देगा। जातक के पास उत्तम वाहन होंगे।
3. **शुक्र+मंगल**–शुक्र के साथ मंगल भूमि लाभ देगा। जातक को भाईयों का सुख मिलेगा।
4. **शुक्र+बुध**–शुक्र के साथ बुध जातक को व्यापार-व्यवसाय से लाभ देगा। मामा का पक्ष मजबूत होगा।
5. **शुक्र+गुरु**–शुक्र के साथ बृहस्पति ससुराल से धन दिलायेगा।
6. **शुक्र+शनि**–शुक्र के साथ शनि 'शश योग' करायेगा।
7. **शुक्र+राहु**–शुक्र के साथ राहु **'लम्पट योग'** बनायेगा। जातक राजा के समान पराक्रमी व धनी होगा।
8. **शुक्र+केतु**–शुक्र के साथ केतु जातक को सुख प्राप्ति में बाधक है।

वृश्चिकलग्न में शुक्र की स्थिति पंचम स्थान में



वृश्चिकलग्न में शुक्र सप्तमेश एवं व्ययेश है। वृश्चिकलग्न में शुक्र मुख्य मारकेश है, इसलिए इससे शुभफल की अपेक्षा रखना व्यर्थ है। यहां पंचम भाव में शुक्र उच्च का है। मीन राशि के 27 अंशा में शुक्र परमोच्च का कहलाता है। जातक को उच्च शैक्षणिक उपाधि मिलेगी। जातक को उत्तम संतान सुख की प्राप्ति होगी। जातक को प्रतियोग परीक्षाओं में सफलता मिलेगी। ऐसे जातक को उच्च पद, प्रतिष्ठा, मान-सम्मान की प्राप्ति होगी।

दृष्टि–पंचमभावगत शुक्र की दृष्टि एकादश स्थान (कन्या राशि) पर होगी। जातक को व्यापार-व्यवसाय में आशातीत लाभ होगा। जातक का भाग्योदय विवाह के बाद होगा।

निशानी–'लोमेश संहिता' अध्याय 7/श्लोक 7 के अनुसार सप्तमेश यदि पंचम स्थान में हो तो जातक सर्वगुण सम्पन्न होता है तथा सदैव प्रसन्न चित्त रहेगा। आशावादी व खुशमिजाजी होगा।

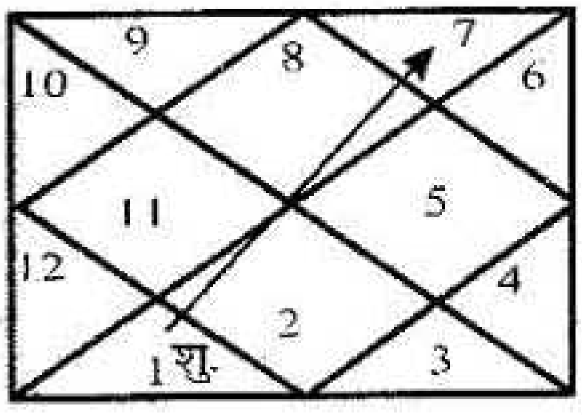
दशा–शुक्र की दशा-अंतर्दशा अत्यंत शुभ फल देगी।

शुक्र का अन्य ग्रहों से संबंध–

1. **शुक्र+सूर्य**–शुक्र के साथ सूर्य जातक को एक पुत्र का योग देता है। जातक विद्यावान होगा।

2. **शुक्र+चंद्र**–शुक्र के साथ चंद्र कन्या संतति की बाहुल्यता देगा।
3. **शुक्र+मंगल**–शुक्र के साथ मंगल पुत्र सुख देगा। जातक धनी व्यक्ति होगा।
4. **शुक्र+बुध**–शुक्र के साथ बुध '**नीचभंग राजयोग**' जातक को राजा के समान पराक्रमी व यशस्वी बनायेगा। जातक उच्च शिक्षा प्राप्त करेगा।
5. **शुक्र+गुरु**–शुक्र के साथ बृहस्पति '**किम्बहुनानामक राजयोग**' बनायेगा। जातक राजा के समान पराक्रमी एवं यशस्वी होगा।
6. **शुक्र+शनि**–शुक्र के साथ शनि जातक को भौतिक सुख संसाधनों की प्राप्ति देगा। जातक की संतति पढ़ी-लिखी होगी।
7. **शुक्र+राहु**–जातक का विवाह आकस्मिक होगा। '**लम्पट योग**' होते हुए भी अशुभ फल नहीं मिलेगा। पर दाम्पत्य जीवन की समरसता में कमी रहेगी।
8. **शुक्र+केतु**–शुक्र के साथ केतु संतान सुख में बाधक हैं।

वृश्चिकलग्न में शुक्र की स्थिति षष्टम स्थान में



वृश्चिकलग्न में शुक्र सप्तमेश एवं व्ययेश है। वृश्चिकलग्न में शुक्र मुख्य मारकेश है, इसलिए इससे शुभफल की अपेक्षा रखना व्यर्थ है। यहां छठे स्थान में शुक्र मेष (सम) राशि में होगा। शुक्र के कारण '**विलम्ब विवाह योग**' बनेगा। परन्तु व्ययेश होकर शुक्र छठे जाने से 'विमल नामक **विपरीत राजयोग**' बनेगा। ऐसा जातक धनी-मानी एवं अभिमानी होगा। जातक के पास उत्तम वाहन होगा पर वैवाहिक सुख क्षीण होगा। जातक को गुप्त रोगों व गुप्त शत्रुओं का भय रहेगा।

दृष्टि–षष्टम भावगत शुक्र की दृष्टि व्ययभाव (तुला राशि) पर होगी। जातक खर्चीले स्वभाव के कारण ऋणी होगा।

निशानी–'लोमेश संहिता' अध्याय 7/श्लोक 2 के अनुसार यदि सप्तमेश छठे हो तो जातक की स्त्री सदैव बीमारी रहेगी।

दशा–शुक्र की दशा-अंतर्दशा मिश्रित फल देगी।

शुक्र का अन्य ग्रहों से संबंध–

1. **शुक्र+सूर्य**–शुक्र के साथ सूर्य '**राजभंग योग**' कराता है। जातक को सरकारी नौकरी प्राप्ति हेतु काफी दिक्कतों का सामना करना पड़ेगा।

2. **शुक्र+चंद्र**–शुक्र के साथ चंद्र '**भाग्यभंग योग**' बनायेगा। जातक को भाग्योदय हेतु काफी संघर्ष करना पड़ेगा।

3. **शुक्र+मंगल**–शुक्र के साथ मंगल '**लग्नभंग योग**' बनायेगा। जातक को परिश्रम का लाभ नहीं मिलेगा।

4. **शुक्र+बुध**–शुक्र के साथ बुध '**विपरीत राजयोग**' बनायेगा। जातक धनी–मानी होगा। परन्तु व्यापार में नुकसान होने का योग बना रहेगा।

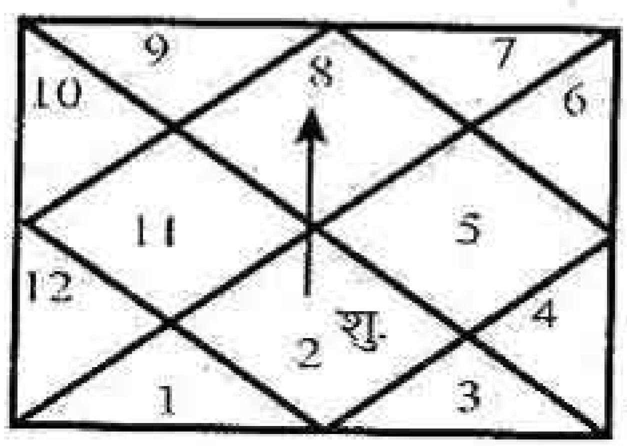
5. **शुक्र+गुरु**–शुक्र के साथ बृहस्पति '**धनहीन योग**' एवं '**संतानहीन योग**' बनायेगा। जातक को धन प्राप्ति हेतु दिक्कतों का सामना करना पड़ेगा।

6. **शुक्र+शनि**–शुक्र के साथ शनि '**पराक्रमभंग योग**', '**सुखहीन योग**' बनायेगा। जातक को सामाजिक बदनामी मिलेगी।

7. **शुक्र+राहु**–शुक्र के साथ राहु '**लम्पट योग**' बनायेगा। जातक को गुप्त रोग की संभावना रहेगी।

8. **शुक्र+केतु**–शुक्र के साथ केतु गुप्त शत्रु बढ़ायेगा। गुप्त बीमारी की संभावना भी रहेगी।

वृश्चिकलग्न में शुक्र की स्थिति सप्तम स्थान में



वृश्चिकलग्न में शुक्र सप्तमेश एवं व्ययेश है। वृश्चिकलग्न में शुक्र मुख्य मारकेश है, इसलिए इससे शुभफल की अपेक्षा रखना व्यर्थ है। शुक्र यहां सप्तम स्थान में स्वगृही है। शुक्र के कारण '**कुलदीपक योग**' एवं '**मालव्य योग**' होगी। जातक कामी होगा। जातक उच्च पदासीन एवं उत्तम श्रेणी का व्यापारी होगा। जातक महाधनी होगा।

दृष्टि–सप्तमस्थ शुक्र की दृष्टि लग्नस्थान (वृश्चिक राशि) पर होगी। जातक को परिश्रम का फल मिलेगा। ऐसे जातक के व्यक्तित्व में ओज व आकर्षण होगा।

निशानी–'लोमेश संहिता' अध्याय 7/श्लोक 1 के अनुसार सप्तमेश यदि सप्तम में हो तो जातक पर स्त्री रमण करता है एवं हृदयरोगी होता है।

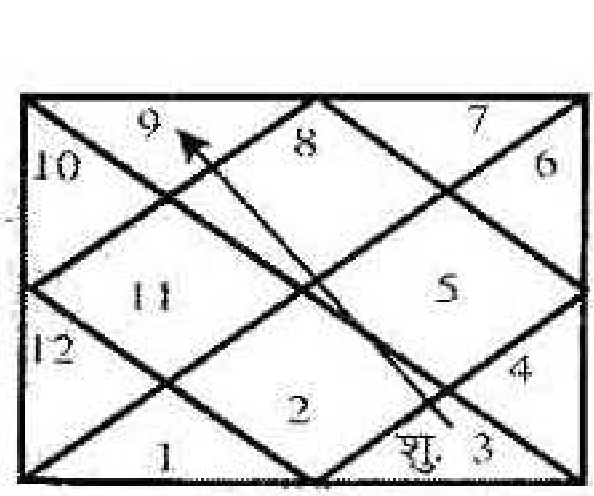
दशा–शुक्र की दशा-अंतर्दशा में जातक को भौतिक सुख व ऐश्वर्य की प्राप्ति होगी। जातक यात्राएं बहुत करेगा।

शुक्र का अन्य ग्रहों से संबंध–

1. **शुक्र+सूर्य**–शुक्र के साथ सूर्य जातक को उग्र स्वभाव की पत्नी देगा। जातक की पत्नी कमाऊ महिला होगी।

2. **शुक्र+चंद्र**—शुक्र के साथ चंद्र जातक की पत्नी सुन्दरतम महिला होगा। यहां '**किम्बहुनानामक राजयोग**' के कारण जातक राजा के समान मौज-शौक को भोगेगा।
3. **शुक्र+मंगल**—शुक्र के साथ मंगल 'लग्नाधिपति योग' बनायेगा। जातक कामी होगा। उसे परिश्रम में सफलता मिलेगी।
4. **शुक्र+बुध**—शुक्र के साथ बुध जातक को व्यापार-व्यवसाय में लाभ देगा। जातक का ससुराल व्यापार-प्रिय होगा।
5. **शुक्र+गुरु**—शुक्र के साथ बृहस्पति जातक को पत्नी से धन दिलायेगा। जातक को ससुराल की सम्पत्ति मिलेगी।
6. **शुक्र+शनि**—शुक्र के साथ शनि जातक को भौतिक सुख-संसाधन एवं उपलब्धियां देगा।
7. **शुक्र+राहु**—शुक्र के साथ राहु '**लम्पट योग**' बनायेगा। जातक का विवाह आकस्मिक होगा।
8. **शुक्र+केतु**—शुक्र के साथ केतु विवाह सुख में बाधक है।

वृश्चिकलग्न में शुक्र की स्थिति अष्टम स्थान में



वृश्चिकलग्न में शुक्र सप्तमेश एवं व्ययेश है। वृश्चिकलग्न में शुक्र मुख्य मारकेश है, इसलिए इससे शुभफल की अपेक्षा रखना व्यर्थ है। यहां अष्टम स्थान में शुक्र मिथुन (मित्र) राशि में है। शुक्र के कारण '**विलम्ब विवाह योग**' बना। परन्तु व्ययेश होकर आठवें जाने से 'विमल नामक **विपरीत राजयोग**' बना। जातक दीर्घजीवी होगा। जातक का दाम्पत्य जीवन कष्टमय होगा। जातक को यौन रोग होंगे। गुप्त शत्रु भी जातक को परेशान करेंगे।

दृष्टि—अष्टम भावगत शुक्र की दृष्टि धनस्थान (धनु राशि) पर होगी। जातक की गुप्त बीमारी में धन खर्च होगा।

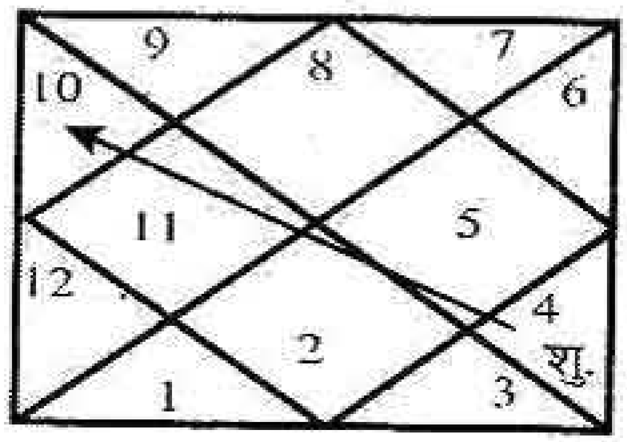
निशानी—'लोमेश संहिता' अध्याय 7/श्लोक 2 के अनुसार यदि सप्तमेश आठवें हो तो जातक की स्त्री सदैव बीमार रहेगी।

दशा—शुक्र की दशा-अंतर्दशा अनिष्ट फल देगी।

शुक्र का अन्य ग्रहों से संबंध–

1. **शुक्र+सूर्य**–शुक्र के साथ सूर्य '**राजभंग योग**' बनायेगा। जातक को सरकारी नौकरी की प्राप्ति हेतु बहुत परेशानी उठानी पड़ेगी।
2. **शुक्र+चंद्र**–शुक्र के साथ चंद्र '**भाग्यभंग योग**' बनायेगा। जातक को भाग्योदय हेतु काफी दिक्कतें उठानी पड़ेगी।
3. **शुक्र+मंगल**–शुक्र के साथ मंगल '**लग्नभंग योग**' बनायेगा। जातक को परिश्रम का लाभ नहीं मिलेगा।
4. **शुक्र+बुध**–शुक्र के साथ बुध '**विपरीत राजयोग**' के कारण जातक को धनी एवं ऐश्वर्यशाली जीवन देगा।
5. **शुक्र+गुरु**–शुक्र के साथ बृहस्पति '**धनहीन योग**'एवं '**संतानहीन योग**' बनायेगा। जातक को आर्थिक विषमताओं का सामना करना पड़ेगा।
6. **शुक्र+शनि**–शुक्र के साथ शनि '**पराक्रमभंग योग**' एवं '**सुखहीन योग**' बनायेगा। जातक को मित्रों से बदनामी मिलेगी। समाज में अपकीर्ति होगी।
7. **शुक्र+राहु**–शुक्र के साथ राहु '**लम्पट योग**' बनायेगा। जातक कामी होगा। सम्भवत: अन्य स्त्रियों से निरन्त शारीरिक सम्पर्क रहेगा।
8. **शुक्र+केतु**–शुक्र के साथ केतु गुप्त रोग या सैक्स संबंधी बीमारी देगा।

वृश्चिकलग्न में शुक्र की स्थिति नवम स्थान में



वृश्चिकलग्न में शुक्र सप्तमेश एवं व्ययेश है। वृश्चिकलग्न में शुक्र मुख्य मारकेश है, इसलिए इससे शुभफल की अपेक्षा रखना व्यर्थ है। नवम भाव में शुक्र कर्क (शत्रु) राशि में है। जातक परम सौभाग्यशाली होगा। उसे माता-पिता, भाई-बहन, जमीन-जायदाद, सुन्दर स्त्री का सुख मिलेगा। ऐसे जातक का ससुराल धनी होगा। जातक का सही भाग्योदय विवाह के बाद होता है।

दृष्टि–नवमभावगत शुक्र की दृष्टि पराक्रम स्थान (मकर राशि) पर होगी। जातक की सहोदर भाईयों का सुख, इष्ट-मित्रों का सुख मिलेगा।

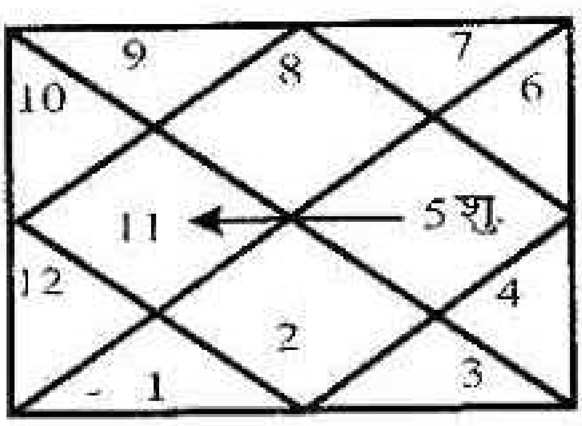
निशानी–'लोमेश संहिता' अध्याय 7/श्लोक 3 के अनुसार सप्तमेश यदि नवम स्थान में हो तो ऐसा जातक अनेक स्त्रियों के साथ समागम करता है।

दशा–शुक्र की दशा-अंतर्दशा जातक का भाग्योदय करायेगी। जातक का पराक्रम बढ़ेगा।

शुक्र का अन्य ग्रहों से संबंध–

1. **शुक्र+सूर्य**–शुक्र के साथ सूर्य जातक का भाग्य विवाह के बाद चमकायेगा।
2. **शुक्र+चंद्र**–शुक्र के साथ चंद्र जातक का शीघ्र भाग्योदय देगा। जातक का जीवनसाथी सुन्दर होगा।
3. **शुक्र+मंगल**–शुक्र के साथ मंगल नीच का भाईयों से लाभ एवं परिश्रम का फल देगा।
4. **शुक्र+बुध**–शुक्र के साथ बुध जातक को व्यापार प्रिय बनायेगा।
5. **शुक्र+गुरु**–शुक्र के साथ बृहस्पति उच्च का जातक को महाधनी बनायेगा। जातक उच्च शिक्षा प्राप्त करेगा।
6. **शुक्र+शनि**–शुक्र के साथ शनि जातक को पराक्रमी बनायेगा। जातक महान् सुखी होगा।
7. **शुक्र+राहु**–शुक्र के साथ राहु '**लम्पट योग**' बनायेगा। जातक के भाग्योदय में भारी बाधा आयेगी।
8. **शुक्र+केतु**–शुक्र के साथ केतु जातक को संघर्ष के साथ उन्नति देगा।

वृश्चिकलग्न में शुक्र की स्थिति दशम स्थान में



वृश्चिकलग्न में शुक्र सप्तमेश एवं व्ययेश है। वृश्चिकलग्न में शुक्र मुख्य मारकेश है, इसलिए इससे शुभफल की अपेक्षा रखना व्यर्थ है। यहां दशम स्थान में शुक्र सिंह (शत्रु) राशि में होगा। शुक्र के कारण '**कुलदीपक योग**' बनेगा। ऐसे जातक बुद्धिमान, साहित्यकार, कलाकार, संगीत, अभिनय का शौकीन होता है। जातक को माता-पिता, भाई-बहन, पत्नी-संतान, पद-प्रतिष्ठा का सुख मिलेगा। जातक को व्यापार-व्यवसाय से लाभ होगा।

दृष्टि–दशमभावगत शुक्र की दृष्टि चतुर्थ स्थान (कुंभ राशि) पर होगी। ऐसे जातक को उत्तम वाहन सुख मिलेगा। जातक का निजी सुंदर भवन होगा।

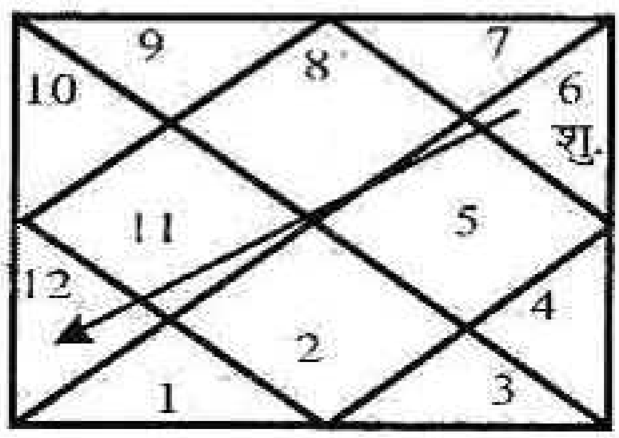
निशानी–'लोमेश संहिता' अध्याय 7/श्लोक 4 के अनुसार सप्तमेश यदि दशम में हो तो मनुष्य की स्त्री पतिव्रता नहीं होती। जातक के दांतों में कोई-न-कोई रोग अवश्य होगा।

दशा–शुक्र की दशा-अंतर्दशा में जातक की उन्नति होगी।

शुक्र का अन्य ग्रहों से संबंध–

1. **शुक्र+सूर्य**–शुक्र के साथ सूर्य '**रविकृत राजयोग**' देगा। जातक को सरकार में उच्च पद-प्रतिष्ठा की प्राप्त होगी। जातक राज्याधिकारी होगा।
2. **शुक्र+चंद्र**–शुक्र के साथ चंद्र जातक को राजनीति में लाभ देगा। जातक भाग्यशाली होगा। उसका प्रभाव सरकारी क्षेत्र में होगा।
3. **शुक्र+मंगल**–शुक्र के साथ मंगल जातक की बड़ी भूमि-जायदाद, सम्पत्ति का स्वामी बनायेगा।
4. **शुक्र+बुध**–शुक्र के साथ बुध जातक को व्यापार प्रिय व्यक्तित्व देगा।
5. **शुक्र+गुरु**–शुक्र के साथ बृहस्पति जातक को पत्नी–ससुराल से धन लाभ देगा। राजनीति में भी लाभ होगा।
6. **शुक्र+शनि**–शुक्र के साथ शनि जातक को भौतिक सुखों की प्राप्ति करायेगा। जातक 'करोड़पति' होगा।
7. **शुक्र+राहु**–शुक्र के साथ राहु '**लम्पट योग**' बनायेगा। जातक को राज्यपक्ष से नुकसान होगा। सरकारी कर्मचारी धोखा देगें।
8. **शुक्र+केतु**–शुक्र के साथ केतु सरकारी-क्षेत्र में बाधक है।

वृश्चिकलग्न में शुक्र की स्थिति एकादश स्थान में



वृश्चिकलग्न में शुक्र सप्तमेश एवं व्ययेश है। वृश्चिकलग्न में शुक्र मुख्य मारकेश है, इसलिए इससे शुभफल की अपेक्षा रखना व्यर्थ है। एकादश स्थान में शुक्र नीच का है। ऐसे जातक को व्यापार-व्यवसाय से लाभ होगा। उसे बौद्धिक, भौतिक और आर्थिक सुखों की प्राप्ति होगी। उसका राजनैतिक वर्चस्व भी बढ़ेगा। पर जातक का वीर्य दूषित होगा।

दृष्टि–एकादश भावगत शुक्र की दृष्टि पंचम स्थान (मीन राशि) पर होगी। ऐसे जातक को उत्तम विद्या एवं उत्तम संतति का सुख मिलेगा।

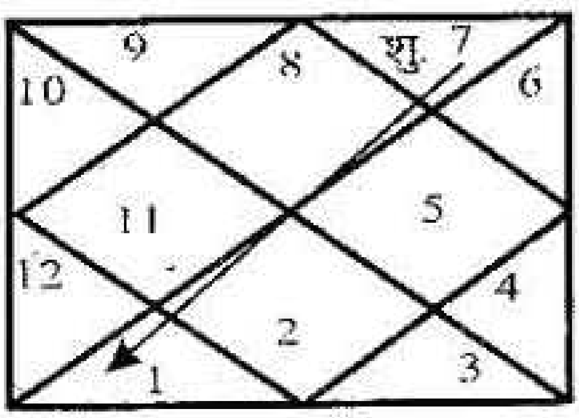
निशानी–'लोमेश संहिता' अध्याय 7/श्लोक 5 के अनुसार यदि सप्तमेश एकादश स्थान में हो तो उस मनुष्य का पुत्र जीवित नहीं रहता। कदाचित कन्या के पश्चात् उत्पन्न हुआ पुत्र ही जीवित रहेगा।

दशा–शुक्र की दशा-अंतर्दशा में भौतिक सुखों की प्राप्ति होगी। शुक्र की दशा में व्यापार-व्यवसाय में बढ़ोत्तरी होगी।

शुक्र का अन्य ग्रहों से संबंध–

1. **शुक्र+सूर्य**–शुक्र के साथ सूर्य जातक को व्यापार-व्यवसाय में लाभ देगा।
2. **शुक्र+चंद्र**–शुक्र के साथ चंद्र जलीय पदार्थों में लाभ देगा।
3. **शुक्र+मंगल**–शुक्र के साथ मंगल जातक को उद्योगपति बनायेगा।
4. **शुक्र+बुध**–शुक्र के साथ बुध जातक को व्यापार से धनी बनायेगा। बुध उच्च का होकर '**नीचभंग राजयोग**' बनायेगा। जातक राजा के समान पराक्रमी होगा।
5. **शुक्र+गुरु**–शुक्र के साथ बृहस्पति जातक को धनी बनायेगा। जातक को ससुराल से लाभ होगा।
6. **शुक्र+शनि**–शुक्र के साथ शनि जातक को तमाम सांसारिक सुख देगा।
7. **शुक्र+राहु**–शुक्र के साथ राहु '**लम्पट योग**' बनायेगा। जातक का चलता व्यापार (उद्योग) यकायक बन्द होगा।
8. **शुक्र+केतु**–शुक्र के साथ केतु जातक को व्यापार में निरन्तर उतार-चढ़ाव लायेगा।

वृश्चिकलग्न में शुक्र की स्थिति द्वादश स्थान में



वृश्चिकलग्न में शुक्र सप्तमेश एवं व्ययेश है। वृश्चिकलग्न में शुक्र मुख्य मारकेश है, इसलिए इससे शुभफल की अपेक्षा रखना व्यर्थ है। यहां द्वादश स्थान में शुक्र स्वगृही होगा। शुक्र की इस स्थिति के कारण '**विलम्ब विवाह योग**' बनाता है परन्तु द्वादश स्थान में द्वादशेश स्वगृही होने से 'विमल नामक **विपरीत राजयोग**' भी बनेगा। ऐसा जातक धनी, मानी व अभिमानी होता है। जातक को सभी प्रकार के भौतिक सुख-सुविधाओं की प्राप्ति होगी। जातक को वाहन सुख मिलेगा। जातक को विदेश यात्रा से लाभ होगा।

दृष्टि–द्वादश भावगत शुक्र की दृष्टि षष्टम स्थान (मेष राशि) पर होगी। जातक के गुप्त शत्रु बहुत होंगे।

निशानी–'लोमेश संहिता' अध्याय 7/श्लोक 6 के अनुसार ऐसे जातक की पत्नी व कन्या देखने में सुंदर होगी।

दशा–शुक्र की दशा-अंतर्दशा मिश्रित फल देगी।

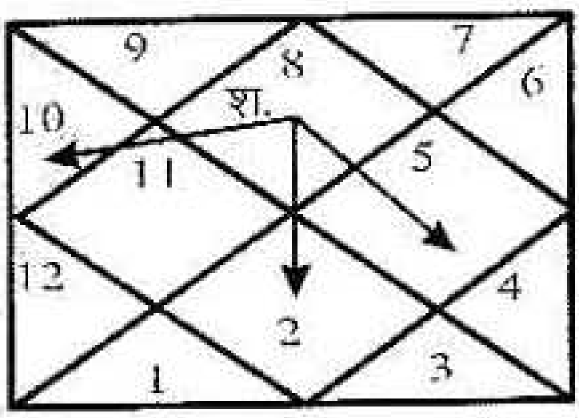
शुक्र का अन्य ग्रहों से संबंध–

1. **शुक्र+सूर्य**–शुक्र के साथ सूर्य '**राजभंग योग**' बनायेगा। जातक को सरकारी नौकरी की प्राप्ति हेतु बहुत परेशानियां उठानी पड़ेगी।
2. **शुक्र+चंद्र**–शुक्र के साथ चंद्र '**भाग्यभंग योग**' बनायेगा। जातक का भाग्योदय अनेक दिक्कतों के बाद भी कहीं होगा। जातक की बाई आंख कमजोर होगी।
3. **शुक्र+मंगल**–शुक्र के साथ मंगल '**लग्नभंग योग**' करायेगा। जातक को परिश्रम का लाभ नहीं मिलेगा।
4. **शुक्र+बुध**–शुक्र के साथ बुध '**विपरीत राजयोग**' बनायेगा। जातक धनी होगा। मौज़-शौक में रुपया खर्च करेगा।
5. **शुक्र+गुरु**–शुक्र के साथ बृहस्पति '**धनहीन योग**' एवं '**संतानहीन योग** बनायेगा। जातक की आर्थिक विषमताओं का सामना करना पड़ेगा।
6. **शुक्र+शनि**–शुक्र के साथ शनि '**किम्बहुना नामक राजयोग**' बनायेगा। जातक राजा के समान पराक्रमी एवं ऐय्याश होगा।
7. **शुक्र+राहु**–शुक्र के साथ राहु '**लम्पट योग**' बनायेगा। ऐसा जातक व्याभिचारी होगा। सैक्स स्कैण्डल में फंसेगा। स्त्रियों के कारण बदनाम होगी।
8. **शुक्र+केतु**–शुक्र के साथ केतु जातक को मोक्ष मार्ग का पथिक बनायेगा। जातक आध्यात्मिक प्राणी होगा।

❑❑❑

वृश्चिकलग्न में शनि की स्थिति

वृश्चिकलग्न में शनि की स्थिति प्रथम स्थान में



वृश्चिकलग्न में शनि तृतीयेश एवं चतुर्थेश होने से पापी है। शनि लग्नेश मंगल का शत्रु भी है। फलतः यहां अशुभ फल ही देगा। शनि यहां प्रथम स्थान में वृश्चिक (शत्रु) राशि में है। ऐसा जातक हठी व ज़िद्दी होता है। उसे जमीन-जायदाद का सुख, भौतिक संसाधन, सांसारिक ऐश्वर्य की प्राप्ति होती है। परन्तु आसानी से नहीं। जातक को इन सुखों की प्राप्ति हेतु संघर्ष करना पड़ता है। संघर्ष के बाद जातक लोकप्रिय जननेता बन जाता है।

दृष्टि–शनि की दृष्टि पराक्रम स्थान (मकर राशि), सप्तम (वृष राशि) एवं दशम भाव (सिंह राशि) पर होगी। ऐसे जातक को भाई-बहन का सुख मिलता है। पत्नी-संतान का सुख मिलता है। रोजी-रोजगार का सुख भी मिलता है पर रोज़गार का सुख कुछ विलम्ब से मिलेगा।

निशानी–'लोमेश संहिता' अध्याय 3/श्लोक 6 के अनुसार यदि तृतीयेश लग्न में हो तो ऐसा व्यक्ति अपने उद्यम तथा पराक्रम से धनवान होता है तथा सदा दूसरों की सेवा में तत्पर रहता है। परन्तु सुखेश लग्न में होने से जातक पिता के हाथ आये धन को भी छोड़ देता है।

दशा–शनि की दशा-अंतर्दशा शुभ फल देगी। पर जीवन में निखार संघर्ष के बाद ही आयेगा।

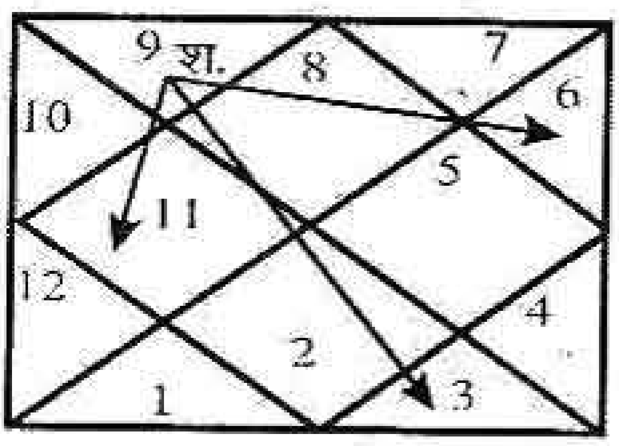
शनि का अन्य ग्रहों से संबंध–

1. **शनि+सूर्य**–यहां दोनों ग्रह वृश्चिक राशि में होंगे। सूर्य यहां मित्रराशि में तो शनि शत्रु राशि में होगा। शनि पराक्रमेश व सुखेश तथा सूर्य दशमेश होकर

लग्न में बैठेगा। फलतः जातक महान् पराक्रमी होगा। राज (सरकार) में उसका प्रभाव रहेगा। पर जातक का राजनैतिक वर्चस्व पिता की मृत्यु के बाद मुखरित होगा।

2. **शनि+चंद्र**–शनि के साथ चंद्र जातक का पराक्रम बढ़ायेगा। जातक की उन्नति शीघ्र होगी।
3. **शनि+मंगल**–शनि के साथ मंगल होने से जातक की कुण्डली में '**रुचक योग**' बनेगा। जातक राजातुल्य पराक्रमी होगा।
4. **शनि+बुध**–शनि के साथ बुध जातक को व्यापार प्रिय बनायेगा।
5. **शनि+गुरु**–शनि के साथ बृहस्पति होने से जातक अपने परिश्रम से खूब धन कमायेगा एवं स्थाई सम्पत्ति खरीदेगा।
6. **शनि+शुक्र**–शनि के साथ शुक्र जातक के वैवाहिक सुख एवं भौतिक सामग्री-सुविधाएं देगा।
7. **शनि+राहु**–शनि के साथ राहु '**मान्दी योग**' के कारण जातक को दम्भी व हठी बनायेगा। जातक की उन्नति में बाधाएं आती रहेगी।
8. **शनि+केतु**–शनि के साथ केतु जातक को महत्वकांक्षी बनायेगा। एवं गलत कार्य करने को प्रेरित करेगा।

वृश्चिकलग्न में शनि की स्थिति द्वितीय स्थान में



वृश्चिकलग्न में शनि तृतीयेश एवं चतुर्थेश होने से पापी है। शनि लग्नेश मंगल का शत्रु भी है। फलतः यहां अशुभ फल ही देगा। द्वितीय स्थान में शनि, धनु (सम) राशि में है। ऐसे व्यक्ति को धन-प्रतिष्ठा, स्त्री-संतान, जमीन-जायदाद, वाहन, मकान का पूर्ण सुख मिलेगे। जातक की वाणी घमण्डी व अंहकारपूर्ण होगी। जातक अपने स्वयं के पुरुषार्थ व पराक्रम से विपुल धन कमायेगा।

दृष्टि–द्वितीयस्थ की दृष्टि चतुर्थ भाव (कुंभराशि), अष्टम भाव (मिथुन राशि) एवं एकादश भाव (कन्या राशि) पर होगी। जातक को भौतिक सुखों की प्राप्ति होगी। जातक दीर्घजीवी होगा। जातक व्यापार से कमायेगा।

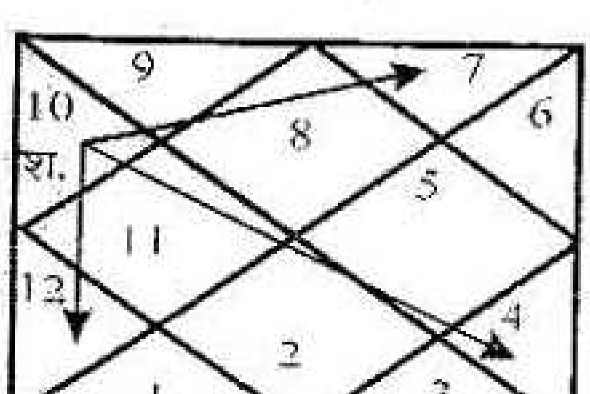
निशानी–'लोमेश संहिता' अध्याय 3/श्लोक 7 के अनुसार तृतीयेश यदि धनस्थान में व्यक्ति स्थूल शरीर वाला गुदाभंजक होता है। परनतु सुखेश द्वितीय में होने से व्यक्ति भोग विलास में धन का उपयोग करता हुआ पराक्रमी होता है।

दशा–शनि की दशा-अंतर्दशा शुभ फल देगी। भौतिक सुखों की प्राप्ति होगी।

शनि का अन्य ग्रहों से संबंध–

1. **शनि+सूर्य**–यहां दोनों ग्रह धनु राशि में होंगे। सूर्य यहां मित्रक्षेत्री तो शनि सम क्षेत्री होगा। दसमेश होकर सूर्य एवं पराक्रमेश सुखेश होकर शनि के धन स्थान में बैठने से जातक धनी होगा। जातक पराक्रमी होगा। दीर्घजीवी होगा। उसके मित्र बहुत होंगे, परन्तु जातक के सही पराक्रम का उदय उसके पिता की मृत्यु के बाद होगा।
2. **शनि+चंद्र**–शनि के साथ चंद्र जातक को धनी बनायेगा। जातक जनसम्पर्क के माध्यम से कमायेगा।
3. **शनि+मंगल**–शनि के साथ मंगल होने से जातक अपने पराक्रम पुरुषार्थ से अपना क्षेत्र खुद बनायेगा। और समाज का प्रतिष्ठित व्यक्ति होगा।
4. **शनि+बुध**–शनि के साथ बुध होने से जातक व्यापार के द्वारा धनार्जन करेगा।
5. **शनि+गुरु**–शनि के साथ बृहस्पति होने से 'मातृमूल धनयोग' एवं **भ्रातृमूल धनयोग**' बनेगा। जातक को माता की सम्पत्ति मिलेगी। भाईयों व मित्रों द्वारा रक्षित धन मिलेगा। भागीदारी से लाभ होगा।
6. **शनि+शुक्र**–शनि के साथ शुक्र होने से ससुराल पराक्रमी होगा। पत्नी का व्यक्तित्व प्रभावशाली होगा।
7. **शनि+राहु**–शनि के साथ राहु **'मान्दी योग'** के कारण जातक अप्रिय व कर्णकटु वाणी बोलेगा। इसलिए उसके कुटम्बीजन उसके विरोधी होंगे।
8. **शनि+केतु**–शनि के साथ केतु वाणी के स्खलन दोष प्रकट करता है।

वृश्चिकलग्न में शनि की स्थिति तृतीय स्थान में



वृश्चिकलग्न में शनि तृतीयेश एवं चतुर्थेश होने से पापी है। शनि लग्नेश मंगल का शत्रु भी है। फलत: यहां अशुभ फल ही देगा। यहां तृतीय स्थान में शनि स्वगृही है। ऐसे जातक को भाई-बहनों, इष्ट-मित्रों का लाभ होगा। जातक को माता-पिता, जमीन-जायदाद, स्त्री-संतान का सुख मिलेगा। जाति में, समाज में सम्मान होगा। पद-प्रतिष्ठा की प्राप्ति होगी। ऐसा जातक विदेशी व्यापार से कमायेगा। परदेश की भूमि में लाभ है।

दृष्टि–तृतीयस्थ शनि की दृष्टि पंचम भाव (मीन राशि), भाग्यभवन (कर्क राशि) एवं द्वादश भाव (तुला राशि) पर होगी। जातक विद्यावान होगा पर विदेशी भाषा पढ़ेगा। जातक का भाग्योदय 32वें वर्ष में होगा। जातक खर्चीले स्वभाव का होगा।

निशानी–'लोमेश संहिता' अध्याय 3/श्लोक 6 के अनुसार तृतीय में स्वगृही होने से व्यक्ति बड़ा पराक्रमी एवं पुत्र सुख से युक्त होता है परन्तु बड़े भाई का सुख नहीं होता।

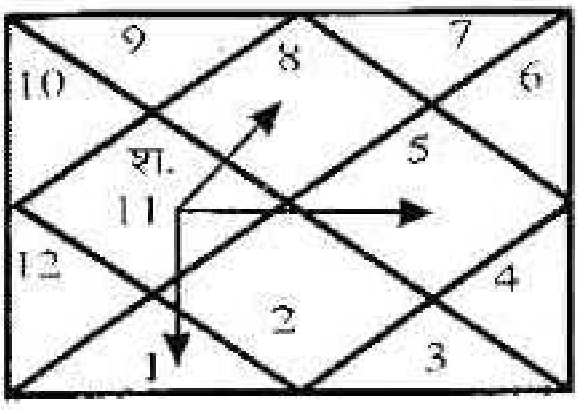
दशा–शनि की दशा-अंतर्दशा अत्यन्त शुभफल देगी। भौतिक सुख-वैभव की प्राप्ति होगी। पराक्रम बढ़ेगा एवं भाग्योदय के अवसर प्राप्त होगे।

शनि का अन्य ग्रहों से संबंध–

1. **शनि+सूर्य**–यहां दोनों ग्रह मकर राशि में होंगे। सूर्य यहां शत्रुक्षेत्री तो शनि स्वगृही होगा। दशमेश सूर्य एवं पराक्रमेश शनि की युति तृतीय भाव में होने से जातक जबरदस्त पराक्रमी एवं धनी व्यक्ति होगा। उसे जीवन में सभी प्रकार के भौतिक संसाधनों व सुखों की प्राप्ति होगी पर जातक को छोटे-बड़े भाईयों का सुख नहीं होगा। अन्य परिजनों से वैरभाव या कटुता रहेगी।
2. **शनि+चंद्र**–शनि के साथ चंद्र जातक को पराक्रमी बनायेगा। भाई-बहनों का सुख देगा।
3. **शनि+मंगल**–शनि के साथ मंगल '**किम्बहुना नामक राजयोग**' बनायेगा। जातक महान् पराक्रमी, चर्चित व कुख्यात होगा।
4. **शनि+बुध**–शनि के साथ बुध जातक को भाई-बहन, इष्ट-मित्रों का सुख देगा।
5. **शनि+गुरु**–शनि के साथ बृहस्पति '**नीचभंग योग**' बनायेगा। जातक राजा के समान पराक्रमी होगा।
6. **शनि+शुक्र**–शनि के साथ शुक्र जातक का वैवाहिक सुख-समृद्धि बनायेगा। जातक को स्त्री-सुख से लाभ होगा।
7. **शनि+राहु**–शनि के साथ राहु '**मान्दी योग**' के कारण भाईयों में विद्वेष-कलह करायेगी।
8. **शनि+केतु**–शनि के साथ केतु परिजनों में विद्वेष करायेगा।

वृश्चिकलग्न में शनि की स्थिति चतुर्थ स्थान में

वृश्चिकलग्न में शनि तृतीयेश एवं चतुर्थेश होने से पापी है। शनि लग्नेश मंगल का शत्रु भी है। फलत: यहां अशुभ फल ही देगा। यहां चतुर्थ स्थान में शनि अपनी



मूलत्रिकोण कुंभराशि में है। जिसके कारण '**शशयोग**' बना। ऐसा जातक राजा के समान ऐश्वर्यशाली एवं सुख-संसाधनों से सम्पन्न होगा। ऐसे जातक को माता-पिता, भाई-बहन, स्त्री-संतान का पूर्ण सुख होता है। जातक बड़ी भू-सम्पत्ति का स्वामी होता है। उत्तम वाहन, नौकर व जमीन-जायदाद का सुख होता है।

दृष्टि–चतुर्थभावगत शनि की दृष्टि छठे स्थान (मेष राशि), दशम भाव (सिंह राशि) एवं लग्न स्थान (वृश्चिक राशि) पर होगी। जातक के गुप्त शत्रु बहुत होंगे। जातक का राज में पाया होगा। उसे परिश्रम का फल मिलेगा।

निशानी–'लोमेश संहिता' अध्याय 3/श्लोक 6 के अनुसार सुखेश यदि सुखस्थान में स्वगृही हो तो जातक राजा का मंत्री, सरकार में उच्च पद को प्राप्त करता है। परन्तु तृतीयेश चतुर्थ भाव में होने से ऐसे जातक की पत्नी, क्रूर व क्रोधी स्वभाव की होती है।

दशा–शनि की दशा-अंतर्दशा में जातक को भौतिक सुखों-संसाधनों की प्राप्ति होगी। जातक को रोजी-रोजगार का, व्यापार का लाभ मिलेगा। शनि की दशा में शत्रु परास्त होंगे।

शनि का अन्य ग्रहों से संबंध–

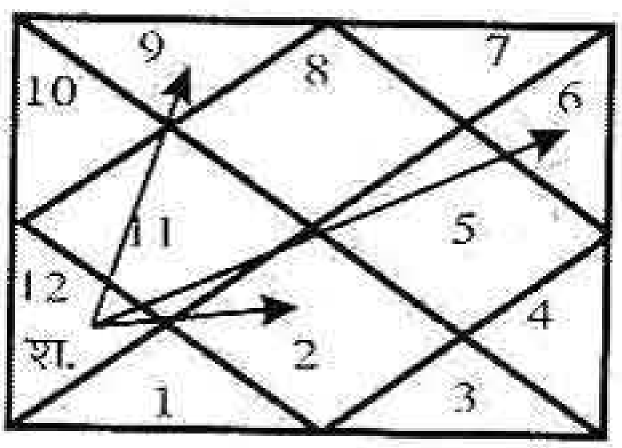
1. **शनि+सूर्य**–यहां दोनों ग्रह कुंभ राशि में होंगे। सूर्य यहां शत्रुक्षेत्री तो शनि मूलत्रिकोण राशि में होगा। शनि के कारण यहां '**शशयोग**' बनेगा। ऐसा व्यक्ति निश्चय ही राजा के समान पराक्रमी व यशस्वी होगा। पिता की मृत्यु के बाद राजनीति में जातक का वर्चस्व बढ़ेगा। सुखेश व राज्येश की युति यहां जातक के व्यक्तिगत जीवन के लिए शुभ परन्तु उसकी माता के नितान्त अशुभव है।
2. **शनि+चंद्र**–शनि के साथ चंद्र जातक का राजयोग देता है। जातक के पास एक से अधिक वाहन होंगे। जातक को माता का सुख-सम्पत्ति मिलेगी।
3. **शनि+मंगल**–शनि के साथ मंगल जातक को एक से अधिक मकान देगा। जातक के पास स्थाई सम्पत्ति जायदाद होगी।
4. **शनि+बुध**–शनि के साथ बुध व्यापार में लाभ देगा। जातक व्यापार प्रिय होगा।
5. **शनि+गुरु**–शनि के साथ बृहस्पति माता की सम्पत्ति देगा। पिता का सुख देगा एवं मित्रों से लाभ देगा।

6. **शनि+शुक्र**–शनि के साथ शुक्र जातक को ससुराल से धन-वैभवशाली सामग्री दिलायेगा।

7. **शनि+राहु**–शनि के साथ राहु '**मान्दी योग**' के कारण माता का सुख तोड़ेगा। सांसारिक सुख में कमी लायेगा।

8. **शनि+केतु**–शनि के साथ केतु माता की लम्बी बीमारी देगा।

वृश्चिकलग्न में शनि की स्थिति पंचम स्थान में



वृश्चिकलग्न में शनि तृतीयेश एवं चतुर्थेश होने से पापी है। शनि लग्नेश मंगल का शत्रु भी है। फलत: यहां अशुभ फल ही देगा। यहां पंचम स्थान में शनि मीन (सम) राशि में है। इस भाव में शनि होने से जातक विदेशी भाषा पढ़ेगा। उस उच्च शैक्षणिक उपाधि प्राप्त होगी। जातक को विद्या, बुद्धि, संतान, जमीन-जायदाद के सुखों की प्राप्ति होगी। ऐसे जातक की आमदनी के जरिए दो-तीन प्रकार के होंगे। "Source of income will be two and three sided."

दृष्टि–पंचमस्थ शनि की दृष्टि सप्तम भाव (वृष राशि), एकादश भाव (कन्या राशि) एवं धनभाव (धनु राशि) पर होगी। जातक की पत्नी पराक्रमी होगा। जातक को व्यापार में लाभ होगा। जातक अनेक विधि से धन कमायेगा।

निशानी–'लोमेश संहिता' अध्याय 3/श्लोक 2 के अनुसार सुखेश यदि पांचवे हो तो जातक ईश्वर में विश्वास रखने वाला एवं मामात-पिता की सम्पत्ति का तिरस्कार कर खुद के पुरुषार्थ से धन कमाता है। परन्तु जातक की पत्नी क्रूर व क्रोधी स्वभाव की होगी।

दशा–शनि की दशा-अंतर्दशा शुभफल देगी। जातक की बहुविद्या प्रतिभा चमकेगी। शनि की दशा में धन की प्राप्ति होगी। पराक्रम बढ़ेगा। भौतिक सुखों की प्राप्ति होगी।

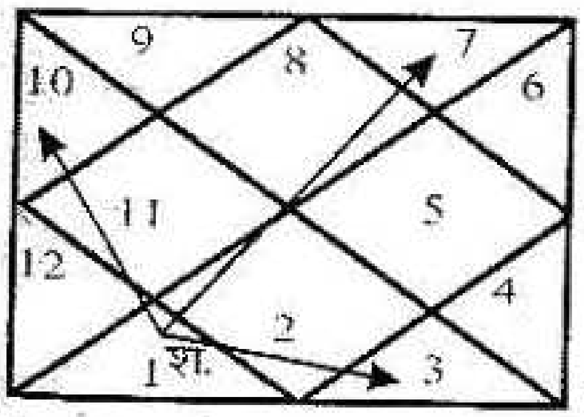
शनि का अन्य ग्रहों से संबंध–

1. **शनि+सूर्य**–यहां दोनों ग्रह मीन राशि में होंगे। सूर्य यहां मित्र क्षेत्री तो शनि सम राशि में होगा। दशमेश सूर्य व सुखेश शनि पंचम भाव में होने से जातक विद्यावान होगा। शैक्षणिक उपाधि के साथ उसे अनुभवों का बड़ा गहन व

गम्भीर ज्ञान होगा परन्तु विद्या अधूरी रहेगी। संतान सुख में भी कन्या संतति को लेकर जातक को विशेष चिंता रहेगी।

2. **शनि+चंद्र**–शनि के साथ चंद्र जातक को पुत्र व कन्या दोनों संतति देगा। जातक विदेशी भाषा पढ़ेगा एवं विदेश जाकर उन्नति करेगा।
3. **शनि+मंगल**–शनि के साथ मंगल तीन पुत्रों का सुख देगा। जातक इंजीनियरिंग पढ़ेगा। टैक्नीकल-मैकेनिकल व्यक्ति होगा।
4. **शनि+बुध**–शनि के साथ बुध नीच का, जातक को निम्नगामी सोच, नकारात्मक चिंतन देगा।
5. **शनि+गुरु**–शनि के साथ बृहस्पति जातक को उत्तम विद्या एवं बहुमुखी प्रतिभा देगा। जिससे जातक धनी होगा।
6. **शनि+शुक्र**–शनि के साथ शुक्र धनवान ससुराल एवं पढ़ी-लिखी पत्नी देगा। जातक की उन्नति विवाह के बाद होगी।
7. **शनि+राहु**–शनि के साथ राहु '**मान्दी योग**' के कारण संतान में बाधा एवं प्रारंभिक विद्या में रुकावट पैदा करेगा।
8. **शनि+केतु**–शनि के साथ केतु जातक के संतति की शल्य चिकित्सा करायेगा।

वृश्चिकलग्न में शनि की स्थिति षष्टम स्थान में



वृश्चिकलग्न में शनि तृतीयेश एवं चतुर्थेश होने से पापी है। शनि लग्नेश मंगल का शत्रु भी है। फलतः यहां अशुभ फल ही देगा। यहां छठे स्थान में शनि नीच का होगा। मेष राशि के 20 अंशों में शनि परमनीच का होता है। यहां शनि के कारण '**पराक्रमभंग योग**' एवं '**सुखहीन योग**' बनाता है। ऐसे जातक को माता-पिता, सहोदर भाई-बहनों की सुख अल्प मात्रा में ही मिलता है। जातक ऋण, रोग व शत्रु में परेशान रहेगा।

दृष्टि–षष्टम भावगत शनि की दृष्टि अष्टम भाव (मिथुन राशि), द्वादश भाव (तुला राशि) एवं पराक्रम भाव अपने ही घर मकर राशि पर होगी। जातक दीर्घजीवी होगा। गुप्त शत्रु बहुत होंगे। जातक पराक्रमी होगा।

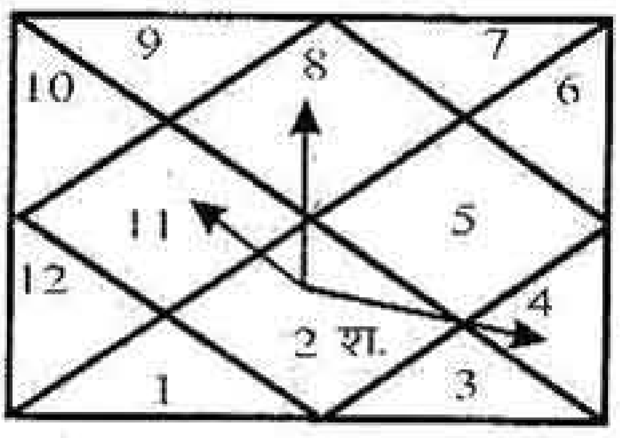
निशानी–'लोमेश संहिता' अध्याय 4/श्लोक 3 के अनुसार ऐसे जातक के अनेक माताएं होती है। ऐसा जातक मंत्र-तंत्र जादू टोना, चोर कार्य में प्रवीण होता है। परन्तु तृतीयेश छठे होने से जातक का भाई एवं माता जातक से शत्रुता रखता है।

दशा–शनि की दशा-अंतर्दशा अशुभ फल देगी।

शनि का अन्य ग्रहों से संबंध–

1. **शनि+सूर्य**–यहां दोनों ग्रह मेष राशि में होंगे। सूर्य यहां मित्रक्षेत्री होकर उच्च का होगा तो शनि शत्रुक्षेत्री होगा। राज्येश सूर्य व सुखेश शनि की इस युति से '**राजभंग योग**', '**पराक्रमभंग योग**', '**सुखभंग योग**' के साथ-साथ '**नीचभंग राजयोग**' की स्थिति बनेगी। फलत जातक राजा के तुल्य ऐश्वर्यशाली व धनी होगा, परन्तु समाज में उसकी कीर्ति नहीं होगी। पीठ पीछे निन्दा बहुत होगी।
2. **शनि+चंद्र**–शनि के साथ चंद्र '**भाग्यभंग योग**' बनायेगा। जातक को भाग्योदय हेतु काफी संघर्ष करना पड़ेगा।
3. **शनि+मंगल**–शनि के साथ मंगल '**नीचभंग राजयोग**' बनायेगा। जातक राजा के समान पराक्रमी होगा। जातक गांव का मुखिया होगा। ऐसा जातक बलपूर्वक वस्तुओं व पद को प्राप्त करने में रुचि रखता है।
4. **शनि+बुध**–शनि के साथ बुध '**विपरीत राजयोग**' बनायेगा। जातक धनवान एवं अभिमानी होगा। ऐश्वर्यशाली होगा।
5. **शनि+गुरु**–शनि के साथ बृहस्पति '**धनहीन योग**' एवं '**संतानहीन योग**' बनाता है। जातक की आर्थिक विषमता का सामना करना पड़ेगा।
6. **शनि+शुक्र**–शनि के साथ शुक्र '**विलम्ब विवाह योग**' करायेगा। जातक के दाम्पत्य सुख में विघ्न आयेंगे।
7. **शनि+राहु**–शनि के साथ राहु '**मान्दी योग**' बनायेगा। जातक को गुप्त रोग बीमारी होगा। मित्र '**पराक्रमभंग योग**' के कारण धोखा देगा।
8. **शनि+केतु**–शनि के साथ केतु मित्रों से, समाज से फायदे की वनस्पित नुकसान दिलायेगा।

वृश्चिकलग्न में शनि की स्थिति सप्तम स्थान में



वृश्चिकलग्न में शनि तृतीयेश एवं चतुर्थेश होने से पापी है। शनि लग्नेश मंगल का शत्रु भी है। फलतः यहां अशुभ फल ही देगा। सप्तम स्थान में शनि वृष (मित्र) राशि में है। ऐसे जातक को स्त्री का सुख पूर्ण होता है। व्यापार-व्यवसाय, भागीदारी, सांझे के कार्य में सफलता मिलेगी। जातक को धन-यश, पद-प्रतिष्ठा की प्राप्ति होगी।

दृष्टि–सप्तमस्थ शनि की दृष्टि भाग्यभवन (कर्क राशि), लग्न स्थान (वृश्चिक राशि) एवं सुखस्थान (कुंभराशि) पर होगी। जातक भाग्यशाली होगा। परिरम का लाभ मिलेगा। भौतिक सुख एवं उत्तम वाहन की प्राप्ति होगी।

निशानी–'लोमेश संहिता' अध्याय 3/श्लोक 5 के अनुसार तृतीयेश की यदि सातवें स्थान में हो तो ऐसे जातक की मृत्यु राजदण्ड से होती है परन्तु सुखेश सप्तम में होने से व्यक्ति पिता से हाथ आये हुए धन को भी छोड़ देता है।

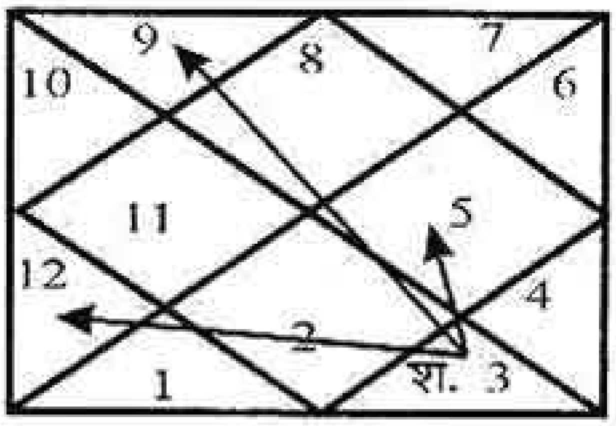
दशा–ऐसे जातक की शनि की दशा शुभफल देगी। पराक्रम बढ़ेगा। भौतिक सुखों की प्राप्ति होगी।

शनि का अन्य ग्रहों से संबंध–

1. **शनि+सूर्य**–यहां दोनों ग्रह वृष राशि में होंगे। सूर्य यहां शत्रुक्षेत्री तो शनि मित्रक्षेत्री होगा। दशमेश सूर्य व पराक्रमेश, सुखेश शनि सप्तम भाव में होने के कारण जात गृहस्थ व संतान सुख उत्तम। जातक स्वयं पराक्रमी तथा उसका ससुराल भी पराक्रमी, प्रभावशाली होगा, परन्तु पति-पत्नी में कलह चरम सीमा पर होता रहेगा। पिता की मृत्यु के बाद घर में सुख-शांति का साम्राज्य होगा।
2. **शनि+चंद्र**–शनि के साथ चंद्र उच्च का **'यामिनीनाथ योग'** बनायेगा। जातक की पत्नी सुन्दर व सौम्य स्वभाव की होगी।
3. **शनि+मंगल**–शनि के साथ मंगल जातक को हाथ में लिये गये काम में सफलता देगा।
4. **शनि+बुध**–शनि के साथ बुध होने से जातक का सुसराल व्यापार प्रिय होगा। पराक्रमी होगा।
5. **शनि+गुरु**–शनि के साथ बृहस्पति ससुराल से धन दिलायेगा। जातक की पत्नी कमाऊ महिला होगा।
6. **शनि+शुक्र**–शनि के साथ शुक्र **'मालव्य योग'** बनायेगा। जातक राजा के समान पराक्रमी व ऐश्वर्यशाली जीवन जीयेगा।
7. **शनि+राहु**–शनि के साथ राहु **'मान्दी योग'** बनायेगा। जातक की पत्नी की अकाल मृत्यु संभव है।
8. **शनि+केतु**–शनि के साथ केतु दाम्पत्य समरसता में बाधक है।

वृश्चिकलग्न में शनि की स्थिति अष्टम स्थान में

वृश्चिकलग्न में शनि तृतीयेश एवं चतुर्थेश होने से पापी है। शनि लग्नेश मंगल का शत्रु भी है। फलतः यहां अशुभ फल ही देगा। यहां अष्टम स्थान में शनि मिथुन



(मित्र) राशि में है। शनि की इस स्थिति में '**पराक्रमभंग योग**' एवं '**सुखहीन योग**' की सृष्टि हुई है। ऐसा जातक दीर्घजीवी होगा। माता-पिता, भाई-बहन, जमीन-जायदाद के सुखों की होगी। जातक को संतान संबंधी चिंता रहेगी। पढ़ाई अधूरी छूट जायेगी।

दृष्टि—अष्टमभावगत शनि की दृष्टि दशम भाव (सिंह राशि), द्वितीय भाव (धनु राशि) एवं पंचम भाव (मीन राशि) पर होगी। राजनीति क्षेत्र में बाधा, धन की हानि एवं विद्या में रुकावट आयेगी।

निशानी—'लोमेश संहिता' अध्याय 3/श्लोक 5 के अनुसार तृतीयेश यदि अष्टम स्थान में हो तो ऐसे जातक की मृत्यु राजदण्ड में होती है। परन्तु सुखेश आठवें होने से व्यक्ति नपुंसक होता है।

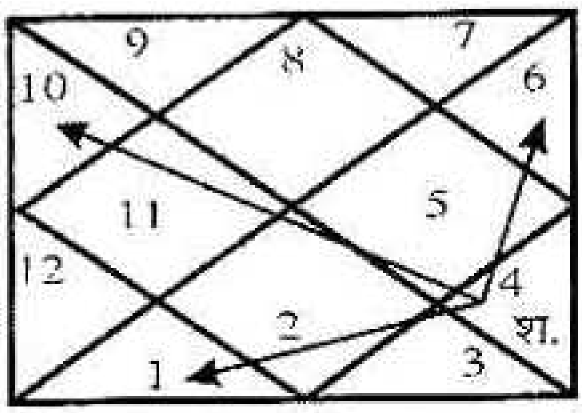
दशा—शनि की दशा-अंतर्दशा अशुभफल देगी।

शनि का अन्य ग्रहों से संबंध—

1. **शनि+सूर्य**—यहां दोनों ग्रह मिथुन राशि में होंगे। सूर्य यहां सम राशि में तो शनि मित्र राशि में होगा। राज्येश सूर्य व सुखेश शनि की इस युति से क्रमशः '**राजभंग योग**', '**पराक्रमभंग योग**' एवं '**सुखभंग योग**' की सृष्टि होगी। फलतः ऐसे जातक की यश-कीर्ति भंग होगी। मित्र दगा देंगे। सरकारी नौकरी में रुकावट के साथ, जातक को भौतिक सुखों की प्राप्ति हेतु बहुत संघर्ष करना पड़ेगा।
2. **शनि+चंद्र**—शनि के साथ चंद्र '**भाग्यभंग योग**' बनायेगा। जातक को भाग्योदय हेतु कठिन परिश्रम करना पड़ेगा।
3. **शनि+मंगल**—शनि के साथ मंगल '**लग्नभंग योग**' बनायेगा। जातक को परिश्रम का लाभ नहीं मिलेगा।
4. **शनि+बुध**—शनि के साथ बुध '**विपरीत राजयोग**' बनायेगा। जातक धनी-मानी एवं ऐश्वर्यशाली जीवन जायेगा।
5. **शनि+गुरु**—शनि के साथ बृहस्पति '**धनहीन योग**' एवं '**संतानहीन योग**' बनायेगा। जातक आर्थिक संकट में जीयेगा। विद्या अधूरी छूटेगी व संतान की चिंता रहेगी।
6. **शनि+शुक्र**—शनि के साथ शुक्र '**विलम्ब विवाह योग**' करायेगा। जातक के दाम्पत्य सुख की समरसता भंग होगी।
7. **शनि+राहु**—शनि के साथ राहु '**मान्दी योग**' बनायेगा। जातक की आयु कम होगी। उसका पराक्रम भंग होगी।

8. **शनि+केतु**–शनि के साथ केतु गृहस्थ सुख में बाधक है।

वृश्चिकलग्न में शनि की स्थिति नवम स्थान में



वृश्चिकलग्न में शनि तृतीयेश एवं चतुर्थेश होने से पापी है। शनि लग्नेश मंगल का शत्रु भी है। फलत: यहां अशुभ फल ही देगा। यहां नवम स्थान में शनि कर्क (शत्रु) राशि में है। ऐसे जातक की भाई-बहन, धन यश, पराक्रम पद-प्रतिष्ठा, पिता के सुख-ऐश्वर्य में वृद्धि होगी। जातक को ठेकेदारी को कार्यों में लाभ होगा। धंधे बहुत प्रकार के होगे पर पीठ पीछे निन्दा होगी।

दृष्टि–नवमभावगत शनि की दृष्टि लाभभाव (कन्या राशि), पराक्रम भाव (मकर राशि) एवं षष्टम भाव (मेष राशि) पर होगी। जातक को व्यापार से लाभ होगा। जातक पराक्रमी होगा एवं अपने शत्रुओं को नष्ट करने में सक्षम होगा।

निशानी–'लोमेश संहिता' अध्याय 4/श्लोक 2 के अनुसार सुखेश यदि नवमें हो तो जातक ईश्वर में विश्वास रखने वाला एवं माता-पिता की सम्पत्ति का तिरस्कार कर खुद के पुरुषार्थ में धन कमाता है। ऐसे जातक का भाग्योदय स्त्री होता है।

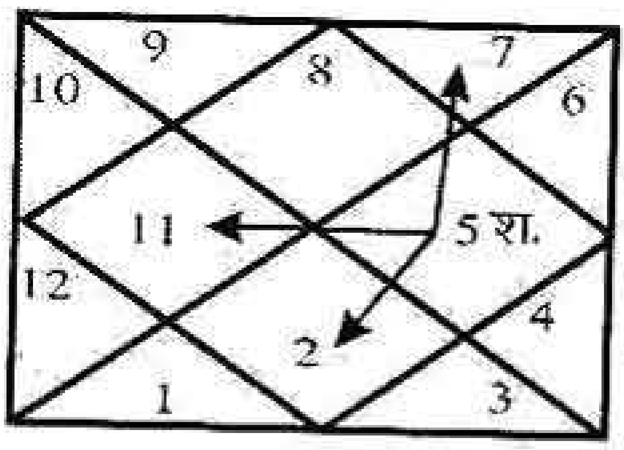
दशा–शनि की दशा-अंतर्दशा शुभ फल देगी। पर 33% अशुभफल देगी। संघर्ष की स्थिति रहेगी।

शनि का अन्य ग्रहों से संबंध–

1. **शनि+सूर्य**–यहां दोनों ग्रह कर्क राशि में होंगे। सूर्य यहां मित्र राशि में तो शनि शत्रु राशि में होगा। दशमेश सूर्य एवं पराक्रमेश, सुखेश शनि की युति भाग्य स्थान में होने से जातक को सरकारी नौकरी, राज्य कृपा या राजकीय सम्मान वगैरा मिलेगा। जातक व्यवसाय की दृष्टि से उन्नत होगा। परन्तु भाईयों से नहीं बनेगी। सुख प्राप्ति के संसाधनों हेतु जातक निरन्तर परेशान रहेगी।
2. **शनि+चंद्र**–शनि के साथ चंद्र जातक को भाई-बहन इष्ट-मित्रों का पूरा सुख देगा। जातक का भाग्योदय शीघ्र होगा।
3. **शनि+मंगल**–शनि के साथ मंगल नीच का जातक को परिश्रम का लाभ देगा। जातक सफल व्यक्ति होगा।
4. **शनि+बुध**–शनि के साथ बुध व्यापार में लाभ देगा। जातक बुद्धिमान एवं व्यवहारिक ज्ञान से सम्पन्न व्यक्ति होगा।

5. **शनि+गुरु**–शनि के साथ उच्च का बृहस्पति '**मातृमूलधन योग**' एवं '**भ्रातृमूल धनयोग**' बनायेगा। ऐसे जातक को माता द्वारा रक्षित धन की प्राप्ति होगी। भाईयों व मित्रों से भी धन लाभ होगा।
6. **शनि+शुक्र**–शनि के साथ शुक्र जातक का भाग्योदय विवाह के बाद करायेगा।
7. **शनि+राहु**–शनि के साथ राहु '**मान्दी योग**' बनायेगा। जातक का भाग्योदय बाधित होगा। उन्नति मार्ग की ओर दिक्कतें आयेगी।
8. **शनि+केतु**–शनि के साथ केतु भाग्योदय में भारी संघर्ष करायेगा।

वृश्चिकलग्न में शनि की स्थिति दशम स्थान में



वृश्चिकलग्न में शनि तृतीयेश एवं चतुर्थेश होने से पापी है। शनि लग्नेश मंगल का शत्रु भी है। फलतः यहां अशुभ फल ही देगा। दशम स्थान में शनि सिंह (शत्रु) राशि में है। ऐसा जातक संघर्ष करते हुए 'करोडपति' पद पर पहुंच जाता है। जातक को पिता का सुख कमजोर, पिता से विचारधारा कम मिलेगी। भाई-बहन सुख मध्यम, किन्तु इष्ट-मित्रों का पूर्ण सुख मिलेगा। जातक को उच्च पद व प्रतिष्ठा की प्राप्ति होगी। राजनीति क्षेत्र में जातक को ज्यादा सफलता मिलेगी।

दृष्टि–दशमस्थ शनि की दृष्टि द्वादश भाव (तुला राशि) चतुर्थ भाव (कुंभ राशि) एवं सप्तम भाव (वृष राशि) पर होगी।

निशानी–'लोमेश संहिता' अध्याय 4/श्लोक 6 के अनुसार सुखेश यदि दशम में हो तो व्यक्ति सरकारी नौकरी में ऊंचे पद होता है। परन्तु तृतीयेश दसवें होने से जातक की पत्नी क्रूर व क्रोधी स्वभाव की होगी।

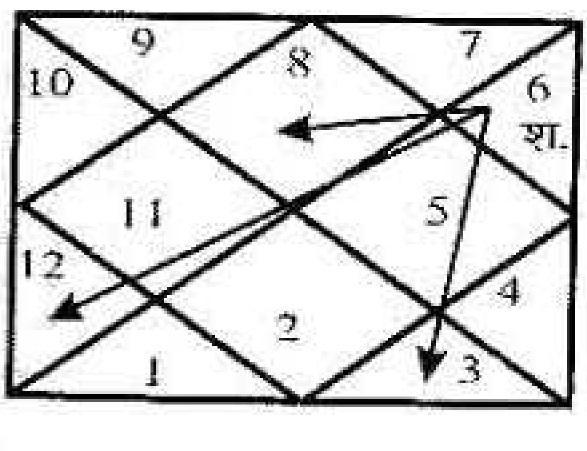
दशा–शनि की दशा-अंतर्दशा शुभफल देगी। जातक को राजकीय सम्मान-प्रतिष्ठा मिलेगी। राजनीति से लाभ एवं जनसम्पर्क से लाभ मिलेगा।

शनि का अन्य ग्रहों से संबंध–

1. **शनि+सूर्य**–यहां दोनों ग्रह सिंह राशि में होंगे। सूर्य यहां स्वगृही तो शनि परमशत्रु राशि में होगा। सूर्य के कारण यहां **रविकृत राजयोग** बनेगा। दशमेश व सुखेश, पराक्रमेश की युति दशम भाव में होने से जातक की रोजी-रोजगार के उन्नत अवसर प्राप्त होंगे। परन्तु माता का सुख नहीं होगा। मकान या वाहन पुराना होगा, उस पर मरम्मत को लेकर बहुत खर्चा करना पड़ेगा।

2. **शनि+चंद्र**–शनि के साथ चंद्र राजयोग देगा। जातक धनी होगा। भाग्यशाली होगा।
3. **शनि+मंगल**–शनि के साथ मंगल 'दिक्बली' होगा। जातक की स्थाई सम्पत्ति, भवन, जायदाद की प्राप्ति होगी।
4. **शनि+बुध**–शनि के साथ बुध व्यापार योग बढ़ायेगा। जातक बुद्धिशाली होगा।
5. **शनि+गुरु**–शनि के साथ बृहस्पति धनयोग में वृद्धि करेगा। जातक 'करोड़पति' होगा।
6. **शनि+शुक्र**–शनि के साथ शुक्र विवाह के बाद भाग्योदय करायेगा। जातक का ससुराल प्रभावशाली होगा।
7. **शनि+राहु**–शनि के साथ राहु **'मान्दी योग'** बनायेगा। जातक को सरकारी क्षेत्र से धोखा होगा। सरकारी कर्मचारी तंगल करेंगे।
8. **शनि+केतु**–शनि के साथ केतु व्यापार-व्यवसाय की उन्नति में बाधक है।

वृश्चिकलग्न में शनि की स्थिति एकादश स्थान में



वृश्चिकलग्न में शनि तृतीयेश एवं चतुर्थेश होने से पापी है। शनि लग्नेश मंगल का शत्रु भी है। फलतः यहां अशुभ फल ही देगा। यहां एकादश स्थान में शनि कन्या (मित्र) राशि में है। जातक उद्योगपति होगा। उसे व्यापार-व्यवसाय में लाभ होगा। जातक उच्च शैक्षणिक उपाधि (Higher Educational Degree) प्राप्त करेगा। जातक विदेशी भाषा पढ़ेगा। विदेशी रहन-सहन में विश्वास रखता है। राजनीति में सफलता मिलेगी। जातक की प्रतिभा बहुमुखी होगी तथा आमदनी के जरिए भी दो से अधिक होंगे।

दृष्टि–एकादश भावगत शनि की दृष्टि लग्नस्थान (वृश्चिक राशि), पंचम भाव (मीन राशि) एवं अष्टम भाव (मिथुन राशि) पर होगी। जातक को परिश्रम का फल मिलेगा। विद्या व पुत्र की प्राप्ति होगी। जातक दीर्घजीवी होगा।

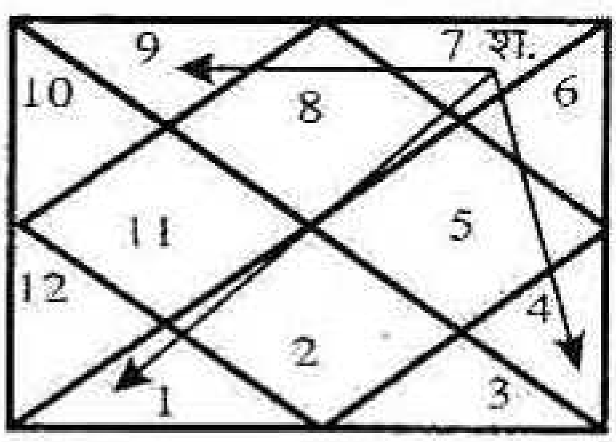
निशानी–'लोमेश संहिता' अध्याय 3/श्लोक 6 के अनुसार यदि तृतीयेश एकादश में हो तो जातक अपने उद्यम व पराक्रम से खूब धन कमाता है। तथा सदैव दूसरों की सहायता हेतु तत्पर रहता है। परन्तु सुखेश एकादश में होने से जातक सदैव बीमार रहेगा।

दशा–शनि की दशा-अंतर्दशा शुभफल देगी।

शनि का अन्य ग्रहों से संबंध–

1. **शनि+सूर्य**–यहां दोनों ग्रह कन्या राशि में होंगे। सूर्य यहां समराशि में तो शनि मित्र राशि में होगा। दशमेश सूर्य एवं पराक्रमेश, सुखेश शनि की युति यहां एकादश स्थान में होने से जातक विद्यावान होगा तथा तंत्र-मंत्र एवं गुप्त विद्याओं का जानकार होगा, परन्तु जातक को सरकारी नौकरी में दिक्कतें आयेगी। जातक को निजी व्यापार-व्यवसाय में भी परेशानी उठानी पड़ेगी। पिता गुजरने के बाद ही जातक का रोजगार अर्थात् आमदनी सुदृढ़ होगी।
2. **शनि+चंद्र**–शनि के साथ चंद्र जातक को उद्योगपति बनायेगा।
3. **शनि+मंगल**–शनि के साथ मंगल जातक को भाग्य में उन्नति देगा। बड़े भाई का सुख होगा।
4. **शनि+बुध**–शनि के साथ बुध जातक को बड़ा व्यापारी बनायेगा।
5. **शनि+गुरु**–शनि के साथ बृहस्पति जातक को मित्रो से परिजनों से लाभ दिलायेगा। सहयोग दिलायेगा।
6. **शनि+शुक्र**–शनि के साथ शुक्र जातक को विवाह के बाद उन्नति देगा।
7. **शनि+राहु**–शनि के साथ राहु '**मान्दी योग**' बनायेगा। राहु यहां एक बार चलता उद्योग-व्यापार बन्द करायेगा।
8. **शनि+केतु**–शनि के साथ केतु व्यापार में व्यवधान उत्पन्न करता रहेगा।

वृश्चिकलग्न में शनि की स्थिति द्वादश स्थान में



वृश्चिकलग्न में शनि तृतीयेश एवं चतुर्थेश होने से पापी है। शनि लग्नेश मंगल का शत्रु भी है। फलत: यहां अशुभ फल ही देगा। यहां द्वादश स्थान में शनि उच्च का है। तुला राशि के 30 अंशों तक शनि परमोच्च का होता है। ऐसे जातक आवक से अधिक खर्च करेंगे जिसे '**सुखहीन योग**' बनेगा। जातक भौतिक सुखों के पीछे दौड़ेगा, जिससे '**पराक्रमभंग योग**' होगा। जातक को परिजनों व मित्रों से लाभ नहीं होने से पीठ पीछे जातक की निन्दा होगी।

दृष्टि–द्वादश भावगत शनि की दृष्टि द्वितीय स्थान (धनु राशि), षष्टम स्थान (मेष राशि) एवं भाग्यस्थान (कर्क राशि) पर होगी।

निशानी–'लोमेश संहिता' अध्याय 3/श्लोक 4 के अनुसार यदि तृतीयेश द्वादश में हो तो जातक का भाग्योदय स्त्री द्वारा होता है। परनतु सुखेश बारहवें स्थान पर होने से व्यक्ति नपुंसक होता है।

दशा–शनि की दशा-अंतर्दशा अशुभफल देगी।

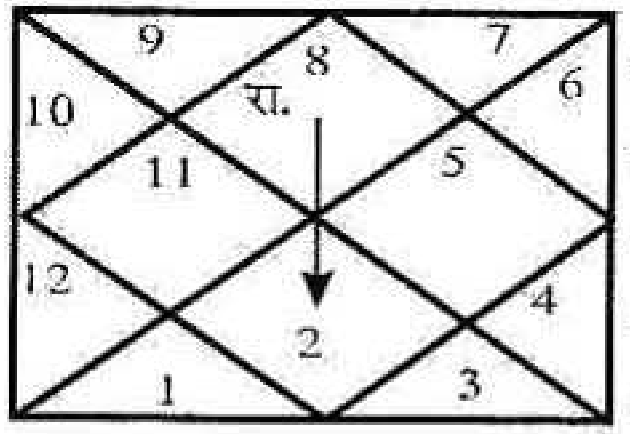
शनि का अन्य ग्रहों से संबंध–

1. **शनि+सूर्य**–यहां दोनों ग्रह तुला राशि में होंगे। सूर्य यहां नीच राशि का तो शनि उच्च राशि का होकर '**नीचभंग राजयोग**' बनायेगा। साथ ही '**राजभंग योग**', '**पराक्रम भंगयोग**' एवं '**सुखभंग योग**' की सृष्टि हुई। फलत: जातक राजा तुल्य पराक्रमी व ऐश्वर्य सम्पन्न तो होगा। परन्तु समाज में कीर्ति नहीं होगी। गुप्त शत्रु बहुत होंगे, जिन्हें परास्त करने में जातक सफल होगा। परन्तु परिश्रम बहुत करना पड़ेगा।
2. **शनि+चंद्र**–शनि के साथ चंद्र '**भाग्यभंग योग**' बनायेगा। भाग्योदय हेतु काफी दिक्कतें आयेगी।
3. **शनि+मंगल**–शनि के साथ मंगल '**लग्नभंग योग**' बनायेगा। जातक को परिश्रम का लाभ नहीं मिलेगा।
4. **शनि+बुध**–शनि के साथ बुध '**विपरीत राजयोग**' बनायेगा। जातक धनी, मानी एवं ऐश्वर्यशाली जीवन जीयेगा।
5. **शनि+गुरु**–शनि के साथ बृहस्पति '**धनहीन योग**' व '**संतानहीन योग**' बनायेगा। जातक की पढ़ाई अधूरी छूटेगी। आर्थिक परेशानी भी बनी रहेगी।
6. **शनि+शुक्र**–शनि के साथ शुक्र '**किम्बहुनानामक राजयोग**' बनायेगा। जातक राजा के समान पराक्रमी होगा एवं ऐश-मौज में धन उड़ायेगा।
7. **शनि+राहु**–शनि के साथ राहु '**मान्दी योग**' बनायेगा। जातक के जीवन में अचानक दुर्घटना हो सकती है। जिससे पूरे परिवार का सुख-चैन भंग हो जायेगा।
8. **शनि+केतु**–शनि के साथ केतु धार्मिक यात्राएं करायेगा। परोपकार में रुपया खर्च करेगा।

❑❑❑

वृश्चिकलग्न में राहु की स्थिति

वृश्चिकलग्न में राहु की स्थिति प्रथम स्थान में



राहु वृश्चिक राशि में नीच का माना गया है। राहु यहां उद्विग्न रहेगा। वृश्चिकलग्न में राहु जहां बैठा होगा वहां के शुभ फल को तोड़ेगा। राहु यहां प्रथम स्थान में वृश्चिक राशि का नीच का होगा। ऐसा व्यक्ति ओज आकर्षण और प्रभाव से रहित होता है। दूरदर्शिता व त्याग की भावना का नितान्त अभाव होता है। ऐसा व्यक्ति क्रोधी-स्वार्थी और आत्मकेन्द्रित होता है। लोगों की परवाह नहीं करते और शिक्षा पर विशेष ध्यान नहीं देते।

दृष्टि–राहु की दृष्टि सप्तम भाव (वृष राशि) पर होने से जातक के दाम्पत्य जीवन में अंसतोष रहेगा। असाध्य गुप्त बीमारियां जातक के शरीर पर आक्रमण करेंगी।

निशानी–ऐसे जातक को वात रोग से पीड़ा होती है।

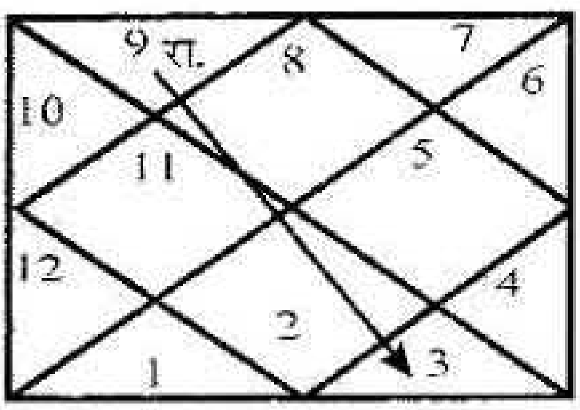
दशा–राहु की दशा अशुभ फल देगी।

राहु का अन्य ग्रहों से संबंध–

1. **राहु+सूर्य**–राहु के साथ सूर्य '**ग्रहण योग**' बनायेगा। जातक को राजदण्ड मिल सकता है। सरकारी अधिकारी तंग करेंगे।
2. **राहु+चंद्र**–राहु के साथ चंद्र '**ग्रहण योग**' बनायेगा। जातक मानसिक तनाव में रहेगा। चंद्रमा यहां नीच का होने से विषैला होगा।
3. **राहु+मंगल**–राहु के साथ मंगल '**अंगारक योग**' बनायेगा। ऐसा जातक निसंदेह लड़ाकू, योद्धा होगा। जो कभी भी अपनी हार नहीं मानेगा। '**रुचक योग**' के कारण जातक राजा के समान पराक्रमी होगा।

4. **राहु+बुध**–राहु के साथ बुध '**जड़त्व योग**' बनायेगा। जातक के निर्णय गलत होंगे।
5. **राहु+गुरु**–यहां दोनों ग्रह वृश्चिक राशि में है। बृहस्पति यहां नीच राशि में हैं तो राहु नीच राशि में होकर '**चाण्डाल योग**' बना रहा है। बृहस्पति के कारण '**कुलदीपक योग**' एवं '**केसरी योग**' बना रहा है। ऐसा जातक जिद्दी, हठी व लड़ाकू होगा। फिर भी एक सफल राजनीतिज्ञ व्यक्ति होगा तथा अपने कुटुम्ब परिवार का नाम दीपक के समान रोशन करेगा।
6. **राहु+शुक्र**–राहु के साथ शुक्र '**लम्पट योग**' बनायेगा। जातक व्यभिचारी होगा। कामी होगा।
7. **राहु+राहु**–राहु के साथ शनि '**मान्दी योग**' बनायेगा। जातक षड्यंत्रकारी किन्तु पराक्रमी होगा।

वृश्चिकलग्न में राहु की स्थिति द्वितीय स्थान में



राहु वृश्चिक राशि में नीच का माना गया है। राहु यहां उद्विग्न रहेगा। वृश्चिकलग्न में राहु जहां बैठा होगा वहां के शुभ फल को तोड़ेगा। यहां द्वितीय स्थान में राहु धनु राशि का होगा। ऐसे जातक के प्रारंभिक जीवन का महत्वपूर्ण भाग कष्ट और दुःखानुभूति में बीतता है। विद्या अधूरी रह जाती है और रोजगार की प्राप्ति हेतु कठोर परिश्रम करना पड़ता है। जातक की वाणी कटु होती है।

दृष्टि–राहु की दृष्टि अष्टम भाव (मिथुन राशि) पर होने से जातक की सामाजिक प्रतिष्ठा नहीं होगी। उसे राजनैतिक विफलताओं का सामना करना पड़ता है।

निशानी–ऐसे जातक को राजा से भय एवं मुख में रोग होता है।

दशा–राहु की दशा–अंतर्दशा अनिष्ट फल देगी।

राहु का अन्य ग्रहों से संबंध–

1. **राहु+सूर्य**–राहु के साथ सूर्य '**ग्रहण योग**' बनायेगा। जातक का धन अव्यर्थ कार्यों में खर्च होगा।
2. **राहु+चंद्र**–राहु के साथ चंद्र '**ग्रहण योग**' बनायेगा। जातक धन को लेकर चिंताग्रस्त रहेगा।

3. **राहु+मंगल**–राहु के साथ मंगल '**अगांरक योग**' बनायेगा। जातक को भाईयों में नहीं बनेगी। शत्रु से भय रहेगा।

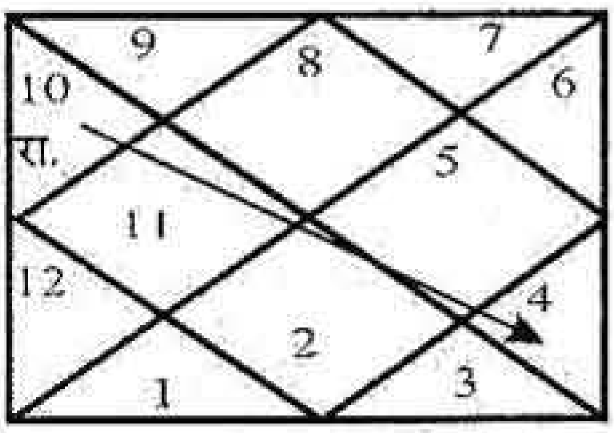
4. **राहु+बुध**–राहु के साथ बुध '**जड़त्व योग**' बनायेगा। जातक का रुपया दवाईयों में खर्च होगा।

5. **राहु+गुरु**–यहां दोनों ग्रह धनु राशि में है। बृहस्पति यहां स्वगृही तो राहु अपनी नीचराशि में होने से '**चाण्डाल योग**' बना। ऐसे व्यक्ति धनवान होगा, पुत्रवान होगा। परन्तु धन जितनी तेजी से आयेगा, उतनी तेजी से खर्च होता चला जायेगा। जातक को संतति संबंधी चिंता रहेगी।

6. **राहु+शुक्र**–राहु के साथ शुक्र '**लम्पट योग**' बनायेगा। जातक शौक-मौज में पैसा उठायेगा। स्त्रियों पर धन खर्च करेगा।

7. **राहु+राहु**–राहु के साथ शनि '**मान्दी योग**' बनायेगा। जातक भौतिक सुख-सुविधाआं की प्राप्ति हेतु धन खर्च करेगा।

वृश्चिकलग्न में राहु की स्थिति तृतीय स्थान में



राहु वृश्चिक राशि में नीच का माना गया है। राहु यहां उद्विग्न रहेगा। वृश्चिकलग्न में राहु जहां बैठा होगा वहां के शुभ फल को तोड़ेगा। यहां तृतीय स्थान में राहु मकर (सम) राशि का होगा। ऐसे जातक महान पुरुषार्थी, परिश्रमी कठिन कार्य में रुचि वाले होते है। तृतीयस्थ राहु जातक के बल, पराक्रम और शौर्य में अद्वितीय वृद्धि करते है। ऐसे जातक महान कार्य करते हैं। जिसमें उनका नाम इतिहास में अमर हो जाता है।

दृष्टि–तृतीयस्थ राहु की दृष्टि भाग्यस्थान (कर्क राशि) पर होगी। फलतः जातक तीव्र महत्वकांक्षी होता है तथा उसकी इच्छाएं शीघ्र पूर्ण होती है।

निशानी–ऐसे जातक के भाई नहीं होते अथवा किसी अपघात से भाई की मृत्यु होगी।

दशा–राहु की दशा-अंतर्दशा शुभ फल देगी।

राहु का अन्य ग्रहों से संबंध–

1. **राहु+सूर्य**–राहु के साथ सूर्य '**ग्रहण योग**' बनायेगा। जातक का पराक्रम भंग होगा। बदनामी होगी।

2. **राहु+चंद्र**–राहु के साथ चंद्र '**ग्रहण योग**' बनायेगा। जातक चिंताग्रस्त रहेगा। परिजनों में वैमनस्य रहेगा।

3. **राहु+मंगल**–राहु के साथ मंगल '**अगारक योग**' बनायेगा। जातक महान् पराक्रमी होगा।

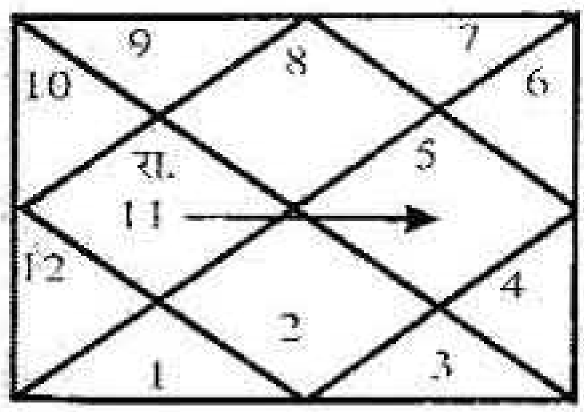
4. **राहु+बुध**–राहु के साथ बुध '**जड़त्व योग**' बनायेगा। जातक को गलत निर्णयों के कारण व्यापार में हानि होगी।

5. **राहु+गुरु**–यहां दोनों ग्रह मकर राशि में है। बृहस्पति यहां नीच का तो राहु सम राशि में होने से '**चाण्डाल योग**' बना। ऐसा जातक पराक्रमी होगा। परन्तु सगे भाई-बहन, रिश्तेदारों से कम पटेंगे। मित्र ठीक जरुरत के वक्त पर धोखा देंगे।

6. **राहु+शुक्र**–राहु के साथ शुक्र '**लम्पट योग**' बनायेगा। गलत सौबत में धन खर्च करायेगा।

7. **राहु+राहु**–राहु के साथ शनि '**मान्दी योग**' बनायेगा। राहु के साथ शनि स्वगृही होने से वाहन को लेकर रुपया खर्च होगा।

वृश्चिकलग्न में राहु की स्थिति चतुर्थ स्थान में



राहु वृश्चिक राशि में नीच का माना गया है। राहु यहां उद्विग्न रहेगा। वृश्चिकलग्न में राहु जहां बैठा होगा वहां के शुभ फल को तोड़ेगा। यहां चतुर्थ स्थान में राहु कुंभ (मूलत्रिकोण) राशि में होकर स्वगृही होगा। ऐसे जातक को माता-पिता के सुख में कमी रहती है। बचपन कष्ट अभावों में व्यतीत होगा। जातक के मित्र कम होते हैं। जातक के विवाह या सौतली माता का योग बनता है।

दृष्टि–चतुर्थस्थ राहु की दृष्टि (सिंह राशि) पर होगी। फलत: जातक को राजकीय कार्य में बाधा बनी रहेगी। सरकार से अपेक्षित सहयोग नहीं मिलेगा।

निशानी–जातक की माता को वातरोग होता है। किसी अपघात से माता की मृत्यु होती है।

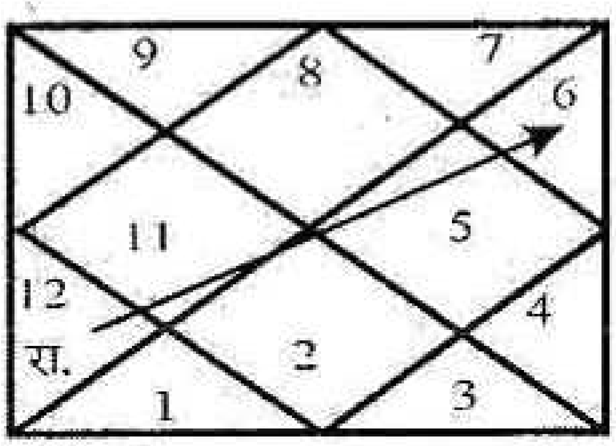
दशा–राहु की दशा मिश्रित फलकारी साबित होगी।

राहु का अन्य ग्रहों से संबंध–

1. **राहु+सूर्य**–राहु के साथ सूर्य '**ग्रहण योग**' बना रहा है। जातक को पिता का सुख नहीं मिलेगा। पिता की मृत्यु बाल्यवस्था में होगी।

2. **राहु+चंद्र**–राहु के साथ चंद्र '**ग्रहण योग**' बना रहा है। जातक को माता का सुख नहीं मिलेगा। जातक को माता की मृत्यु बाल्यावस्था में होगी।
3. **राहु+मंगल**–राहु के साथ मंगल '**अगारंक योग**' बना रहा है। ऐसे जातक को शत्रुओं से परेशानी होगी।
4. **राहु+बुध**–राहु के साथ बुध '**जड़त्व योग**' बना रहा है। जातक को हृदय रोग की बीमारी रहेगी।
5. **राहु+गुरु**–यहां दोनों ग्रह कुंभ राशि में है। बृहस्पति यहां समराशि में है तो राहु मूलत्रिकोण राशि में स्वगृही होने से '**चाण्डाल योग**' बना। बृहस्पति के कारण '**कुलदीपक योग**', '**केसरी योग**' बना। ऐसे जातक को माता-पिता का सुख कमजारे होगा। वाहन दुर्घटना का भय रहेगा।
6. **राहु+शुक्र**–राहु के साथ शुक्र '**लम्पट योग**' बना रहा है। जातक के वाहन-नौकर, रख-रखाव में रुपया खर्च होगा।
7. **राहु+राहु**–राहु के साथ शनि '**मान्दी योग**' बना रहा है। शनि के कारण '**शशयोग**' बना। जातक को व्यापार से पैसा मिलेगा।

वृश्चिकलग्न में राहु की स्थिति पंचम स्थान में



राहु वृश्चिक राशि में नीच का माना गया है। राहु यहां उद्विग्न रहेगा। वृश्चिकलग्न में राहु जहां बैठा होगा वहां के शुभ फल को तोड़ेगा। यहां पंचम स्थान में राहु मीन राशि में नीच का होगा। यहां राहु उच्च विद्या में बाधक है। परन्तु बौद्धिक चातुर्य, कूटनीति में वृद्धि होगी। जातक के संतान सुख में वृद्धि होगी। जातक प्रजावान होगा।

दृष्टि–पंचमस्थ राहु की दृष्टि एकादश स्थान (कन्या राशि) पर होगी। फलत: जातक को व्यापार-व्यवसाय में लाभ होगा।

निशानी–जातक पानी से डरने वाला होता है तथा विदेश जाने का इच्छुक होता है।

दशा–राहु की दशा-अंतर्दशा शुभ फल देगी।

राहु का अन्य ग्रहों से संबंध–

1. **राहु+सूर्य**–राहु के साथ सूर्य '**ग्रहण योग**' बनायेगा। जातक को विद्या में रुकावट आयेगी।

2. **राहु+चंद्र**–राहु के साथ चंद्र '**ग्रहण योग**' बनायेगा। जातक मानसिक चिंता में रहेगा। पुत्र संतति में बाधा आयेगी।

3. **राहु+मंगल**–राहु के साथ मंगल '**अगांरक योग**' बनायेगा। जातक की ज्येष्ठ संतति जीवित नहीं रहेगी।

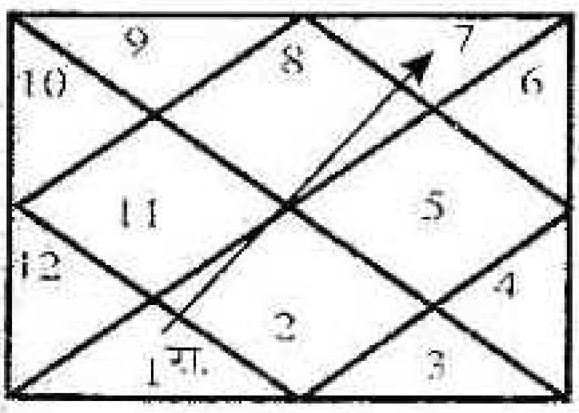
4. **राहु+बुध**–राहु के साथ बुध '**जड़त्व योग**' बनायेगा। जातक के शरीर में स्वास्थ्य-संबंधी गड़बड़ी रहेगी।

5. **शनि+गुरु**–यहां दोनों ग्रह मीन राशि में है। बृहस्पति यहां स्वगृही होगा तथा राहु अपनी नीच राशि में होने से '**चाण्डाल योग**' बना। जातक को पांच पुत्रों का योग बनता है परन्तु राहु पुत्र सुख तोड़ेगा। जातक धनवान होगा। विद्यावान होगा। परन्तु राहु विद्या का सही लाभ नहीं होने देगा।

6. **राहु+शुक्र**–राहु के साथ शुक्र '**लम्पट योग**' बनायेगा।
होगा। जिससे घर वाले परेशान रहेगा।

7. **राहु+राहु**–राहु के साथ शनि '**मान्दी योग**' बनायेगा। ज
मित्र दगेबाज होगे। खास जरुरत के वक्त धोखा देगें

वृश्चिकलग्न में राहु की स्थिति षष



राहु वृश्चिक राशि। ...
राहु यहां उद्विग्न रहेगा। वृश्चिकलग्न में राहु जहां बैठा होगा वहां के शुभ फल को तोड़ेगा। यहां छठे स्थान में राहु मेष (सम) राशि में है। यहां पर राहु राजयोगकारक एवं ऊर्जावान् है। ऐसा जातक कमजोर परिश्रमी, पराक्रमी व उत्साही होता है। उसमें शत्रुओं को नाश करने की सम्पूर्ण क्षमता होती है। ऐसे जातक में हिम्मत व निर्भयता का विलक्षण समावेश होता है।

दृष्टि–षष्टम भावगत राहु की दृष्टि व्ययभाव (तुला राशि) पर होगी। ऐसा जातक आध्यात्मिक क्षेत्र में रुचि रखता है तथा परोपकार व समाज सेवा के कार्य में विशेष ख्याति अर्जित करता है।

दशा–राहु की दशा-अंतर्दशा में अवरोध दूर होकर शत्रुओं का नाश होगा।

राहु का अन्य ग्रहों से संबंध–

1. **राहु+सूर्य**–राहु के साथ सूर्य '**ग्रहण योग**' बनायेगा। यहां '**राजभंग योग**' के कारण जातक को सरकारी कर्मचारियों से भय रहेगा।

2. **राहु+चंद्र**—राहु के साथ चंद्र '**ग्रहण योग**' बनायेगा। यहां '**भाग्यभंग योग**' के कारण भाग्योदय में निरन्तर बाधाएं आयेगी।

3. **राहु+मंगल**—राहु के साथ मंगल '**अगांरक योग**' बनायेगा। यहां '**लग्नभंग योग**' के कारण जातक का पुरुषार्थ निष्फल जायेगा।

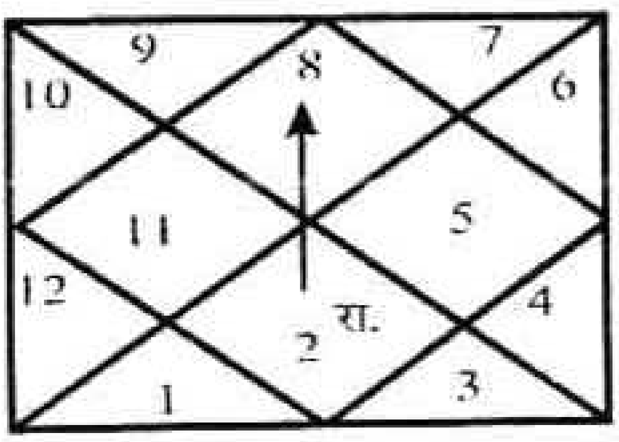
4. **राहु+बुध**—राहु के साथ बुध '**जड़त्व योग**' बनायेगा। यहां '**लाभभंग योग**' के कारण व्यापार से नुकसान होगा।

5. **राहु+गुरु**—यहां दोनों ग्रह मेष राशि में है। बृहस्पति यहां मित्र राशि में तो राहु सम राशि में होने से '**चाण्डाल योग**' बना। बृहस्पति के कारण यहां '**धनहीन योग**' एवं '**संतानहीन योग**' बनेगा। ऐसे जातक को धन प्राप्ति हेतु विषमताओं का सामना करना पड़ेगा। प्रारंभिक विद्या में बाधा एवं पुत्र संतान को लेकर

नायेगा। यहां 'विवाहभंग योग'

क के मामा को पुत्र संतति नहीं

ति सप्तम स्थान में



राहु वृश्चिक राशि में नीच का माना गया है। राहु यहां उद्विग्न रहेगा। वृश्चिकलग्न में राहु जहां बैठा होगा वहां के शुभ फल को तोड़ेगा। यहां सप्तम स्थान में राहु वृष राशि में उच्च का होगा। सपतम राहु किन्हीं-न-किन्ही कारणों से जातक का दाम्पत्य जीवन बिगाड़ता है। वैवाहिक सुख, गृहस्थ सुख की समरसता में यह राहु बाधक है। गुप्त समझौत एवं भागीदारी के कार्य में विवाद पैदा होता है।

दृष्टि—सप्तमस्थ राहु की दृष्टि लग्न भाव (वृश्चिक राशि) पर होगी। फलत: जातक महत्वकांक्षी होता है तथा आगे-बढ़ने की प्रबल उत्कण्ठा रहती है। ऐसा जातक अपने कठोर परिश्रम से भरपूर उन्नति प्राप्त करता है।

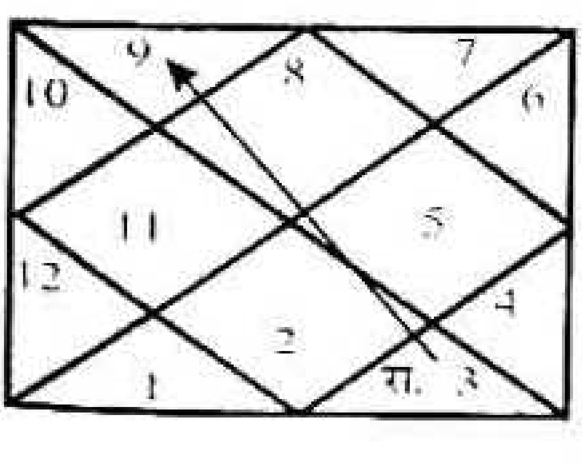
निशानी—ऐसे राहु स्त्री का नाश करता है। जातक दूसरा विवाह करता है।

दशा—राहु की दशा-अंतर्दशा मिश्रित फल देगी।

राहु का अन्य ग्रहों से संबंध–

1. **राहु+सूर्य**–राहु के साथ सूर्य '**ग्रहण योग**' बनेगा। जातक को जीवन साथी से विरक्ति होगी। बिछोह या तलाक संभव।
2. **राहु+चंद्र**–राहु के साथ चंद्र '**ग्रहण योग**' बनेगा। चंद्रमा उच्च का होने से जातक की पत्नी सुन्दर होगी। विवाह के बाद भाग्योदय होगा।
3. **राहु+मंगल**–राहु के साथ मंगल '**अगारक योग**' बनेगा। जातक का विवाह विलम्ब से होगा।
4. **राहु+बुध**–राहु के साथ बुध '**जड़त्व योग**' बनेगा। जातक को व्यापार में नुकसान होगा। पत्नी के साथ अनबन रहेगी। साझेदारी का व्यापार भंग होगा।
5. **राहु+गुरु**–यहां दोनों ग्रह वृष राशि में है। बृहस्पति यहां शत्रु राशि में तो राहु उच्च राशि में होने से '**चाण्डाल योग**' बनेगा। बृहस्पति के कारण '**कुलदीपक योग**' व '**केसरी योग**' भी बन रहा है। जातक धनी होगा। ऐश्वर्यशाली होगा पर पति-पत्नी के मध्य वैचारिक मतभेदों से द्वंद चलता रहेगा।
6. **राहु+शुक्र**–राहु के साथ शुक्र '**लम्पट योग**' बनेगा। शुक्र यहां '**मालव्य योग**' बनायेगा। जातक राजा के समान पराक्रमी होकर सुरा-सुन्दरी का शौकीन होगा।
7. **राहु+राहु**–राहु के साथ शनि '**मान्दी योग**' बनेगा। जातक सांसारिक सुखों में न्यूनता रहेगी। पत्नी से कम बनेगी।

वृश्चिकलग्न में राहु की स्थिति अष्टम स्थान में



राहु वृश्चिक राशि में नीच का माना गया है। राहु यहां उद्विग्न रहेगा। वृश्चिकलग्न में राहु जहां बैठा होगा वहां के शुभ फल को तोड़ेगा। यहां अष्टम स्थान में राहु मिथुन राशि में मूलत्रिकोण का होकर स्वगृही होगा। ऐसे जातक में विशेष साहस व प्रतिभा होती है जो विपरीत परिस्थितियों में निखरती है। ऐसे जातक में अपने शत्रु, विरोधियों को गुप्त रुप से परास्त करने की विशेष योग्यता होती है। शत्रु को परास्त करके ही जातक दम लेगा।

दृष्टि–अष्टमस्थ राहु की दृष्टि द्वितीय भाव (धनु राशि) पर होगी। ऐसे जातक कुटुम्ब-परिवार में उच्च कार्य करके यशस्वी होंगे।

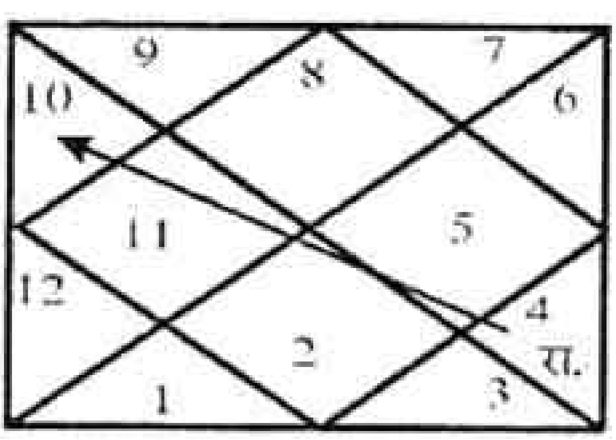
निशानी–जातक को 32वें या 45वें वर्ष में भीषण रोग होने की संभावना रहेगी।

दशा–राहु की दशा-अंतर्दशा शुभफल देगी।

राहु का अन्य ग्रहों से संबंध–

1. **राहु+सूर्य**–राहु के साथ सूर्य '**ग्रहण योग**' बनायेगा। यहां '**राजभंग योग**' के कारण जातक राजा से दण्डित होगा।
2. **राहु+चंद्र**–राहु के साथ चंद्र '**ग्रहण योग**' बनायेगा। यहां '**भाग्यभंग योग**' बनेगा। जातक को भाग्योदय हेतु काफी संघर्ष करना पड़ेगा।
3. **राहु+मंगल**–राहु के साथ मंगल '**अगारक योग**' बनायेगा। यहां '**लग्नभंग योग**' बनेगा। जातक को पुरुषार्थ का फल नहीं मिलेगा।
4. **राहु+बुध**–राहु के साथ बुध '**जड़त्व योग**' बनायेगा। यहां '**लग्नभंग योग**' बनेगा। जातक को व्यापार में नुकसान होगा।
5. **राहु+गुरु**–यहां दोनों ग्रह मिथुन राशि में है। बृहस्पति यहां शत्रु राशि में तो राहु मूलत्रिकोण राशि में स्वगृही होकर '**चाण्डाल योग**' बना रहा है। बृहस्पति के कारण '**धनहीन योग**' एवं '**संतानहीन योग**' भी बनेगा। ऐसे जातक को आर्थिक विषमताएं सहन करनी होगी। विद्या में बाधा एवं पुत्र संतान को लेकर चिंता जीवन पर्यन्त बनी रहेगी।
6. **राहु+शुक्र**–राहु के साथ शुक्र '**लम्पट योग**' बनायेगा। शुक्र यहां '**विलम्ब विवाह योग**' बनायेगा। जातक को गृहस्थ सुख देरी से मिलेगा।
7. **राहु+राहु**–राहु के साथ शनि '**मान्दी योग**' बनायेगा। शनि यहां '**पराक्रमभंग योग**' बनायेगा। जातक को मित्रों से धोखा बदनामी मिलेगी।

वृश्चिकलग्न में राहु की स्थिति नवम स्थान में



राहु वृश्चिक राशि में नीच का माना गया है। राहु यहां उद्विग्न रहेगा। वृश्चिकलग्न में राहु जहां बैठा होगा वहां के शुभ फल को तोड़ेगा। यहां नवम स्थान में राहु कर्क राशि में शत्रुक्षेत्री होगा। ऐसे जातक का जीवन संघर्षमय होता है। वे जीवन में योद्धाओं की भांति संघर्षशील रहते हैं। दृढ़ निश्चय के कारण सफलता इनकी चेरी होती है। जीवन में धन, यश, भाग्य, पद-प्रतिष्ठा की प्राप्ति अवश्य होगी।

दृष्टि—नवमस्थ राहु की दृष्टि पराक्रम स्थान (मकर राशि) पर होगी। फलत: जातक पराक्रमी होगा। जनसम्पर्क सघन रहेगा।

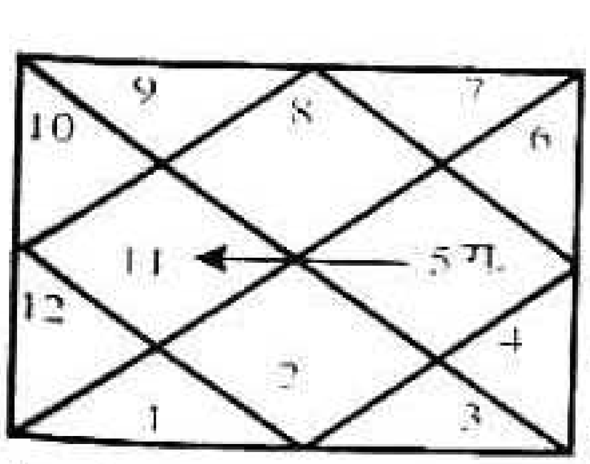
निशानी—ऐसे जातक हाथ में लिए हुए काम को अधूरा नहीं छोड़ता।

दशा—राहु की दशा अंतर्दशा शुभ फल देगी।

राहु का अन्य ग्रहों से संबंध—

1. **राहु+सूर्य**—राहु के साथ सूर्य '**ग्रहण योग**' बनायेगा। जातक को पिता का सुख कमजोर रहेगा।
2. **राहु+चंद्र**—राहु के साथ चंद्र '**ग्रहण योग**' बनायेगा। जातक को माता का सुख कमजोर रहेगा। पर स्वगृही चंद्रमा के कारण जातक भाग्यशाली होगा।
3. **राहु+मंगल**—राहु के साथ मंगल '**अगारक योग**' बनायेगा। जातक को भाईयां का सुख कमजोर मिलेगा।
4. **राहु+बुध**—राहु के साथ बुध '**जड़त्व योग**' बनायेगा। जातक बुद्धिबल से आगे बढ़ेगा।
5. **राहु+गुरु**—यहां दोनों ग्रह कर्क राशि में है। बृहस्पति यहां उच्च का तो राहु शत्रु क्षेत्री होकर '**चाण्डाल योग**' बना रहा है। ऐसा जातक धनी एवं विद्वान् होगा। जातक की संतति भी विद्वान व कीर्तिवान होगी। परन्तु भाग्योदय में बाधा आती रहेगी। जातक भाग्य संबंधी, संतान संबंधी गुप्त परेशानियों से घिरा रहेगा।
6. **राहु+शुक्र**—राहु के साथ शुक्र '**लम्पट योग**' बनायेगा। जातक के भाग्योदय में स्त्री सहायक होगी।
7. **राहु+राहु**—राहु के साथ शनि '**मान्दी योग**' बनायेगा। जातक भाईयों व मित्रों के सहयोग से आगे बढ़ा।

वृश्चिकलग्न में राहु की स्थिति दशम स्थान में



राहु वृश्चिक राशि में नीच का माना गया है। राहु यहां उद्विग्न रहेगा। वृश्चिकलग्न में राहु जहां बैठा होगा वहां के शुभ फल को तोड़ेगा। यहां दशम स्थान में राहु सिंह राशि का शत्रुक्षेत्री होगा। ऐसा जातक साहसी, पराक्रमी एवं दृढ़ विचारों वाला होगा। ऐसा जातक समाज का सरकार द्वारा सम्मानित होता है। ऐसा जातक पिता की तुलना अधिक धनी, मानी व यशस्वी होता है।

दृष्टि—दशमभावगत राहु की दृष्टि चतुर्थ स्थान (कुंभराशि) पर होगी। जातक को माता का सुख कमजोर रहेगा।

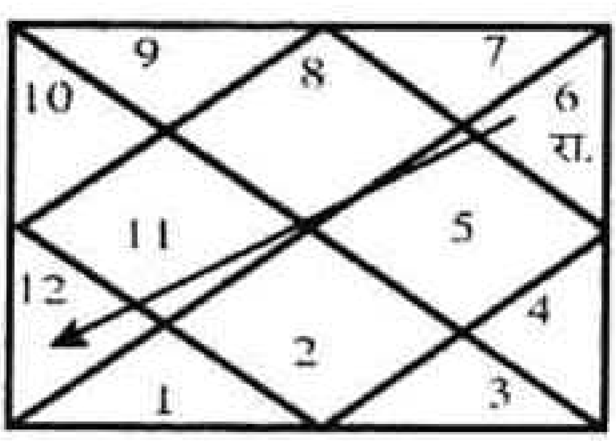
निशानी—ऐसे जातक युद्धप्रिय होता है। माता या पिता की मृत्यु बचपन में हो जाती है।

दशा—राहु की दशा-अंतर्दशा शुभफल देगी।

राहु का अन्य ग्रहों से संबंध—

1. **राहु+सूर्य**—राहु के साथ सूर्य '**ग्रहण योग**' बनायेगा। '**रविकृत राजयोग**' के कारण जातक राज में, राजनीति में उच्च पद प्राप्त करेगा।
2. **राहु+चंद्र**—राहु के साथ चंद्र '**ग्रहण योग**' बनायेगा। जातक को राजा से सम्मान मिलेगा।
3. **राहु+मंगल**—राहु के साथ मंगल '**अगांरक योग**' बनायेगा। 'दिग्बली' मंगल जातक को अतुल कीर्ति देगा।
4. **राहु+बुध**—राहु के साथ बुध '**जड़त्व योग**' बनायेगा। जातक को व्यापार से लाभ होगा। '**कुलदीपक योग**' के कारण जातक परिवार का नाम रोशन करेगा।
5. **राहु+गुरु**—यहां दोनों ग्रह सिंह राशि में है। बृहस्पति यहां मित्र राशि में तो राहु शत्रु राशि में बैठकर '**चाण्डाल योग**' बना रहा है। केन्द्रस्थ बृहस्पति के कारण '**कुलदीपक योग**' व '**केसरी योग**' भी बन रहा है। जातक को सरकारी नौकरी में बाधा आयेगी। व्यापार में रुकावट, फिर भी जातक यशस्वी होगा तथा अपने कुटुम्ब परिवार का नाम दीपक के समान रोशन करेगा।
6. **राहु+शुक्र**—राहु के साथ शुक्र '**लम्पट योग**' बनायेगा। जातक की उन्नति विवाह के बाद होगी।
7. **राहु+राहु**—राहु के साथ शनि '**मान्दी योग**' बनायेगा। जातक को सभी प्रकार के भौतिक व सांसारिक सुखों की प्राप्ति होगी।

वृश्चिकलग्न में राहु की स्थिति एकादश स्थान में



राहु वृश्चिक राशि में नीच का माना गया है। राहु यहां उद्विग्न रहेगा। वृश्चिकलग्न में राहु जहां बैठा होगा वहां के शुभ फल को तोड़ेगा। यहां एकादश स्थान में राहु कन्या का स्वगृही होगा। एकादश स्थान में राहु राजयोग प्रदाता है। ऐसा

व्यक्ति दृढ़ निश्चयी, साहसी एवं परिश्रमी होता है। ऐसा जातक समाज व सरकार द्वारा सम्मानित होता है। व्यापार-व्यवसाय से लाभ होगा।

दृष्टि–एकादश भावगत राहु की दृष्टि पंचम स्थान (मीन राशि) पर होगी। फलत: ऐसे जातक के प्रारंभिक विद्या में रुकावट आयेगी।

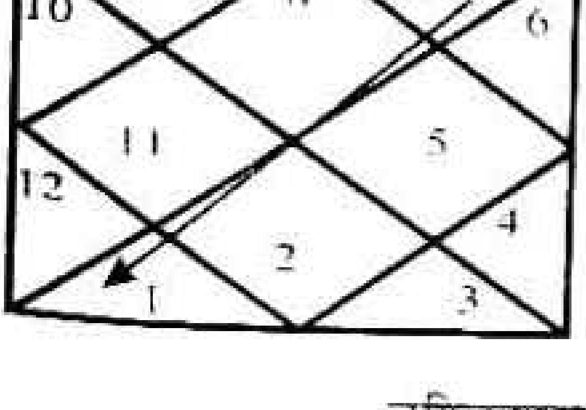
निशानी–ऐसे जातक विदेशियों से ज्यादा सम्पर्क करता है।

दशा–राहु की दशा-अंतर्दशा शुभ फल देगी।

राहु का अन्य ग्रहों से संबंध–

1. **राहु+सूर्य**–राहु के साथ सूर्य '**ग्रहण योग**' बनायेगा। जातक का व्यापार-व्यवास से लाभ होगा।
2. **राहु+चंद्र**–राहु के साथ चंद्र '**ग्रहण योग**' बनायेगा। जातक के व्यापार-व्यवसाय में रुकावटें आयेंगी।
3. **राहु+मंगल**–राहु के साथ मंगल '**अगांरक योग**' बनायेगा। जातक को उद्योग से लाभ होगा।
4. **राहु+बुध**–राहु के साथ बुध '**जड़त्व योग**' बनायेगा। उच्च के बुध के कारण जातक महाधनी होगा।
5. **राहु+गुरु**–यहां दोनों ग्रह कन्या राशि में है। बृहस्पति यहां शत्रु राशि में तो राहु स्वगृही होकर '**चाण्डाल योग**' बना रहा है। ऐसा जातक विद्यावान होगा। पुत्रवान व धनी होगा। गृहस्थ सुख उत्तम रहेगा। परन्तु राहु के कारण व्यापार-व्यवसाय में बाधा आती रहेगी। तथा संतान की उन्नति में भी जातक को निरन्तर बाधा-रुकावट महसूस होती रहेगी।
6. **राहु+शुक्र**–राहु के साथ शुक्र '**लम्पट योग**' बनायेगा। नीच का शुक्र जातक को कामी एवं व्यभिचारी बनायेगा।
7. **राहु+राहु**–राहु के साथ शनि '**मान्दी योग**' बनायेगा। जातक व्यापार प्रिय होगा एवं व्यापार-व्यवसाय से धन की प्राप्ति होती रहेगी।

वृश्चिकलग्न में राहु की स्थिति द्वादश स्थान में



राहु वृश्चिक राशि में नीच का माना गया है। राहु यहां उद्विग्न रहेगा। वृश्चिकलग्न में राहु जहां बैठा होगा वहां के शुभ फल को तोड़ेगा। यहां द्वादश स्थान में राहु राशि में मित्रक्षेत्री होगा। ऐसे जातक को अचानक लाभ या अचानक हानि

होने की संभावना अधिक रहती हैं ऐसा जातक आध्यात्मिक विचारों वाला होता। परोपकारी व दानी होता है। ऐसे जातक को जन्मभूमि से अतिरिक्त परदेश व विदेश में ज्यादा कीर्ति-यश व धन की प्राप्ति होगी।

दृष्टि–द्वादशस्थ राहु की दृष्टि छठे स्थान (मेष राशि) पर होगी। फलतः ऐसा जातक अपने शत्रुओं का नाश करने में पूर्णतः सक्षम होता है।

निशानी–ऐसे जातक के आंख में रोग व पांव में आघात होते है।

दशा–राहु की दशा-अंतर्दशा मिश्रित फलकारक होगी।

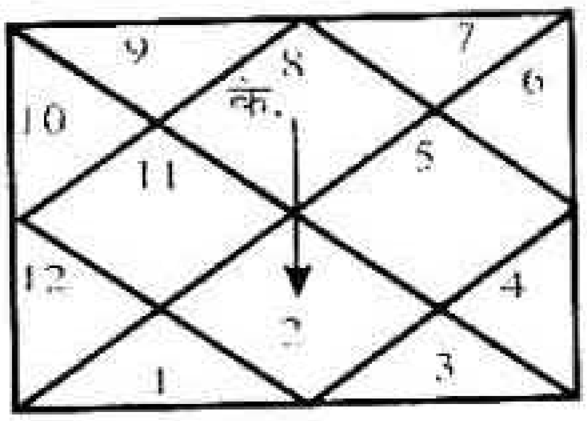
राहु का अन्य ग्रहों से संबंध–

1. **राहु+सूर्य**–राहु के साथ सूर्य '**ग्रहण योग**' बनायेगा। सूर्य नीच का भय या राजदण्ड दिलायेगा।
2. **राहु+चंद्र**–राहु के साथ चंद्र '**ग्रहण योग**' बनायेगा। चंद्रमा यहां '**भाग्यभंग योग**' बनायेगा। जातक का भाग्योदय हेतु काफी संघर्ष करना पड़ेगा।
3. **राहु+मंगल**–राहु के साथ मंगल '**अगांरक योग**' बनायेगा। '**लग्नभंग योग**' के कारण परिश्रम का फल नहीं मिलेगा।
4. **राहु+बुध**–राहु के साथ बुध '**जड़त्व योग**' बनायेगा। **लाभभंग योग** के काण व्यापार से नुकसान होगा।
5. **राहु+गुरु**–यहां दोनों ग्रह तुला राशि मे है। बृहस्पति यहां शत्रु राशि में तो राहु मित्र राशि में बैठकर '**चाण्डाल योग**' बना रहा है। बृहस्पति की इस स्थिति के कारण '**धनहीन योग**' एवं '**संतानहीन योग**' भी बनेगा। ऐसे जातक को धनसंग्रह में बाधाओं का सामना करना पड़ेगा। पुत्र संतति को लेकर चिंता रहेगी। जातक परोपकार, ब्राह्मण भोजन, धार्मिक अनुष्ठान एवं यात्राओं में रुपया खर्च करेगा।
6. **राहु+शुक्र**–राहु के साथ शुक्र '**लम्पट योग**' बनायेगा। '**विलम्ब विवाह योग**' के कारण जातक को गृहस्थ सुख देरी से मिलेगा।
7. **राहु+राहु**–राहु के साथ शनि '**मान्दी योग**' बनायेगा। '**पराक्रमभंग योग**' के कारण मित्रों से धोखा एवं समाज में बदनामी मिलेगी।

❑❑❑

वृश्चिकलग्न में केतु की स्थिति

वृश्चिकलग्न में केतु की स्थिति प्रथम स्थान में



केतु वृश्चिकराशि में उच्च का माना गया है। केतु यहां हर्षित रहेगा। वृश्चिकलग्न में केतु जहां होगा वहां उत्साह की प्रवृत्ति रहेगी। यहां प्रथम स्थान में केतु वृश्चिक राशि में उच्च का होगा। ऐसा जातक कृशकाय, दुबला, उदास, क्रोधी और लड़ाकू स्वभाव का होता है। जातक कठोर परिश्रम करके अपना भाग्य खुद बनायेगा।

दृष्टि–लग्नस्थ केतु दृष्टि सप्तम भाव (वृष राशि) पर होगी। ऐसा जातक कामी होगा और जीवन साथी के साथ अप्राकृतिक मैथुन करेगा।

निशानी–ऐसे जातक के हाथ में पसीन बहुत आयेगा। जातक के चेहरे पर चेचक इत्यादि के स्थाई चिह्न हो सकते हैं।

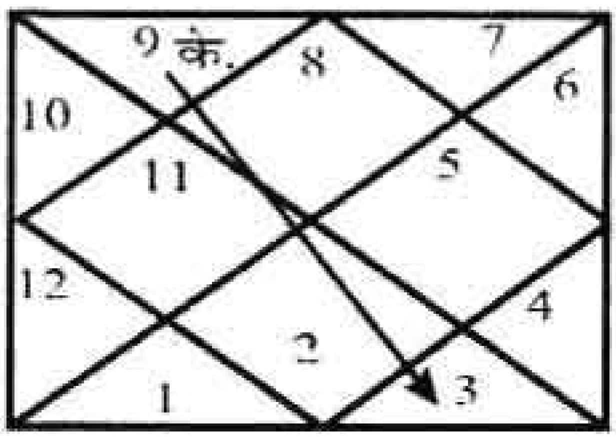
दशा–केतु की दशा अतर्दशा उत्तम फल देगी।

केतु का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध–

1. **केतु+सूर्य**–केतु के साथ सूर्य जातक के व्यक्तित्व विकास में संघर्ष करायेगा।
2. **केतु+चंद्र**–केतु के साथ नीच चंद्रमा जातक को तनावग्रस्त रखेगा।
3. **केतु+मंगल**–केतु के साथ मंगल '**रुचक योग**' बनायेगा। जातक राजा के समान पराक्रमी व प्रभावशाली होगा।
4. **केतु+बुध**–केतु के साथ बुध जातक की बुद्धि को भ्रमित करेगा।
5. **केतु+गुरु**–केतु के साथ बृहस्पति जातक को आध्यात्मिक ऊर्जा देगा।

6. **केतु+शुक्र**—केतु के साथ शुक्र जातक को सैक्स की ओर ज्यादा आकर्षित करेगा।
7. **केतु+शनि**—केतु के साथ शनि जातक को नकारात्मक ऊर्जा प्रदान करेगा।

वृश्चिकलग्न में केतु की स्थिति द्वितीय स्थान में



केतु वृश्चिकराशि में उच्च का माना गया है। केतु यहां हर्षित रहेगा। वृश्चिकलग्न में केतु जहां होगा वहां उत्साह की प्रवृत्ति रहेगी। यहां द्वितीय स्थान में धनु राशि के केतु उच्च का होगा। ऐसे जातक को मुख रोग और कुटुम्ब से विरोध रहता है। राजा से भय रहता है। यहां केतु धनसंग्रह में रुकावट डालता है। ऐसा जातक अपनी प्रतिष्ठा बचाएं रखने के लिए विशेष रुप से प्रयत्नशील रहेगा पर कौटम्बिक सुख में कुछ न कुछ कमी रहेगी।

दृष्टि—द्वितीयस्थ केतु की दृष्टि अष्टम भाव (मिथुन राशि) पर रहेगी। जातक दीर्घजीवी होगा।

निशानी—ऐसा जातक शत्रु जैसी वाणी बोलता है।

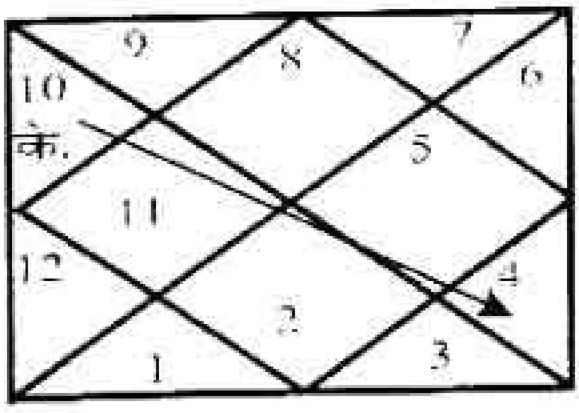
दशा—केतु की दशा-अंतर्दशा शुभ फल देगी।

केतु का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध–

1. **केतु+सूर्य**—केतु के साथ सूर्य जातक को धनी बनायेगा पर धन का 60% भाग व्यर्थ में खर्च हो जायेगा।
2. **केतु+चंद्र**—केतु के साथ चंद्रमा जातक को मानसिक तनाव देगा।
3. **केतु+मंगल**—केतु के साथ मंगल जातक के धन को व्यर्थ में नष्ट-भ्रष्ट करेगा।
4. **केतु+बुध**—केतु के साथ बुध कुटुम्ब में अशांति देगा।
5. **केतु+गुरु**—केतु के साथ बृहस्पति जातक को धनी बनायेगा। परन्तु धन का 60% भाग व्यर्थ में खर्च हो जायेगा।
6. **केतु+शुक्र**—केतु के साथ शुक्र जातक को विवाह से कष्ट पैदा करेगा।
7. **केतु+शनि**—केतु के साथ शनि धन का बिगाड़ करेगा। कुटुम्ब के कलह करायेगा।

वृश्चिकलग्न में केतु की स्थिति तृतीय स्थान में

केतु वृश्चिकराशि में उच्च का माना गया है। केतु यहां हर्षित रहेगा। वृश्चिकलग्न में केतु जहां होगा वहां उत्साह की प्रवृत्ति रहेगी। यहां तृतीय स्थान में



केतु की स्थिति मकर राशि में मूलत्रिकोणी में होगी। ऐसा जातक शत्रु का नाश करने वाला लोकप्रिय व बलवान होता है। साझेदारी से हमेशा लाभ कमाता है। प्रवास में भाग्यवृद्धि होती है। ऐसा जातक परिश्रमी साहसी व धैर्यवान् होता है। भाई-बहनों के संबंधों में कुछ कटुता रहती है।

दृष्टि–तृतीयस्थ केतु की दृष्टि भाग्य भवन (कर्क राशि) पर होगी। जातक का भाग्योदय कठिनता से होगा। ऐसा व्यक्ति भीतर से कमजोर पर बाहर से बड़ी हिम्मत का प्रदर्शन करता है।

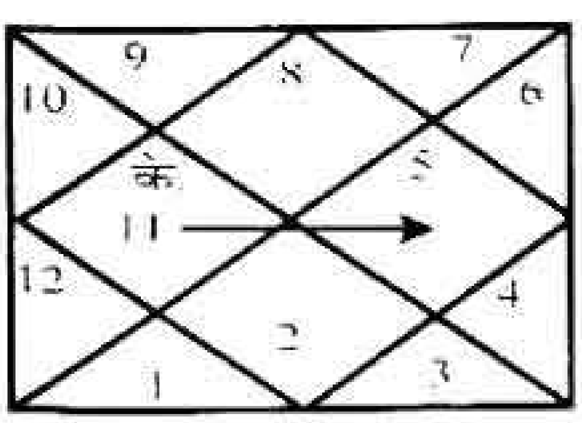
निशानी–छोटे भाई को कष्ट होता है व कान में रोग होते हैं

दशा–केतु की दशा-अंतर्दशा शुभ फल देगी।

केतु का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध–

1. **केतु+सूर्य**–केतु के साथ सूर्य जातक को पराक्रमी बनायेगा पर बदनामी पठी पीछे चलती रहेगी।
2. **केतु+चंद्र**–केतु के साथ चंद्रमा परिजनों में मनमुटाव करायेगा।
3. **केतु+मंगल**–केतु के साथ मंगल उच्च का जातक को पराक्रमी बनायेगा। जातक अपने शत्रुओं का नाश करने में सक्षम होगा।
4. **केतु+बुध**–केतु के साथ बुध जातक को व्यवहारिक बनायेगा।
5. **केतु+गुरु**–केतु के साथ बृहस्पति मित्रों से आर्थिक मदद एवं सहायता दिलायेगा।
6. **केतु+शुक्र**–केतु के साथ शुक्र पराक्रम में गड़बड़ी करायेगा। जातक यार-दोस्तों पर फलातू रुपया खर्च करेगा।
7. **केतु+शनि**–केतु के साथ स्वगृही शनि भाईयों से लाभ देगा पर तकरार भी करायेगा।

वृश्चिकलग्न में केतु की स्थिति चतुर्थ स्थान में



केतु वृश्चिकराशि में उच्च का माना गया है। केतु यहां हर्षित रहेगा। वृश्चिकलग्न में केतु जहां होगा वहां उत्साह की प्रवृत्ति रहेगी। यहां चतुर्थ स्थान में केतु कुंभ राशि में मित्रक्षेत्री होगी। केतु यहां राजयोग देगा। वाहन सुख देगा। स्वभाव अस्थिर

होता है। जातक को माता के कारण कुछ परेशानी उठानी पड़ती है। मकान सुख में कुछ कमी। व्यक्ति अंदर से परेशान रहता है।

दृष्टि–चतुर्थभावस्थ केतु की दृष्टि दशम स्थान (सिंह राशि) पर होगी। जातक को राजा से भय रहेगा। कोर्ट-कचहरी में प्रतिकूल परिणाम मिलेगे।

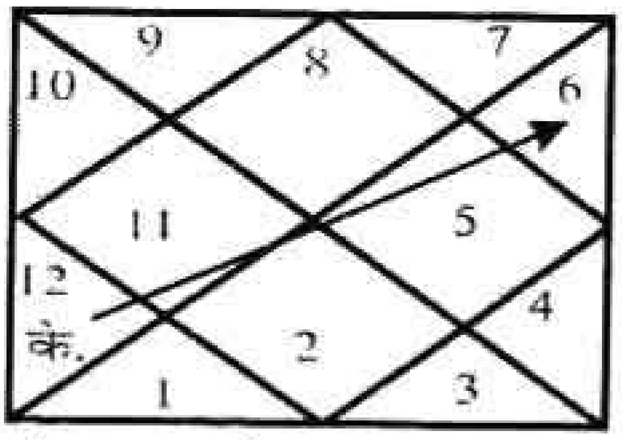
निशानी–ऐसा जातक पित्त प्रकृति एवं वितण्डवादी होता है।

दशा–केतु की दशा-अंतर्दशा शुभ फल देगी।

केतु का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध–

1. **केतु+सूर्य**–केतु के साथ सूर्य माता-पिता को बीमारी या कष्ट देगा। पिता की सम्पत्ति जातक को नहीं मिलेगी।
2. **केतु+चंद्र**–केतु के साथ चंद्रमा माता को बीमारी या वाहन से कष्ट देगा।
3. **केतु+मंगल**–केतु के साथ मंगल जातक को भौतिक सुख-सुविधा में कष्ट देगा।
4. **केतु+बुध**–केतु के साथ बुध मामा को कष्ट देगा।
5. **केतु+गुरु**–केतु के साथ बृहस्पति जातक को अपना भवन-मकान, भूमि व वाहन देगा।
6. **केतु+शुक्र**–केतु के साथ शुक्र विवाह में विलम्ब करायेगा।
7. **केतु+शनि**–केतु के साथ शनि '**शशयोग**' के कारण जातक को राजा तुल्य पराक्रमी बनायेगा।

वृश्चिकलग्न में केतु की स्थिति पंचम स्थान में



केतु वृश्चिकराशि में उच्च का माना गया है। केतु यहां हर्षित रहेगा। वृश्चिकलग्न में केतु जहां होगा वहां उत्साह की प्रवृत्ति रहेगी। यहां पंचम स्थान में केतु मीन राशि में स्वगृही होगा। ऐसा जातक आध्यात्म प्रेमी होता है। उसे तीर्थ यात्रा का शौक रहता है। जातक उपदेशक होता है। राजयोग के कारण मठाधीश, महंत या सामाजिक संस्था, ट्रस्ट का अध्यक्ष होता है। जातक के विद्याध्ययन में रुकावट आयेगी। संतान से कम बनेगी।

दृष्टि–पंचमस्थ केतु की दृष्टि एकादश स्थान (कन्या राशि) पर होगी। राज (सरका) पक्ष से गुप्त चिंताएं बनी रहेगी।

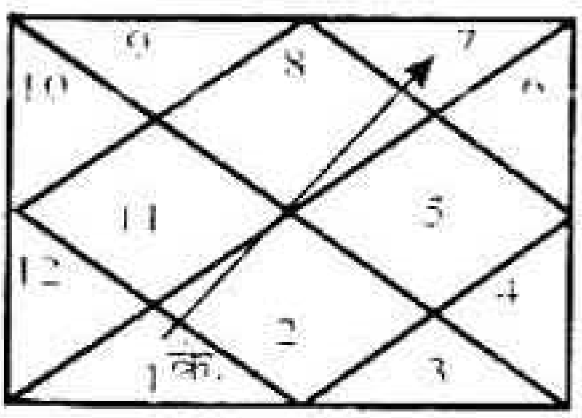
निशानी–ऐसे जातक को परदेश में रहने की प्रवृत्ति होती है।

दशा–केतु की दशा-अंतर्दशा शुभफल देगी।

केतु का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध–

1. **केतु+सूर्य**–केतु के साथ सूर्य विद्या प्राप्ति में बाधक है।
2. **केतु+चंद्र**–केतु के साथ चंद्रमा जातक को उच्च शिक्षा दिलायेगा। प्रथम संतति कन्या होगी।
3. **केतु+मंगल**–केतु के साथ मंगल जातक को उत्तम विद्या, व्यवहारिक विद्या व टैक्नीकल विद्या का ज्ञात बनायेगा।
4. **केतु+बुध**–केतु के साथ नीच का बुध जातक की बुद्धि को मलिन करेगा। जातक को दो कन्या होगी।
5. **केतु+गुरु**–केतु के साथ बृहस्पति स्वगृही जातक को आध्यात्मिक ज्ञान एवं पुत्र संतान की प्राप्ति करायेगा।
6. **केतु+शुक्र**–केतु के साथ शुक्र उच्च का जातक का भाग्योदय विवाह के बाद करायेगा पर विवाह विलम्ब से होगा।
7. **केतु+शनि**–केतु के साथ शनि जातक को विदेशी विद्या में रुचि देगा।

वृश्चिकलग्न में केतु की स्थिति षष्टम स्थान में



केतु वृश्चिकराशि में उच्च का माना गया है। केतु यहां हर्षित रहेगा। वृश्चिकलग्न में केतु जहां होगा वहां उत्साह की प्रवृत्ति रहेगी। यहां छठे स्थान में केतु मेषराशि में मित्रक्षेत्री होगा। ऐसा जातक शत्रु का नाश करने वाला सदैव विजयी होता है। चौपायों का लाभ अथवा वाहन अनेक होते हैं। ऐसा जातक ऊर्जावान् होता है। अन्य लोगों को तुच्छ समझकर बेपरवाह रहता है। जातक बड़ा परिश्रमी होता है तथा अपने प्रभाव का विस्तार करने के लिए सदैव प्रयत्नशील रहता है।

दृष्टि–षष्टम भावगत केतु की दृष्टि द्वादश भाव (तुला राशि) पर होगी। ऐसा जातक धन का खर्च अच्छे कामों में करता है।

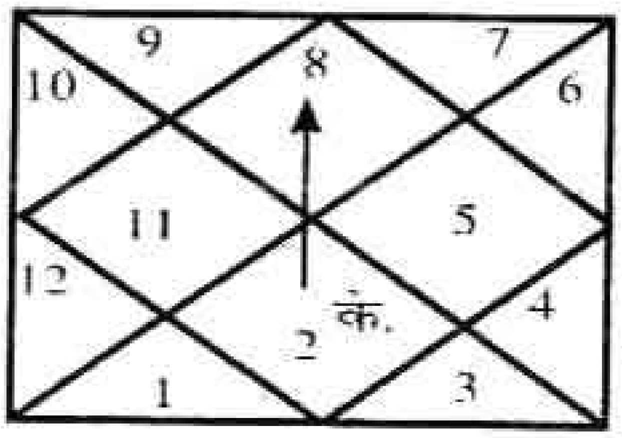
निशानी–शरीर निरोग रहता है। जातक का ननिहाल पक्ष कमजोर होता है।

दशा–केतु की दशा-अंतर्दशा शुभफल देगी।

केतु का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध–

1. **केतु+सूर्य**–केतु के साथ सूर्य '**राजभंग योग**' करायेगा। जातक को सरकारी नौकरी प्राप्त करने में दिक्कत आयेगी।
2. **केतु+चंद्र**–केतु के साथ चंद्रमा '**भाग्यभंग योग**' करायेगा। जातक को भाग्योदय हेतु परेशानी उठानी पड़ेगी।
3. **केतु+मंगल**–केतु के साथ मंगल '**लग्नभंग योग**' बनायेगा। जातक को परिश्रम का लाभ नहीं मिलेगा।
4. **केतु+बुध**–केतु के साथ बुध '**विपरीत राजयोग**' बनायेगा। जातक धनी, मानी एवं ऐश्वर्यशाली जीवन जीयेगा।
5. **केतु+गुरु**–केतु के साथ बृहस्पति जातक की कुण्डली में '**धनहीन योग**' व 'विद्याभंग योग' बनायेगा। जातक को आर्थिक विषमताएं रहेगी।
6. **केतु+शुक्र**–केतु के साथ शुक्र '**विलम्ब विवाह योग**' कराता है। जातक को दाम्पत्य सुख देरी से मिलेगी।
7. **केतु+शनि**–केतु के साथ शनि '**पराक्रमभंग योग**' बनायेगा। '**सुखहीन योग**' भी बनायेगा। जातक को बदनामी का सामना करना पड़ेगा।

वृश्चिकलग्न में केतु की स्थिति सप्तम स्थान में



केतु वृश्चिकराशि में उच्च का माना गया है। केतु यहां हर्षित रहेगा। वृश्चिकलग्न में केतु जहां होगा वहां उत्साह की प्रवृत्ति रहेगी। यहां सप्तम स्थान में केतु वृषराशि में नीच का होगा। ऐसे जातक को राजा की अवकृपा एवं शत्रुओं से भय रहता है। कोर्ट-कचहरी से अपमान का भय रहता है। ऐसा जातक अतिकामुक एवं अनैतिक संबंधों में विश्वास रखता है। उसके जननेन्द्रिय में विकार रहता है।

दृष्टि–सप्तम भावगत केतु की दृष्टि लग्नस्थान (वृश्चिक राशि) पर होगी। ऐसा जातक अपने वाक्चातुर्य, गुप्त युक्ति, साहस व धैय के बल पर सभी प्रकार के काम करने में सफल होता है।

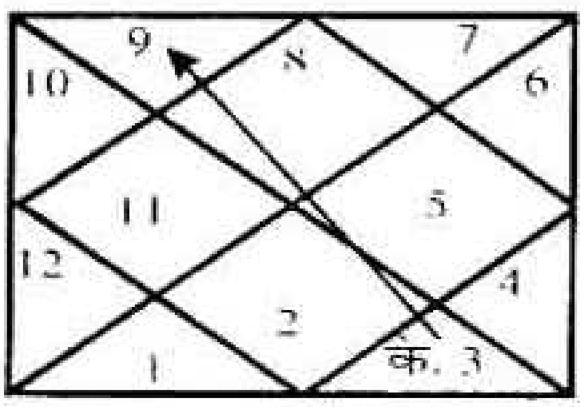
निशानी–ऐसा जातक नीचजामि की स्त्री से अवैध संबंध रखता है।

दशा–केतु की दशा-अंतर्दशा अनिष्ट फल देगी।

केतु का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध–

1. **केतु+सूर्य**–केतु के साथ सूर्य विवाह विच्छेद का योग बनाता है।
2. **केतु+चंद्र**–केतु के साथ चंद्रमा उच्च का पत्नी सुन्दर देगा।
3. **केतु+मंगल**–केतु के साथ मंगल होने से जातक अत्यधिक कामी होगा।
4. **केतु+बुध**–केतु के साथ बुध जातक को व्यापार प्रिय बनायेगा पर गृहस्थ सुख में कमी रहेगी।
5. **केतु+गुरु**–केतु के साथ बृहस्पति गृहस्थ सुख देगा पर कुछ-न-कुछ न्यूनता बनी रहेगी।
6. **केतु+शुक्र**–केतु के साथ शुक्र होने से '**मालव्य योग**' बनेगा। जातक राजा के समान पराक्रमी होगा।
7. **केतु+शनि**–केतु के साथ शनि जातक का वैवाहिक जीवन कलुषित होगा।

वृश्चिकलग्न में केतु की स्थिति अष्टम स्थान में



केतु वृश्चिकराशि में उच्च का माना गया है। केतु यहां हर्षित रहेगा। वृश्चिकलग्न में केतु जहां होगा वहां उत्साह की प्रवृत्ति रहेगी। यहां अष्टम स्थान में केतु मिथुन राशि में नीच का होगा। ऐसा जातक दीर्घजीवी होता है। परस्त्री में आसक्त रहता है। जातक दुराचारी व नेत्र रोगी होता है। ऐसे जातक की आयु के संबंध में अनेक बार मृत्यु तुल्य कष्टों का सामना करना पड़ता है।

दृष्टि–अष्टमस्थ केतु की दृष्टि द्वितीय स्थान (धनु राशि) पर होगी। ऐसे जातक को अपना जीवन निर्वा करने के लिए आर्थिक कष्टों का मुकाबला करना पड़ता है।

निशानी–जातक की वाणी कड़वी होगी।

दशा–केतु की दशा-अंतर्दशा मिश्रित फलदायक होगी।

केतु का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध–

1. **केतु+सूर्य**–केतु के साथ सूर्य '**राजभंग योग**' कराता है। जातक को सरकारी नौकरी को लेकर परेशानी आयेगी।

2 **केतु+चंद्र**–केतु के साथ चंद्रमा '**भाग्यभंग योग**' बनायेगा। जातक के उन्नति में बाधक है।

3. **केतु+मंगल**–केतु के साथ मंगल '**लग्नभंग योग**' बनायेगा। जातक को परिश्रम का लाभ नहीं मिलेगा।

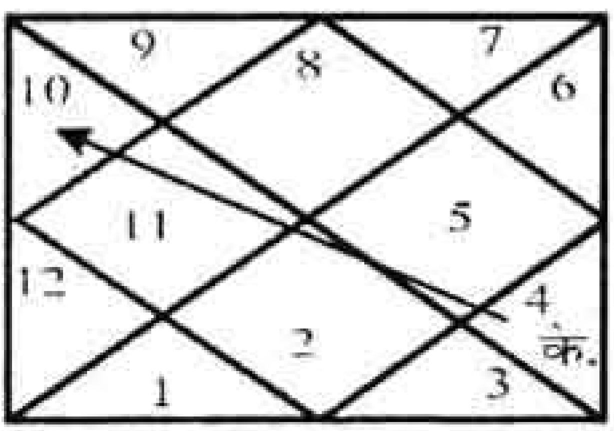
4. **केतु+बुध**–केतु के साथ बुध '**विपरीत राजयोग**' बनायेगा। जातक धनी, मानी एवं ऐश्वर्यपूर्ण जीवन जीयेगा।

5. **केतु+गुरु**–केतु के साथ बृहस्पति '**धनहीन योग**' बनायेगा। जातक को आर्थिक विषमताओं का सामना करना पड़ेगा। विद्या में रुकावट आयेगी।

6. **केतु+शुक्र**–केतु के साथ शुक्र '**विलम्ब विवाह योग**' करायेगा। जातक के दाम्पत्य जीवन के सुखों में न्यूनता रहेगी।

7. **केतु+शनि**–केतु के साथ शनि '**पराक्रमभंग योग**' एवं '**सुखहीन योग**' बनायेगा। जातक के पीठ पीछे जातक की निन्दा होगी।

वृश्चिकलग्न में केतु की स्थिति नवम स्थान में



केतु वृश्चिकराशि में उच्च का माना गया है। केतु यहां हर्षित रहेगा। वृश्चिकलग्न में केतु जहां होगा वहां उत्साह की प्रवृत्ति रहेगी। यहां नवम स्थान में केतु कर्क राशि में शत्रुक्षेत्री होगा। ऐसा जातक संघर्ष के द्वारा ऊंचे पद को प्राप्त करता है। जातक धर्मविरोधी है पर राजा का मंत्री, सलाहकार व राज में ऊंचा पद प्राप्त करता है। ऐसे जातक के भाग्योदय में मकान संकट आता है। जातक हर समय मानसिक चिंताओं से घिरा रहता है।

दृष्टि–नवमस्थ केतु की दृष्टि पराक्रम स्थान (मकर राशि) पर होगी। ऐसे जातक के भाईयों में परस्पर वैर रहता है।

निशानी–सगे भाई का सुख नहीं।

दशा–केतु की दशा-अंतर्दशा शुभ फल देगी।

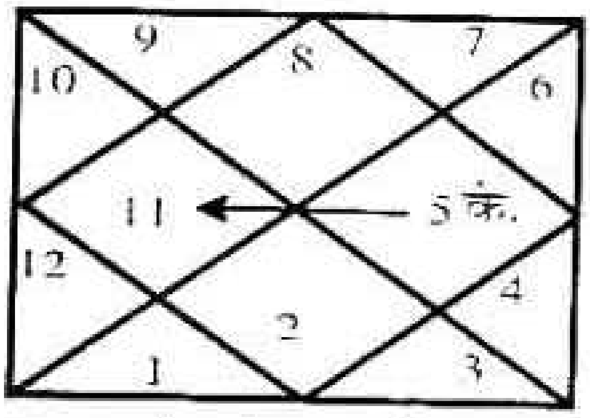
केतु का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध–

1. **केतु+सूर्य**–केतु के साथ सूर्य राजयोग बनायेगा। जातक को सरकारी नौकरी मिलेगी। या सरकार से सम्मान मिलेगा।

2 **केतु+चंद्र**–केतु के साथ चंद्रमा जातक का भाग्योदय शीघ्र करायेगा। पर संघर्ष रहेगा।

3. **केतु+मंगल**–केतु के साथ मंगल नीच का जातक को भूमि लाभ दिलायेगा।
4. **केतु+बुध**–केतु के साथ बुध व्यापार से लाभ दिलायेगा।
5. **केतु+गुरु**–केतु के साथ बृहस्पति उच्च का जातक को उत्तम विद्या का सुख देगा। राजनीति में सम्मान व सफलता देगा।
6. **केतु+शुक्र**–केतु के साथ शुक्र जातक का भाग्योदय विवाह के बाद करायेगा।
7. **केतु+शनि**–केतु के साथ शनि जातक को मित्रों से परिजनों से लाभ देगा।

वृश्चिकलग्न में केतु की स्थिति दशम स्थान में



केतु वृश्चिकराशि में उच्च का माना गया है। केतु यहां हर्षित रहेगा। वृश्चिकलग्न में केतु जहां होगा वहां उत्साह की प्रवृत्ति रहेगी। यहां दशम स्थान में केतु सिंह राशि में मूलत्रिकोणी होगा। ऐसे जातक को माता-पिता का सुख नहीं। वाहन दुर्घटना का भय रहता है। जातक शत्रुओं का नाश करने में कुशल होता है। युद्ध में शत्रु भी इसकी कीर्ति गाते हैं। जातक अपने धैर्य, साहस व गुप्त युक्तियों से जीवन में सफलता प्राप्त कर लेता है।

दृष्टि–दशमस्थ केतु की दृष्टि चतुर्थभाव (कुंभराशि) पर होगी। जातक को माता का सुख नहीं मिलेगा। तथा पिता से विचार नहीं मिलेंगे।

निशानी–जातक का प्रभाव राज-दरबार में रहेगा।

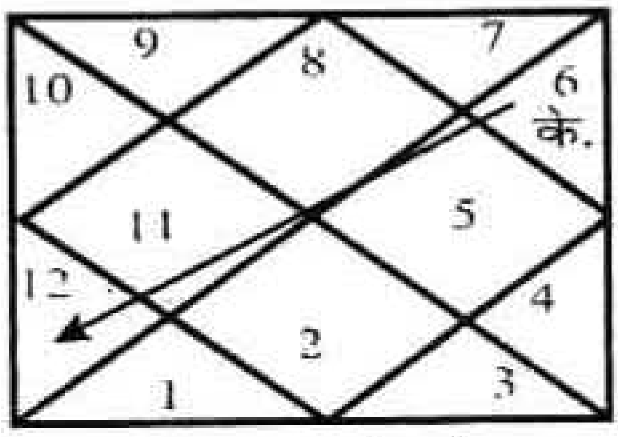
दशा–केतु की दशा-अंतर्दशा शुभ फल देगी।

केतु का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध–

1. **केतु+सूर्य**–केतु के साथ सूर्य '**रविकृत राजयोग**' बनायेगा। जातक को राजा (सराकर) से उच्च पद, प्रतिष्ठा मिलेगी।
2. **केतु+चंद्र**–केतु के साथ चंद्रमा राजा से सम्मान दिलायेगा।
3. **केतु+मंगल**–केतु के साथ मंगल जातक को बड़ी भूमि का स्वामी या गांव का मुखिया बनायेगा।
4. **केतु+बुध**–केतु के साथ बुध जातक को व्यापार में सफलता देगा।
5. **केतु+गुरु**–केतु के साथ बृहस्पति आध्यात्मिक ज्ञान तथा अध्ययन-अध्यापन में सफलता देगा।
6. **केतु+शुक्र**–केतु के साथ शुक्र जातक को व्यापार में बाधा देगा।

7. **केतु+शनि**–केतु के साथ शनि जातक को 'करोड़पति' बनायेगा।

वृश्चिकलग्न में केतु की स्थिति एकादश स्थान में



केतु वृश्चिकराशि में उच्च का माना गया है। केतु यहां हर्षित रहेगा। वृश्चिकलग्न में केतु जहां होगा वहां उत्साह की प्रवृत्ति रहेगी। यहां एकादश भाव के केतु कन्या राशि में नीच का होगा। जातक विनोदी स्वभाव का होगा एवं मीठा (मधुर) वाणी बोलेगा। जातक शास्त्रों का रसिक, परोपकारी, दयालु होता है। राजा द्वारा सम्मानित होता है। ऐसे जातक को आकस्मिक धन-लाभ होता है। ऐसा जातक संकटों का समाना बड़े धैर्य, चालाकी एवं बुद्धि चातुर्थ से करता है।

दृष्टि–एकादश भावगत केतु की दृष्टि पंचम भाव (मीन राशि) पर होगी। ऐसे जातक को प्रारंभिक विद्या में रुकावट आती है तथा फिर आगे बढ़ता है। ऐसा व्यक्ति स्वार्थी व चालबाज होता है।

निशानी–जातक को व्यापार में यश मिलता है।

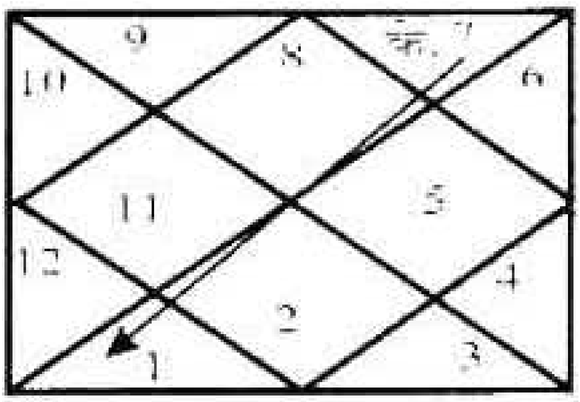
दशा–केतु की दशा-अंतर्दशा शुभ फल देगी।

केतु का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध–

1. **केतु+सूर्य**–केतु के साथ सूर्य व्यापार में लाभ देगा।
2. **केतु+चंद्र**–केतु के साथ चंद्रमा व्यापार में उतार-चढ़ाव लाता रहेगा।
3. **केतु+मंगल**–केतु के साथ मंगल उद्योग में लाभ दिलायेगा।
4. **केतु+बुध**–केतु के साथ उच्च का बुध व्यापार में लाभ देगा।
5. **केतु+गुरु**–केतु के साथ बृहस्पति आध्यात्मिक सुख देगा।
6. **केतु+शुक्र**–केतु के साथ शुक्र नीच का बड़े भाई का सुख को नष्ट करेगा।
7. **केतु+शनि**–केतु के साथ शनि व्यापार में रुकावट डालेगा। जातक विदेश में कमायेगा।

वृश्चिकलग्न में केतु की स्थिति द्वादश भाव में

केतु वृश्चिकराशि में उच्च का माना गया है। केतु यहां हर्षित रहेगा। वृश्चिकलग्न में केतु जहां होगा वहां उत्साह की प्रवृत्ति रहेगी। यहां द्वादश स्थान में



केतु तुला राशि में मित्रक्षेत्री होगा। ऐसा जातक लड़ाई में डरपोक एवं कंजूस स्वभाव का होता है। जातक कवि, शास्त्रज्ञ एवं जीतेन्द्रिय होता है। ऐसा जातक अधिक खर्च करता है पर बड़ी चतुराई, परिश्रम एवं गुप्त युक्तियों से अपने खर्चे को चलता रहता है। अपने सहास व धैर्य को नहीं खोता।

दृष्टि–द्वादश भावगत केतु की दृष्टि छठे स्थान (मेष राशि) पर रहेगी। जातक ऋण व रोग को समाप्त करने में सफल होता है।

निशानी–ऐसा जातक शक्ति का उपासक, देवी का भक्त एवं साधक होता है।

दशा–केतु की दशा-अंतर्दशा शुभफल देगी।

केतु का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध–

1. **केतु+सूर्य**–केतु के साथ सूर्य होने से जातक के राजा से दण्ड मिलने का भय रहेगा। सरकारी अधिकारी विरोध में रहेंगे।
2. **केतु+चंद्र**–केतु के साथ चंद्रमा '**भाग्यभंग योग**' बनायेगा। जातक को भाग्योदय हेतु भारी संघर्ष करना पड़ेगा।
3. **केतु+मंगल**–केतु के साथ मंगल '**लग्नभंग योग**' बनायेगा। जातक को परिश्रम का फलनहीं मिलेगा।
4. **केतु+बुध**–केतु के साथ बुध '**विपरीत राजयोग**' बनायेगा। जातक धनी-मानी एवं ऐश्वर्यशाली जीवन जीयेगा।
5. **केतु+गुरु**–केतु के साथ बृहस्पति '**धनहीन योग**' व '**विद्याहीन योग**' बनाता है। जातक को आर्थिक विषमाताओं का सामना करना पड़ेगा।
6. **केतु+शुक्र**–केतु के साथ शुक्र '**विलम्ब विवाह योग**' बनायेगा। जातक को पूर्ण गृहस्थ सुख में परेशानियां आयेगी।
7. **केतु+शनि**–केतु के साथ शनि '**पराक्रमभंग योग**' एवं '**सुखहीन योग**' बनायेगा। जातक के मित्र, परिजन ही जातक की निन्दा करेंगे।

❑❑❑

मंगलवार व्रत कथा

मंगल बहादुरी व साहस के देवता हैं। ये भय तथा शत्रुओं का नाश करने वाले हैं। मंगलवार का व्रत व पूजन करने से सब प्रकार के अनिष्टों से मुक्ति होती है। मंगलवार के व्रत का नियम-पूर्वक पालन करने से धन-संपत्ति की प्राप्ति होती है।

मंगल की दशा कड़ी होने, तथा मंगलदेव की शांति हेतु इस उपवास को इक्कीस मंगलवार तक किया जाता है।

मंगल का तांत्रिक मंत्र—ॐ ह्रीं श्रीं भौमाय नमः।

विधि विधान—यह व्रत मंगलवार को रखा जाता है तथा दिन में एक ही बार मीठा भोजन करना चाहिए। भोजन सूर्यास्त से पहले कर लेना चाहिए। प्रातः काल शय्या त्याग कर नित्यकर्मों से निवृत्त हो स्वच्छ वस्त्र धारण करें तत्पश्चात् शुद्ध स्थान पर मंगलदेव की प्रतिमा स्थापित कर लाल चंदन, सिंदूर, लाल पुष्पों द्वारा मंगल देव की पूजा करें तथा मंगल के तांत्रिक मंत्र का इक्कीस बार जाप करें तथा व्रत कथा का पाठ करें।

व्रत कथा—एक नगर में एक ब्राह्मण दम्पत्ति रहते थे। किन्तु वे निःसन्तान थे। इसी कारण दोनों पति-पत्नी दुःखी रहते थे। पुत्र प्राप्ति की इच्छा से ब्राह्मण वन में हनुमान जी की उपासना व तपस्या करने चला गया।

ब्राह्मण की पत्नी भी प्रत्येक मंगलवार को मंगल का उपवास व पूजन करती थी। मंगलवार को व्रत के लिए वह प्रेम से भोजन पकाती तथा फिर वह उस भोजन को निष्ठापूर्वक हनुमान जी को भोग लगाती तथा फिर श्रद्धा व प्रेम से स्वयं एक समय भोजन करती थी।

एक बार पड़ोस में कोई शादी होने के कारण ब्राह्मणी को वहां जाना पड़ गया इसलिए उस दिन ब्राह्मणी भोजन न पका सकी और सारा दिन वहीं विवाह में व्यस्त रही। घर पर भोजन न पका सकने के कारण ब्राह्मणी ने हनुमान जी को भी भोग नहीं लगाया। वह अपने मन में ऐसा प्रण करके सो गई कि अब अगले मंगलवार को ही भोग लगाकर, अन्न ग्रहण करूंगी।

वह भूखी-प्यासी छः दिन तक पड़ी रही। मंगलवार के दिन उसे मूर्छा आ गई। हनुमान जी उसकी लगन और निष्ठा को देखकर प्रसन्न हो गए। उन्होंने उसे दर्शन दिए और कहा—"मैं तुमसे अति प्रसन्न हूं। मैं तुम्हें एक सुन्दर बालक देता हूं, जो तेरी बहुत सेवा किया करेगा।

सुन्दर बालक पाकर ब्राह्मणी अति प्रसन्न हुई। ब्राह्मणी ने बालक का नाम मंगल रखा। कुछ समय पश्चात् ब्राह्मण वन से लौटकर आया। एक प्रसन्नचित्त सुन्दर बालक को घर में क्रीड़ा करते देखकर, ब्राह्मण ने अपनी पत्नी से पूछा—"यह बालक कौन है?" पत्नी ने कहा—"मंगलवार के व्रत से प्रसन्न हो हनुमान जी ने दर्शन देकर मुझे यह बालक दिया है।" ब्राह्मण को पत्नी की बात पर विश्वास नहीं हुआ। उसने सोचा यह कुल्टा, व्यभिचारिणी अपनी कलुषता छिपाने के लिए बात बना रही है।

एक दिन ब्राह्मण कुएं पर पानी भरने गया तो ब्राह्मणी ने कहा कि मंगल को भी अपने साथ ले जाओ। ब्राह्मण मंगल को साथ ले गया परन्तु वह उस बालक को नाजायज मानता था इसलिए वह बालक को कुएं में डालकर पानी भरकर घर वापस आ गया। ब्राह्मणी ने ब्राह्मण से पूछा कि मंगल कहां है। तभी मंगल हंसता हुआ घर वापस आ गया। उसे वापस आया देखकर ब्राह्मण बहुत आश्चर्यचकित हो गया। उसने सोचा, अभी तो मैं इसे कुएं में धक्का देकर आया था फिर यह कहां से आ गया? रात्रि को उसे स्वप्न में हनुमान जी ने दर्शन दिए और कहा—"यह बालक मेरा दिया हुआ है। तुम अपनी पत्नी पर व्यर्थ ही लांछन क्यों लगाते हो?" ब्राह्मण को सत्य जानकर बड़ी ग्लानि हुई। उसने अपनी पत्नी से क्षमा मांगी और फिर ब्राह्मण-दम्पत्ति मंगलवार का व्रत करते हुए आनन्दपूर्वक जीवन व्यतीत करने लगे। इस प्रकार जो भी मंगलवार का व्रत रखता है, उसकी समस्त मनोकामनाएं पूर्ण होती हैं और वह सब कष्टों से मुक्ति पाता है।

मंगलवार व्रत की दूसरी कथा

एक वृद्धा मंगलवार को अपना इष्टदेव मानती थी और प्रत्येक मंगलवार को व्रत रखती व मंगल देव का पूजन करती। उसका एक पुत्र था जिसका नाम मंगलिया था। मंगलवार को वह न घर लीपती न ही पृथ्वी खोदती थी। एक दिन स्वयं मंगलदेव उसकी श्रद्धा की परीक्षा लेने के लिए साधु का रूप धारण कर आए और उसके द्वार पर आकर आवाज दी। बुढ़िया घर से बाहर आई और साधु को खड़ा देख हाथ जोड़कर बोली—"महाराज क्या आज्ञा है?" साधु ने कहा—"मुझे बहुत भूख लगी है, भोजन बनाना है। इसके लिए तू थोड़ी-सी पृथ्वी लीप दे तो तेरा पुण्य होगा।" यह

सुन बुढ़िया ने कहा–''महाराज आज मैं मंगलवार की व्रती हूं इसलिए मैं चौका नहीं लगा सकती। कहें तो जल का छिड़काव कर दूं। वहां पर भोजन बना लें।'' साधु ने कहा–''मैं गोबर से ही लिपे चौके पर खाना बनाता हूं।'' बुढ़िया ने कहा–''पृथ्वी लीपने के अलावा और कोई सेवा हो तो मैं वह करने के लिए उपस्थित हूं।'' साधु ने कहा–''सोच समझकर उत्तर दो। जो कुछ भी मैं कहूंगा वह तुमको करना होगा।'' बुढ़िया कहने लगी–''महाराज पृथ्वी लीपने के अलावा जो भी आप आज्ञा करेंगे उसका मैं अवश्य पालन करूंगीं'' बुढ़िया ने ऐसा वचन तीन बार दिया। तब साधु ने कहा–''तू अपने लड़के को बुलाकर औंधा लिटा दे, मैं उसकी पीठ पर भोजन बनाऊंगा।'' साधु की बात सुनकर बुढ़िया चुप रह गई। तब साधु ने कहा–''बुला लड़के को, अब सोच-विचार क्या करती है?'' बुढ़िया 'मंगलिया...मंगलिया' कहकर अपने पुत्र को पुकारने लगी। थोड़ी देर बाद उसका लड़का आ गया। बुढ़िया ने कहा–''जा बेटे तुझको साधु महाराज बुला रहे हैं।'' लड़के ने मां की बात सुनकर उसकी आज्ञा का पालन किया और बाबा के पास जाकर कहा–''महाराज क्या आज्ञा है?'' साधु ने कहा–''जा, जाकर अपनी माता को ले आओ।'' जब माता आ गई तो साधु ने कहा कि इसे जमीन पर लिटा दे। बुढ़िया ने कहा ठीक है और मंगलदेव का स्मरण करके लड़के को उल्टा लिटा दिया और उसकी कमर पर अंगीठी रख दी। तब वृद्धा दु:खी मन से बोली–''महाराज अब आपको जो कुछ करना है करो, मैं जाकर अपना काम करती हूं।'' साधु ने अंगीठी में आग जलाई और उस पर भोजन बनाया। जब भोजन बन गया तो साधु ने वृद्धा से कहा कि आओ माई तुम भी भोग लगा लो और अपने पुत्र को भी बुलाओ कि वह भी भोजन ले जाए। वृद्धा ने दु:खी मन से कहा–''बाबा जी यह क्या कहते हो ? आपने खुद ही तो अभी उसकी पीठ पर आग जलाई है और उसी को बुला रहे हैं। अब आप मुझे उसकी याद न दिलाओ। वह तो कब का मर चुका होगा। आप भोजन करके जहां जाना हो चले जाएं।'' साधु ने कहा–''तू आवाज तो लगा।'' वृद्धा ने कहा–ठीक है महाराज, जैसी आपकी इच्छा।'' और जैसे ही उसने मंगलिया कहकर पुकारा वैसे ही मंगलिया दौड़ता हुआ आ गया। साधु ने कहा–''माता तुम्हारा व्रत सफल हुआ। तेरी निष्ठा पक्की है, अब तुझे कभी कोई कष्ट नहीं होगा।''

❑❑❑

मंगलवार की आरती

आरती कीजै हनुमान लला की।
दुष्ट दलन रघुनाथ कला की।।
जाके बल से गिरिवर कांपै।
रोग-दोष जाके निकट न झांपै।।
अंजनि पुत्र महाबल दाई।
संतन के प्रभु सदा सहाई।।
दे बीरा रघुनाथ पठाये।
लंका जारि सिया सुधि लाये।।
लंका सो कोट समुद्र सी खाई।
जात पवनसुत बार न लाई।।
लंका जारि असुर संहारे।
सियारामजी के काज संवारे।।
लक्ष्मण मूर्च्छित पड़े सकारे।
लाए संजीवन प्राण उबारे।।
पैठी पाताल तोरि जम कारे।
अहिरावण की भुजा उखारे।।
बाएं भुजा असुर दल मारे।
दाहिने भुजा संत जन तारे।।
सुर नर मुनि आरती उतारें।
जय जय जय हनुमान उचारें।।
कंचन थार कपूर लौ छाई।
आरती करत अंजना माई।।
जो हनुमान जी की आरती गावै।
बसि बैकुंठ परमपद पावै।।
लंक विध्वंस कीन्ह रघुराई।
तुलसीदास प्रभु कीरति गाई।।

❑❑❑

कर्जनाशक व दाम्पत्य सुख कारक मंगलयन्त्र

जन्मपत्री के 1, 4, 7, 8, 12 भावों में मंगल हो तो कुण्डली मांगलिक बनती है। पुरुष की कुण्डली में इस स्थिति वाले मंगल को ''मौलिया मंगल'' एवं स्त्री की कुण्डली में होने से इसे ''चुनरी मंगल'' कहते हैं। यह देखने में आता है कि इस प्रकार की ग्रह स्थिति वाले लड़कियों की शादी प्राय: नहीं होती, होती भी है तो बहुत देरी से, तथा होने के बाद भी यह देखने में आता है कि उनका दाम्पत्य जीवन कलह पूर्ण होता है। जन्मपत्री हो चाहे न हो उपरोक्त स्थितियां जब भी जीवन में आती हैं उसका मुख्य कारण मंगल ग्रह का दूषित होना है। चाहे वह गोचर प्रभाव हो या जन्म स्थिति से।

विवाह योग्य कन्या या पुत्र के विवाह में बाधा आना, विवाहित दम्पति के जीवन में दीर्घकाल तक सन्तानाभाव रहना, गर्भपात होकर सन्तान हाथ न लगना, मनुष्य का ॠण लेते हुए कर्जग्रस्त होने के बाद, कर्ज चुकाने के आसार से निराश हो जाना, इन तीनों दु:खों को दूर करने के लिए ज्योतिषशास्त्र में मंगल व्रत का विधान है।

मंगल व्रत का नाम सुनते ही जनसाधारण एक समय भोजन कर, हनुमान जी का दर्शन करके छुट्टी मना लेते हैं फिर काम पूर्ण न होने पर धन्य देव को पकड़ते हैं। यह सब जानकारी के अभाव में होता है।

कर्मकाण्ड शास्त्र ज्योतिषशास्त्र से प्रदर्शित अनिष्ट का निवारण करवाता है। कर्मकाण्ड के अंग-उपासना, जप, पूजन, यज्ञादि हैं। अत: शास्त्रीय पद्धति से किया हुआ कार्य कभी भी निष्फल नहीं जाता। गीता में कहा है–

''तस्मात् शास्त्रं प्रमाणं ते'' ''ज्ञात्वा शास्त्र विधानोक्तम् कर्म कर्तुं मिहार्हसि।'' यत्न करने पर भाग्य भी फलता है, बनता है और संचित होता है। यत्न करने पर भी कार्य न हो तो ''यत्ने कृते यदि न सिद्धयति कोऽत्रदोष:'' कार्य के यत्न में कहीं त्रुटि

है ऐसा शास्त्रकार ने कहा है उसे निकालकर यत्न करे तो काम बन ही जाता है।

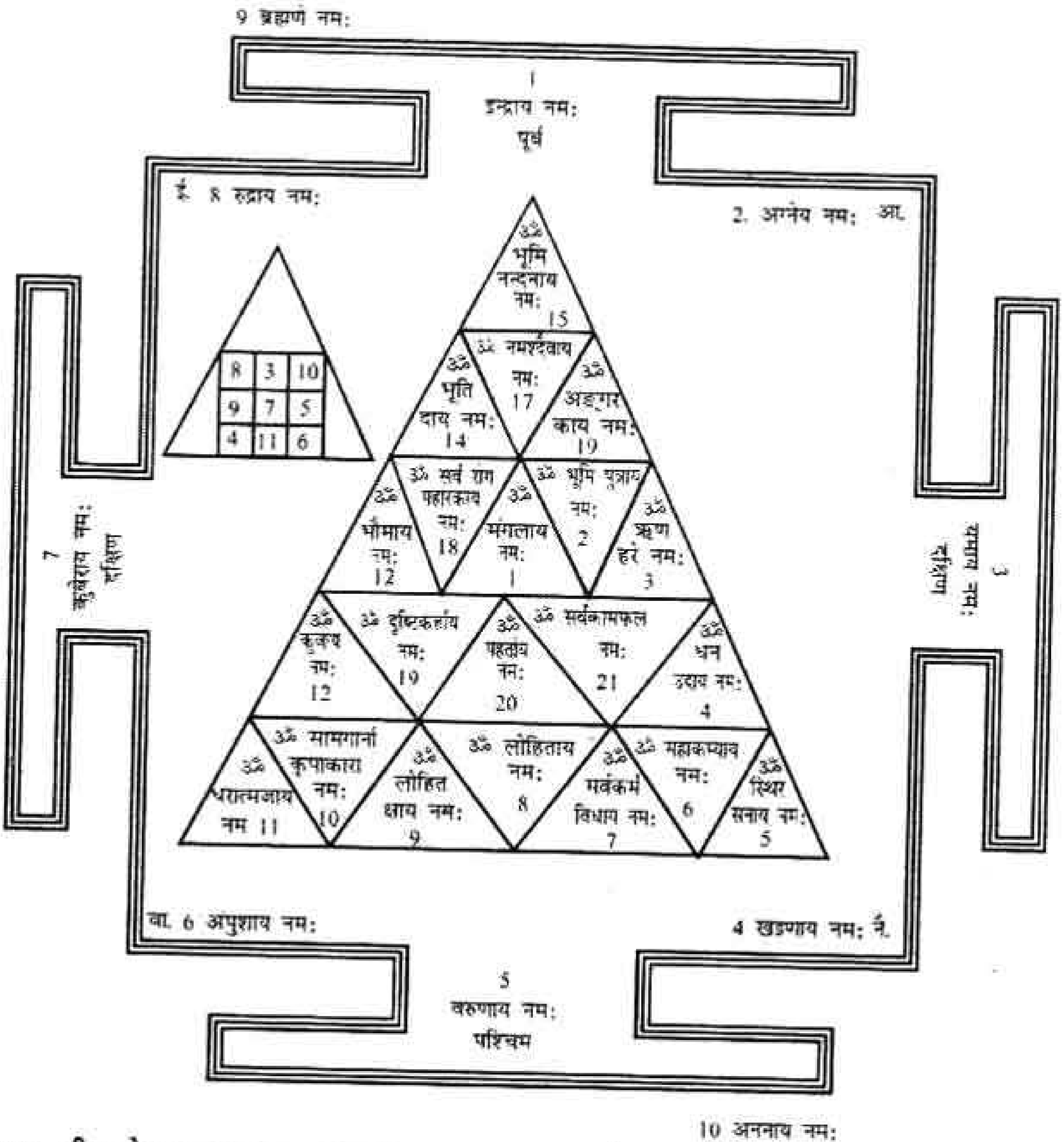
मंगल भूमि पुत्र और ग्रहों का सेनापति है। मंगल के व्रत में ''मंगल मन्त्र'' के पूजन का विधान है। प्राचीन समय में कई घरों में यह मंत्र पाया जाता रहा है, परन्तु आने वाली पीढ़ी अज्ञान वश उसके पूजन एवं विधान से अनभिज्ञ है।

हमारे कार्यालय में ऐसे अनेक केस आते हैं कि लड़कियां 30 से 40 वर्ष की आयु तक पहुंच जाती हैं परन्तु मांगलिक दोष के कारण विवाह तो दूर, सगाई तक नहीं बैठती। दूसरी ओर वर पक्ष से ऐसे-ऐसे उदाहरण आते हैं कि दो-दो, तीन-तीन विवाह कर लिए परन्तु 'मंगली दोष' के कारण पत्नी का सुख नहीं। मंगली दोष से व्यक्ति कर्जदार होता और कर्जदार भी ऐसा कि उसका कर्जा उसकी मृत्यु पर्यन्त उसके साथ रहता है। ऐसे जातकों की भी कमी नहीं जो आमूलचूल कर्ज से डूबे हुए हैं, उन्होंने लक्ष्मी साधना, श्रीमन्त्र एवं रुपया की प्राप्ति हेतु कई या व अनुष्टान भी किए परन्तु पैसा आता है वह चला जाता है, रुकने का नाम नहीं लेता। ऐसे जातकों को पहले 'मंगल मन्त्र' की साधना से अपने मांगलिक दोष की निवृत्ति करनी चाहिए। हमने प्रयोग किए और पाया कि 'मंगल मन्त्र' की विधिवत उपासना के पश्चात्, 21 मंगलवार पूर्ण होते-होते लोगों को अपने-अपने अभीष्ट कार्यों में बराबर सफलता मिली है। कई परिवारों में विवाह के पश्चात् सन्तान बाधा हेतु भी इसके प्रयोग किए। सभी को अनुकूल लाभ हुए। यदि किसी जातक का पंचमेश मंगल हो, या पंचम भाव में मंगल हो या मंगल की दृष्टि हो तो तेजस्वी पुत्र संतान की प्राप्ति हेतु 'मंगल मन्त्र' का सहारा लेना चाहिए।

सर्वजन हित मंगल व्रत और मंगल यन्त्र पूजन की सम्पूर्ण विधि संस्कृत के साथ-साथ, अत्यधिक सरल ढंग से हिन्दी में भी दी जा रही है ताकि साधारण पढ़े-लिखे लोग भी इसका लाभ ले सकें।

मंगल यन्त्र का चित्र यहां दिया हुआ है। ऐसा चित्र तांबे की प्लेट पर बनवा दे। तांबा मंगल की मुख्य धातु है। परन्तु ध्यान रहे तांबे की प्लेट पर मन्त्र खुदा हुआ नहीं होना चाहिए। उत्कीर्ण (खुदा) हुआ यन्त्र शास्त्रानुसार निकृष्ट होता है। आप चाहे तो भोजपत्र पर अष्टगन्धा से लिखकर भी इस यन्त्र को बना सकते हैं। अष्टगन्धा में शुद्ध कस्तूरी, केसर, गोरोचन, कंकुम, चन्दन का ही प्रयोग लेना चाहिए। यदि असुविधा हो तो यह दोनों प्रकार यन्त्र कार्यालय में सम्पर्क साध कर प्राप्त किए जा सकते हैं।

पूजन विधि—हर मंगलवार के दिन पूजन सूर्योदय बेला में सुन्दर रहता है, परन्तु दोपहर बारह बजे के पहले पूजन कर लेना चाहिये। स्नान करके धुले हुए वस्त्र पहनें, लाल वस्त्र हों तो उत्तम, नहीं तो लाल ऊन का आसन जरूरी है। पूजन सामग्री में



धूप, दीप के अलावा लाल फूल, लाल चावल कंकुम में किए हुए या लाल चंदन जरूरी है। गुड़ का भोग लगाएं, लाल फल रखें। मौली चढ़ाएं, फिर पंचामृत से तत्पश्चात् शुद्ध जल से धोकर, लाल वस्त्र से पोंछ ले उसके पश्चात् यंत्र में एक दो के क्रम से 21 बिंदिया लगाएं। ककुं गुलाल डालकर वस्त्र दीप नैवेद्य फल दक्षिणा धरें तब प्रार्थना करें। इस तरह 21 मंगलवार व्रत रखने से काम पूर्ण रूप से हो जाता है या प्रगति पर आ जाता है। एक कामना लेकर, श्रद्धा विश्वास से व्रत करें, एक कामना पूर्ण होने पर उद्यापन करके, तब कोई दूसरी इच्छा हो तों उसके हेतु व्रत पुनः शुरू करें। एक ही कामना से व्रत आरंभ करने के बाद उसमें दूसरी इच्छाएं नहीं जोड़नी चाहिए। यंत्र प्राण प्रतिष्ठा युक्त लें या घर पर बनवायें तो विद्वान् ब्राह्मण से प्राण-प्रतिष्ठा करवा लें।

संकल्प–दायें हाथ में जल लेकर संकल्प करें। "**ॐ अद्य पूर्वोच्चरितस्य गुण विशेषण विशिष्टायां शुभ पुण्य तिथौ मम (अमुक) स्थाने स्थित भौम जनित दोष**

परिहारार्थ तथाच आजन्म पर्यन्तं स्त्रीसुखं गृहस्थसुखं प्राप्त्यर्थं अनेन भौमजपाख्येनकर्मणा भगवान् भौम प्रीयताम्।''

हिन्दी भाषा में इस प्रकार करें–मैं (अपना नाम) आज (अमुक) वर्ष के (अमुक) मास (अमुक) तिथि (अमुक) बार को श्री मंगल देवता को प्रसन्न करने हेतु तथा मेरी कुण्डली में अमुक स्थान में स्थित मंगल दोष के निराकरण हेतु, भक्ति के साथ (अमुक कामना) की पूर्ति हेतु 'मंगलयंत्र' का पूजन और व्रत करता हूं (कहकर जल छोड़ दें) फिर न्यास, ध्यान के साथ यन्त्र में यन्त्रस्थ देवता का आह्वान कर, यन्त्र की पूजा करें। उसके बाद कवच व स्तोत्र का पाठ करना होता है।

न्यास–

ॐ ह्रां अंगुष्ठाभ्यां नमः। ॐ ह्रीं तर्जनीभ्यांनमः
ॐ ह्रू मध्यमाभ्यांनमः। ॐ ह्रें अनामिकाभ्यांनमः
ॐ ह्रौं कनिष्ठिकाभ्यांनमः। ॐ ह्रः करतलपृष्ठाभ्यांनमः।
ॐ ह्रां हृदयायनमः। ॐ ह्रीं शिरसे स्वाहा।
ॐ ह्रूं शिखाये नमः। ॐ ह्रीं कवचाय हुम्॥
ॐ ह्रौं नेत्रत्रयाय वौषट्॥ ॐ ह्रः अस्त्राय फट्॥
ॐ खंखः इति दिग्बन्धः॥

न्यास–सबसे पहले न्यास करें यानि मूल में जो न्यास के मंत्र लिखे हैं उन मंत्रों को बोलते जाएं और उन-उन अंगों को स्पर्श करते जाएं जो कि, मूल-मंत्रों में ही लिखें हैं। हाथ की पांचों अंगुलियों का नाम संस्कृत में क्रम से 1 अंगुष्ठ (अंगूठा) 2 तर्जनी (अंगूठे के पास की उंगली) 3 मध्यमा (बचली) 4 अनामिका (चौथी) कनिष्टिका, सबसे छोटी अंगुली कही जाती है। करतल हथेली तथा पृष्ठ, हाथ की पीठ कही जाती है। हृदय-छाती, शिर-खोपड़ी, शिखा-चोटी, कवच-भुजाएं, नेत्रय तीन नेत्र कहे जाते हैं। इन संस्कृत के शब्दों वाले पदों से इनका स्पर्श होता है। ये दोनों करन्यास और अंगन्यास कहलाते हैं। ''अस्त्राय फट्'' कहर अपने दोनों ओर हाथ घुमा ताली बजाने तथा ओम् खंखः कहकर चुटकी बजाने से दिग्बन्ध हो जाता है।

ध्यानम्–

एह्ये हि भगवन्भौम अङ्गारक महाप्रभो॥
त्वयि सर्व समायातं त्रैलोक्यं सचराचरम्॥
भौममावाहयिष्यामि तेजोमूर्ति दुरासदम्॥
रूद्ररूपमनिर्देश्चवक्त्रचं रुधिरप्रभम्॥

विनियोग—अग्निर्मूर्धाङ्गिरसो विरूपोङ्गारको गायत्री।
मङ्गलावाहने विनियोग:।।

ध्यानम्—रक्तमाला पहने, शक्ति शूल और गदा हाथ में लिए हुए चतुर्भुजी तथा मेंढ़े की सवारी रखने वाले धरानन्दन वर दिया करते हैं, इस प्रकार धयान करें। हे अंगारक महाप्रभो भौम! पधारिये, आपके आने से चराचर समेत तीनों लोक आ गए; लोहू जैसा लाल-लाल मुख, साक्षात रुद्र रुपी तेजोमूर्ति दुरासद मंगल का आह्वान करता हूं।

मंगल आह्वान—ॐ अग्निर्मूर्धा:।। ॐ नमो भगवते धनसमृद्धिदाय मंङ्गलाय नम:।। मंगलमावाह्यामि इत्यावाह्य अग्निर्मूर्धेति मन्त्रेण मंगलगायत्र्या वा आसनादि पुष्पान्तं पूजयित्वा यन्त्रस्थैकविंशतिकोष्ठेष्वङ्गन्येकविंशतिनामभि: पूजयेत्।।

मंगल आह्वान—''अग्निर्मूर्धा'' इस मंत्र के आंगिरस विरूप ऋषि है; मंगल देवता है, गायत्री छन्द है, मंगल के आह्वान में विनियोग होता है। ''ओम् अग्निमूर्धा दिव: ककुत्पति: पृथिव्यां अयम्। अपांघू रेतांघुसि जिन्वति।'' यह पृथ्वी का पुत्र भौम, दिवका मूर्धा तथा सबका अग्रणी है। सबका पालक तथा सबसे श्रेष्ठ है, यही पानी के सारों को पुष्ट करता या व्यापकों को बल देता है। इस मंत्र से अथवा धन समृद्धि देने वाले भगवान् मंगल के लिए नमस्कार करता हूं! मंगल का आह्वान करता हूं, इस मंत्र से आह्वान हुआ।

अंग पूजा—1. ॐ मंगलाय नम: पादौ पूजयामि 2. भूमि-पुत्राय नम: गुल्फौ पूजयामि। 3. ऋणहर्त्रे नम: जंघौ पूजयामि 4. धानप्रदाय नम: जानुनी पूजयामि। 5. स्थिरासनाय नम: उरुं ॐ पूजयामि। 6. महाकायाय नम: कटीं पूजयामि। 7. सर्वकर्माविरोधकाय नम: नाभिं पू.। 8. लोहिताय उदरं पू.। 9. लोहिताक्षाय हृदयं पूजयामि। 10. सामगानांकृपाकराय करौ पू.। 11. धारात्मजाय नम: बाहु पूजयामि। 12. कुजाय स्कन्धौ पू.। 13. भौमाय नम: कण्ठं पूजयामि 14. भूतिदाय हनुं पू.। 15. भूमिनंदनाय मुखं पूजयामि। 16. अङ्गारकाय नासिके पू.। 17. यमाय नम: कर्णो पूजयामि 18. सर्वरोगापहारकाय नम: चक्षुषी पू.। 19. वृष्टिकर्त्रे नम: ललाटं पूजयामि। 20. वृष्टिहत्रे नम: मूर्धानं पूजयामि। 21. सर्वकामफलप्रदाय नम: शिखाम् पूजयामि।।

ततो धूपादिपुष्पांजल्यन्तं कृत्वा एतैरेव नामभिरेकविंशत्यर्ध्यन्दिद्यात्।।

अंग पूजा—''अग्निमूर्धा'' इस मन्त्र से तथा ''ॐ अंगारकाय विद्महे शक्ति हस्ताय धीमहि तननौ भौम: प्रचोदयात्'' इस मंगल गायत्री से आसन से लेकर पुष्प समर्पण तक की पूजा करें। यन्त्र को गंगा जल में धोएं फिर यन्त्र के जिस कोष्ठ में जो नाम मन्त्र लिखे जाते हैं, उन्हीं इक्कीस नाम मंत्रों में उन-इन कोष्ठों में क्रमश: अंगों का पूजन करते हुए बिन्दिया लगाएं। बिन्दी लगाते समय सर्वत्र ॐ शब्द एवं

उन-उन कोष्टकों के नाम मन्त्रों का उच्चारण करें। अंगपूजा- मंगल के लिए नमस्कार चरणों को पूजता हूं, भूमिपुत्र के लिए गुल्फों को, ऋण हर्ता के लिए जंघाओं को, धन देने वाले के लिए जानुओं को, स्थिरासन के लिए उरूओं को, महाकाय के लिए कटि को, सब कर्मों के अवरोध के लिए नाभि को, लोहित के उदर को, लोहिताक्ष के लिए हृदय को, साम के जानने वालों पर कृपा करने वालों के लिए हाथों को, धारात्मज के लिए बाहुओं को, कुज के लिए स्कन्धों को, भौम के लिए कंठ को, भूति के देने वाले के लिए हनु को, भूमिनन्दन के लिए मुख को, अंगारक के लिए नासिकाओं को, यम के लिए कर्णों को, सब रोगों के नष्ट करने वाले के लिए नेत्रों को, दृष्टि के करने वाले के लिए ललाट को, वृष्टि के हर्ता के लिए मूर्धा को, सब कामों के फल देने वाले के लिए नमस्कार शिखा को पूजता हूं। अंग पूजा के पश्चात दश दिशाओं में भी बिन्दिया लगाएं, पुष्प लगाएं।

मंगल कवच–

शिखायां मंगलः पातु भूमिपुत्रश्च मूर्धनि॥
ललाटे ऋणहर्ता व चक्षुषीश्च धनप्रदः॥
स्थिरासनः श्रोत्रयोश्च महाकायश्च नासिके॥
आस्यदन्तोष्ट जिह्वासु सर्वकर्माविरोधकः॥
हनौ मे लोहितः पातु लोहिताक्षश्च कण्ठके।
स्कन्धयोरूभयो रक्षेत्सामगानां कृपाकरः॥
धरात्मजो भुजौ पातु कुजो रक्षेत्करद्वयम्॥
भौमो मे हृदयं पातु भूतिदस्तु तथोदरे॥
भूमिनन्दनो नाभौ तु गुह्ये त्वङ्गारकोऽवतु॥
उरू मम यमो रखेज्जापन रोगापहारकः॥
जंघयोर्वृष्टिकर्ता च अपहर्ता च गुल्फयोः॥
पादांगुष्टा च गुल्फौ च सर्वकामफलप्रदः॥
शक्तिर्मे पूर्वतो रक्षेच्छूलं रक्षेच्च दक्षिणे॥
पश्चिमे च धनुः पातु उत्तरे च शरस्तथा॥
उर्ध्वं पिण्डाननः पातु अधस्तात्पृथिवी मम॥
एवं न्यस्तशरीरोऽसौ चिन्तयेद्भूमिनन्दनम्॥

मंगल कवच– शिखा की मंगल रक्षा करें। भूमिपुत्र मूर्धा की, ऋणहर्ता ललाट की, धनप्रद नेत्रों की, स्थिरासन श्रोत्रों की, नासिकाओं की महाकाय, सर्व कर्माविरोधक मुख, दन्त, ओष्ट और जिह्वा की, लोहित हनु की, लोहिताक्ष कंठ की, सामगों पर

कृपा करने वाला दोनों स्कन्धों की, धारात्मज भुजाओं की, कुज दोनों हाथों की, भौम हृदय की, भूतिद उदर की, भूमिनन्दन नाथ की, अंगारक गुह्य की, यम उरूओं की, रोगापहारक जानुओं की, वृष्टिकर्ता जांघों की, अपहर्ता गुल्फों की सर्वकाम फलप्रद, पाद अंगुष्ठ और गुल्फों की रक्षा करें। शक्ति मेरी पूर्व से रक्षा करें। दक्षिण में शूल रक्षा करें। पश्चिम में धनुष रक्षा करे। उत्तर में शर रक्षा करे, ऊपर पिण्डानन तथा नीचे पृथ्वी रक्षा करे, इस प्रकार शरीर में न्यास या रक्षा के लिए इन रूपों को यहां बिठा कर मंगल का ध्यान करे। (ये न्यास कहे हुए अंगों पर रक्षा के लिए किए जाते हैं इस कारण हमने सीधा रक्षा करें यह अर्थ कर दिया है।) इस प्रकार कवच का पाठ करें।

मंगल गायत्री–

ॐ अंङ्गारकाय विद्महे शक्ति हस्तायधीमहि।
तन्नो भौमः प्रचोदयात्॥

मंगल गायत्री–अंगार के समान रक्त वर्णीय, दोनों हाथों में शक्ति धारण करने वाले तेजस्वरूप तेजस्वी मंगल ग्रह को नमस्कार है। अथवा यहां 'ॐ ह्रीं भौमाय नमः' की एक माला फेंरे। इसके बाद मंगल स्तोत्र का पाठ करें।

मंगल स्तोत्र–

मंगलो भूर्मिपुत्रश्च ऋणहर्ता धनप्रदः।
स्थिरासनो महाकायः सर्वकर्माविरोधाकः॥
लोहितो लोहिताक्षश्च सामगानां कृपाकरः।
धारात्मजः कुजो भौमो भूतिदो भूमिनन्दनः॥
अंङ्गारको यमश्चैव सर्वरोगापहारकः।
वृष्टिकर्ताऽपहर्ता च सर्वकामफलप्रदः॥
एतानि कुजनामानि नित्यं यः प्रयतः पठेत्।
ऋणं न जायते तस्य सन्तानं वर्धते सदा॥
एकविंशतिनामानि पठित्वा तु दिनान्तके।
रूपवान् धनवानश्चैव जायते नात्र संशयः॥
एककालं द्विकालं वा यः पठेत्सुसमाहितः।
एवं कृते न सन्देहो ऋणं हित्वा सुखी भवेत्॥

मंगल स्तोत्र–मंगल, भूमिपुत्र, ऋणहर्ता, धनप्रद, स्थिरासन, महाकाय, सर्वकर्मावरोधक, लोहित, लोहितताक्ष, सामगानां कृपाकर, धरात्मज, कुज, भौम, भूतिद, भूमिनन्दन,

अंगारक, यम, सर्वरोगापहारक, वृष्टिकर्ता, वृष्टिअपहर्ता, सर्वकामफलप्रद, ये मंगल के 21 नाम हैं। जो रोज सावधानी के साथ इन्हें पढ़ता है, उस पर कष्ट नहीं होता, सदा सन्तान की वृद्धि होती है। सायं-काल के समय इन इक्कीस नामों को पढ़कर, रुपवान और धनवान हो जाता है। इसमें सन्देह नहीं है। एक बार या दो बार एकाग्र चित्त हो पढ़े, इस प्रकार नित्य करने पर ऋण को चुका, व्यक्ति सुखी हो जाता है। रुचि के अनुसार काव्यात्मक इस स्तोत्र को भी पढ़ सकते हैं।

काव्यात्मक मंगल स्तोत्र–

भारद्वाज कुल उज्जवल कर, उज्जैन में वास लिया तुमने, हे चारभुजाधारी, मंगल! हे शूलशक्ति घर भौम कुज। करते स्तुति देव सदा मिलकर, दानव गंधर्व सदा भजते, करता कल्याण सदा उनका, जो पूर्ण मनोरथ से भजते।। धरणी गर्भ से जन्म लिया, बिजली सी चमक उससे पाई है! सेनापति देवों के, विजय देव हे! सुखदाई है रक्त वर्ण, है लाल नैत्र, मीढ़ा है वाहन मनभाया, हे मंगल! शक्ति हाथ तेरे, कर मम मंगल सुखदाया।। मैं नमन करूं अब बार-बार, तुमने भक्तों को दिया तार, तुम नष्ट करो ऋण सब मेरा, कर दो अपनी करूणा अपार मम रोग हरो, भव, ताप हरो, अपमृत्यु हरो मेरी साईं, हरो दरिद्रता इस जन की, वरदो! सन्तान, बड़े भाई।। धान दो, सब पाप मिटे मेरे, करदो मम सन्तान सगाई, हे ऋणहर्ता है, नमस्कार, सुख, सौभाग्य, मुझे दे दो। दो पुत्र मुझे, जिससे सुख हो, हे देव-देव भक्ति तब दो, हे धारणी नन्द! हे मंगल, हे बाल कुमार विनय सुन ले तेरी पूजा से जन-जन-मन, पाते मंगल, मगल कर दो।

नमस्कार–

धरणीगर्भसम्भूतं विद्युत्कान्तिसमप्रभम्।
कुमारं शक्तिहस्तं च मंगलं प्रणमाम्यहम्।।

नमस्कार–भूमि के गर्भ से उत्पन्न होने वाले की कान्ति के समान प्रभा वाले, शक्ति हाथ में लिए कुमार मंगल को बारम्बार प्रणाम करता हूं। इस प्रकार कहकर हाथ जोड़कर नमस्कार करें।

तीन रेखाओं का प्रयोग–

(खदिरांगारेण रेखात्रयं कृत्वा) –

अंङ्गारक महीपुत्र भगवन्भक्तवत्सल।
त्वां नमस्यामि मेऽशेषं ऋणमाशु विनाशय।।1।।
ऋणरोगादिदारिद्रयपापक्षुधापमृत्यवः
भवक्लेशमनस्तापः नश्यन्तु मम सर्वदा।।2।।

ऋणदु:ख विनाशाय पुत्रसन्तानहेतवे।
मार्जयाम्यसिता रेखास्तिस्त्रे जन्मसमुद्भवा:।।3।।
दु:खदौर्भाग्यनाशाय सुखन्तानहेत्तवे।।
कृतं रेखात्रयं वामपादेन मार्जयाम्यहम्।।4।।

तीन रेखाओं का प्रयोग—इसके बाद आरती उतारकर खैर की लकड़ी के कोयले से अथवा खेजड़ी कोयले से तीन रेखाएं जमीन पर खींचे, फिर उन रेखाओं को बाएं पैर से उपरोक्त मंत्र या हिन्दी के पद को बोलते हुए मिटाएं। खैर के अंगार से तीन रेखा करके कहें—हे भगवन् अंगारक! हे महीपुत्र! हे भक्तवत्सल! मैं आपको नमस्कार करता हूं, मेरा समस्त ऋण नष्ट करिए, ऋण रोगादि, दारिद्र, पाप, क्षुद्रता, अपमृत्यु, भव के क्लेश, ये मरे मन के ताप सदा नष्ट हों! ऋण के दु:ख को नष्ट करने तथा पुत्र और सन्तान के लिए, तीन जन्म से होने वाली तीनों ग्रसित रेखाओं का मार्जन करता हूं। जिससे दु:ख और दुर्भाग्य का नाश तथा सुख और सन्तान की प्राप्ति हो, दुर्भाग्य सूचक तीनों रेखाओं का बाएं पैर से मार्जन करता हूं, इन मंत्रों से रेखाओं का मार्जन करें।

रेखाओं को मिटाते वक्त बोलने का पद—

हे अंगारक ! हे महीपुत्र, भगवान् भक्तों के प्यारे,
मैं नमस्कार करता तुमको, जो नमें उन्हें, तुमने तारे।
तीन जन्म की ये रेखाएं, मेरी भाग्य बाधक प्यारे,
काली रेखा ऋण-रोगों की, दुर्भाग्य मिटाता हूं प्यारे।
सुख सन्तान बढ़े मेरे, या दे दो सुन्दर पति/पत्नी तुम प्यारे,
कन्या मेरी अब बढ़ी हुई, उसको पति दो तुम प्यारे।।

मंगल प्रार्थना—

ऋणहत्रे नमस्तेऽस्तु दु:खदारिद्र्यनाशक:।
सुखसौभाग्यधनदो भव मे धरणीसुत:।।
ग्रहराज नमस्तेऽस्तु सर्वकल्याणकारक:।
प्रसादात्तव देवेश सदा कल्याणभाजन:।।
देवदानवगन्धर्वयक्षराक्षसपन्नगा:।
प्राप्नुवन्ति शिवं सर्वे सदा पूर्णमनोरथा:।।
प्रसादं कुरु मे भौम सौभाग्यं मंगलप्रद:।।

बाल: कुमारको वसतु स भौम: प्रार्थितो मया॥
उज्जयिन्यां समुत्पन्नो, नमो भौम चतुर्भुज।
भरद्वाजकुले जातः शूलशक्तिगदाधर:॥

मंगल प्रार्थना–हे दु:ख और दरिद्रता के नाश करने वाले तुझ ऋणनाशक के लिए नमस्कार है। हे धरणी के पुत्र! मुझे सुख और सौभाग्य का देने वाला बन जा, हे सबके कल्याण के करने वाले! तुझ ग्रहराज के लिए नमस्कार है। हे देवेश! आपकी कृपा से सदा कल्याण हो, क्योंकि आप सदा ही कल्याण के भाजन हैं। देव दानव, गन्धर्व, दक्ष, राक्षस, पन्नग ये सब सदा ही पूर्ण मनोरथ होकर कल्याण को पाते हैं। हे भौम! मुझ पर कृपा करिए, हे मंगल के देने वाले! सौभाग्य दें। जो चतुर्भुज बालकुमार उज्जयनी में उत्पन्न हुआ है उसी से प्रार्थना कर रहा हूं। उसी के लिए मेरी ये नमस्कारें भी हैं। जो भरद्वाज के कुल में पैदा हुआ है। शक्ति शूल और गदा धारण करने वाला है। यह प्रार्थना करके फिर स्त्रोत्र पढ़ना चाहिये।

वायनदानम्–

तिलगुड मिश्रितेनैकविंशतिलड्डूकान्
गोधूमभवान्फल दक्षिणासहितान्वेदविदे दद्यात्॥

वायनदानम्–तिल गुड़ मिले हुए गेहूं के इक्कीस लड्डू फल और दक्षिणा के साथ वेद के जानने वाले ब्राह्मण को दें, सब मंगलों के देने वाले तुझ मंगल के लिए नमस्कार है। इस से संतुष्ट होकर मेरे मनोरथों को पूरा करिए, ''देवस्य त्व.'' इस मन्त्र को बोलकर कहे कि, इस दान से मंगल देव प्रसन्न हो; पीछे दे दें। यह वायने के दान का मन्त्र है। यदि सन्तान की चाहना हो तो 21 लाल रंग की गोलियां छोटे-छोटे बच्चों को बांटें। यदि ऋण उतारना हो तो गाय को गुड़ खिलाएं । यदि रोग मिटाना हो तो ब्राह्मण व साधु को तृप्त भोजन कराएं, उसके बाद भोग लगाकर स्वयं भोजन करें। कार्य की सिद्धि हो जाने पर उद्यापन में 21 लाल रंग की वस्तु, लाल पुष्प या लड्डू सत्पुरुषों में बांट दें। दशांश हवन करें। हवन करने पर ब्राह्मण भोजन अवश्य कराएं।

दानमन्त्र–

मंगलाय नमस्तुभ्यं सर्वमंगलदायक॥
बायनेन च संतुष्ट: कुरु मे त्वं मनोरथान्॥
देवस्यत्वेति मन्त्रेण मंङ्गल: प्रीयतामिति दद्यात्॥
(आवाहनं न जानामि. इति पूजनम्)

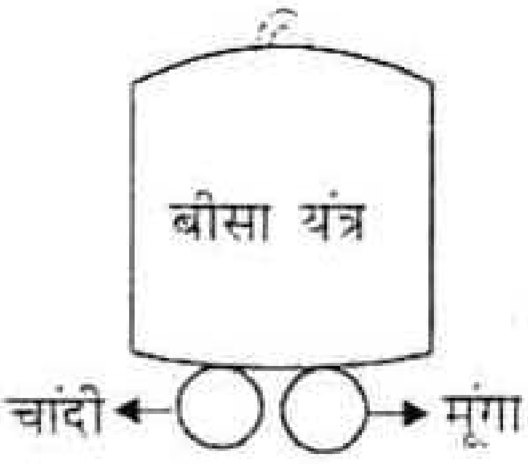
फल स्तुति–

> तस्य वै ग्रहपीड़ा च न भवेत्तु कदाचन॥
> भूतवेतालशाकिन्यौ न भवन्ति च हिंसका:॥ 1॥
> दारद्रियं नश्यते तस्य पुत्रपौत्राश्च वर्धते॥
> एवमुक्त्वा च तत्रैव मंगलोऽपि दिवं गत:॥ 2॥
> एवं व्रतं समाख्यातं सर्वसौख्यप्रदायकम्॥
> इदं व्रतं करिष्यन्ति तेषां पीडा न जायते॥ 3॥
> स्त्रीभिर्वतं प्रकर्त्तव्यं पुरुषैश्च विशेषत:॥
> तेषां मुक्तिर्भवत्येव स्वर्गवासो न संशय:॥ 4॥

फल स्तुति–उसे कभी ग्रह पीड़ा नहीं होगी। उसे भूत प्रेत बेताल की बाधा और दारिद्र्य नष्ट हो जाता है और बेटा नातियों के साथ वृद्धि को प्राप्त होता है। यह कह कर मंगल देव अन्तरिक्ष में चले गए। यह सब सुखों का देने वाला व्रत मैंने कह दिया है। जो इस व्रत को करेंगे उन्हें कभी भी ऋण की पीड़ा नहीं होगी। इस व्रत को स्त्रियों को करना चाहिए। विशेष करके पुरुष भी इसी व्रत को करें। उनकी मुक्ति और स्वर्गवास होगा इसमें सन्देह नहीं है। यह प्रयोग हर प्रकार से सुख सम्पत्ति व प्रसन्नता को देने वाला कहा गया है।

दीर्घायु, रोग निवारण एवं उत्तम स्वास्थ्य हेतु–

1. चंद्रमा का जीवन रत्न मोती सवा पांच रत्ती और जीवन शक्तिदायक मंगल का रत्न 'मूंगा' सवा पांच रत्ती संयुक्त रूप से लॉकेट बनाकर गले या अंगूठी में धारण करें। यह लॉकेट '**महालक्ष्मी योग**' का भी काम करने के कारण दोहरे चमत्कार वाला साबित होगा।



बीसा यंत्र में ये दोनों रत्न 'लक्ष्मी योग' को प्रबल करते हैं। बीसा यंत्र में कोई भी रत्न प्रतिकूल कार्य नहीं करता और जातक का वांछित धन लाभ देता है। जिन लोगों के हाथ में पैसा नहीं टिकता एवं जिन लोगों के धन स्थान में राहु बैठा हो तो, धन के घड़े में छेद हो, उन लोगों को यह यंत्र अवश्य धारण करना चाहिए। यह हमारा अनुभूत प्रयोग है कि कुण्डली जन्म दुर्बल योग, दरिद्रयोग इस यंत्र के धारण करने से नष्ट हो जाते

है। संकट योग, **धनहीन योग** एवं केमद्रुम योग में जन्म लेने वाले जातक के लिए यह यंत्र अमृततुल्य उपादेय औषधि है।

2. रुद्राक्ष की माला पर महामृत्युंजय मंत्र का नित्य जाप करें।
3. बालारिष्ट योग व अकाल मृत्यु से बचने हेतु बच्चे के गले में मोतीयुक्त चांदी का चंद्रमा अभिमंत्रित करके पहनाएं।
4. अनिष्ट चंद्रमा के कारण बालारिष्ट योग की शान्ति हेतु चंद्र कवच पढ़ें, चंद्रमा के वैदिक मंत्रों का 11000 या 44000 हजार जप करें, दशांश हवन कर, बच्चे के गले में रक्षा सूत्र या चंद्रमा पहनाएं।
5. रात को चांदी के बर्तन में सिरहाने पर दूध रखना तथा प्रातःकाल बिना कुछ बोले कीकर, पीपल या बिल्व वृक्ष में दूध ''ॐ नमः शिवाय'' मंत्र का जाप करते हुए डालें तो तत्काल कष्ट दूर होगा।
6. शिवजी की नित्य उपासना करें एवं सोमवार का व्रत रखें।
7. सोम प्रदोष का व्रत रखने से शिव-पार्वती शीघ्र प्रसन्न होते हैं।
8. प्रत्येक जन्मदिन या पुष्य नक्षत्र पर दूध व गंगाजल से रुद्राभिषेक कराएं एवं वैदिक मंत्रों के साथ अभिषेक लें।
9. विशेष अवस्था में रोग निवारण हेतु मंत्रपूत औषधियों के साथ पुष्य नक्षत्र स्नान करें।
10. माता (सास), मासी, मामी एवं घर में बुजुर्ग औरतों का आशीर्वाद लें।
11. मरणासन्न व्यक्ति के लिए जहां दवाईयों ने काम करना कर दिया हो। बीमारी गम्भीर व लाईलाज हो वहां त्रिविध तापों के नाश हेतु महामृत्युंजय का सवालक्ष जप, दशांश हवन एवं कवच पाठ अमोघ फल को देने वाला है।
12. चंद्रमा की निर्बलता में कैल्शियम की विशेष कमी पाई जाती है। अतः केला, इत्यादि सेवन बच्चों के लिए हितकर रहता है।
13. आषाढ़ कृष्ण (योगिनी) एकादशी का व्रत नियमित करना चाहिए। इससे शरीर स्वस्थ हो जाता है।

योगिनी एकादशी–यह एकादशी आषाढ़ कृष्ण पक्ष में मनाई जाती है। इस दिन व्रत रखकर भगवान नारायण की मूर्ति को स्नान कराके भोग लगाते हुए धूप, दीप से आरती उतारनी चाहिए। गरीब ब्राह्मणों को दान देना परम श्रेयस्कर होता है। इस एकादशी के प्रभाव से पीपल वृक्ष के काटने से उत्पन्न पाप नष्ट हो जाते हैं और अन्त में स्वर्ग लोक की प्राप्ति होती है।

कथा—प्राचीन समय की बात है अलकापुरी में धनव कुबेर के यहां एक हेम नामक माली रहता था। वह भगवान शंकर के पूजनार्थ नित्य प्रति मानसरोवर से फूल लाया करता था। एक दिन की बात है वह कामोन्मत हो अपनी स्त्री के साथ स्वच्छन्द विहार करने के कारण फूल लाने में प्रमाद कर बैठा तथा कुबेर के दरबार में विलम्ब से पहुंचा। क्रोधी कुबेर के शाप से वह कोढ़ी हो गया। कोढ़ी रूप में जब वह मार्कण्डेय ऋषि के पास पहुंचा तब उन्होंने योगिनी एकादशी व्रत उन्हें रखने का आज्ञा दी। व्रत के प्रभाव से उसका कोढ़ समाप्त हो गया तथा वह दिव्य शरीर वाला होकर स्वर्गलोक को गया।

14. इसी प्रकार निर्जला एकादशी ज्येष्ठ शुक्ल को करनी चाहिए इससे दीर्घायु की प्राप्ति होती है।

निर्जला एकादशी—ज्येष्ठ शुक्ल पक्षीय एकादशी को निर्जला एकादशी या 'भीमसेनी एकादशी' कहते हैं, क्योंकि वेदव्यास के आज्ञानुसार भीमसेन ने इसे धारण किया था। शास्त्रों के अनुसार इस एकादशी के व्रत से दीर्घायु तथा मोक्ष मिलता है, इस दिन जल नहीं पीना चाहिए। इस एकादशी का व्रत रखने से वर्ष की पूरी (24) एकादशियों का फल मिलता है। यह व्रत करने के पश्चात् द्वादशी को ब्रह्म-बेला में उठकर स्नान, दान तथा ब्राह्मण को भोजन कराना चाहिए। इस दिन 'ऊं नमो भगवते वासुदेवाय' मंत्र का जाप करके गोदान, वस्त्रदान, छत्र, फल आदि दान करना वांछनीय है।

कथा—एक समय की बात है भीमसेन ने व्यास जी से कहा कि हे भगवान्! युधिष्ठर, अर्जुन नकुल, सहदेव, कुन्ती तथा द्रौपदी सभी एकादशी के दिन उपवास करते हैं। तथा मुझसे भी यह कार्य करने को कहते हैं, मगर मैं कहता हूं कि मैं भूख बर्दाश्त नहीं कर सकता। मैं दान देकर तथा वासुदेव भगवान की अर्चना करके उन्हें प्रसन्न कर लूंगा। बिना व्रत किए जिस तरह से हो सके मुझे एकादशी व्रत का फल बताइए। मैं बिना काया क्लेश के ही फल चाहता हूं।

इस पर वेदव्यास बोले—हे वृकोदर! यदि तुम्हें स्वर्गलोक प्रिय है तथा नरक जाने से सुरक्षित रहना चाहते हो तो दोनों एकादशियों का व्रत रखना होगा।

भीमसेन बोले—हे देव! एक समय का भोजन करने से तो मेरा काम न चल सकेगा। मेरे उदर में वृक नाम अग्नि निरन्तर प्रज्वलित रहती है। पर्याप्त भोजन

करने पर भी मेरी क्षुधा शांत नहीं होती है। हे ऋषिवर! आप कृपा करके मुझ ऐसा व्रत बताइए कि जिसके करने मात्र से मेरा कल्याण हो सके।

व्यासजी बोले–हे भद्र! ज्येष्ट की एकादशी का निर्जल व्रत कीजिए। तुम जीवन पर्यन्त इस व्रत का पालन करो। इससे तुम्हारे पूर्वकृत समस्त एकादशियों के अन्न खाने का पाप समूल विनष्ट हो जाएगा। व्यासाज्ञानुसार भीमसेन में बड़े साहस के साथ निर्जला एकादशी का यह व्रत किया जिसके परिणामस्वरूप वे प्रात: होते-होते संज्ञाहीन हो गये। तब पांडवों ने गंगाजल तुलसी चरणामृत प्रसाद देकर उसकी मूर्च्छा दूर की। तभी से भीमसेन पाप मुक्त हो गए।

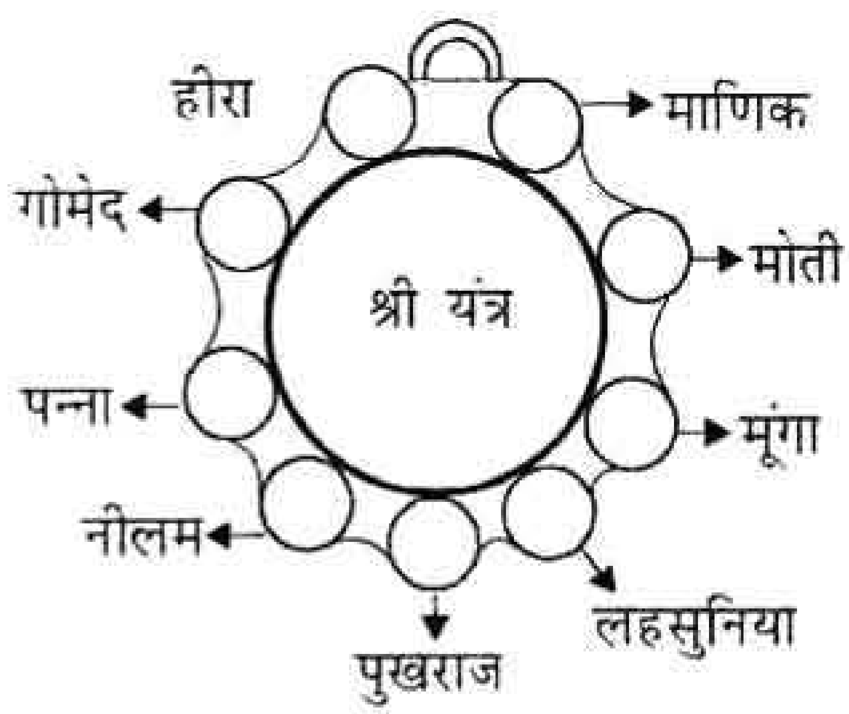
15. आयुष्य, आरोग्य की वृद्धि हेतु 'रविप्रदोष' का व्रत करना चाहिए। परन्तु रोगों से मुक्ति हेतु उत्तम स्वास्थ्य के लिए 'मंगल प्रदोष' का व्रत करना चाहिए।

ऋण मुक्ति, धन प्राप्ति, स्थिर लक्ष्मी की प्राप्ति हेतु–

1. स्थाई लक्ष्मी हेतु माणिक्य सवा पांच रत्ती, मोती सवा पांच रत्ती, और मूंगा सवा पांच रत्ती का लॉकेट बनाकर धारण करें।
2. प्रति पूर्णिमा को श्रीसूक्त का हवन, गोघृत, कर्पूर एवं खोपरे, मिष्ठान या खीर से करें।
3. चंद्रमा यदि नीच का पंचम भाव में हो तो चंद्रमा की चीजों का दान न लें।
4. चंद्रमा यदि उच्च का लाभ स्थान में हो तो चंद्रमा की चीजों का दान न दें।
5. छत पर पानी की टंकी हो तो उसकी निममित सफाई 3–4 महीनों में कराते रहें। घर में कहीं भी पानी के पड़ने से चंद्रमा रुष्ट रहता है। जिसका चंद्रमा दूषित हो उनको अपने घर के आगे कीचड़ या गन्दे पानी का जमाव नहीं होने देना चाहिए।
6. घर में खड़ी लक्ष्मी की तस्वीर का पूजन न करें।
7. लक्ष्मीजी की तस्वीर या श्रीयंत्र कागज, एल्युमीनियम या कांच के न हों।
8. श्रीयंत्र कभी भी तांबे या पीतल का न हो।
9. गृहलक्ष्मी से नित्य बहस या कलह करने से घर का ऐश्वर्य एवं लक्ष्मी दोनों ही नष्ट हो जाते हैं।
10. भूलकर भी प्रमादवश माता का मातृतुल्य औरतों का अपमान न करें, इससे चंद्रमा शीघ्र अप्रसन्न हो जाता है।

11. गन्दे एवं पसीने वाले वस्त्रों के धारण से भी चंद्रमा शीघ्र नाराज होकर प्रतिकूल हो जाता है।
12. घर की स्त्रियां यदि 'श्रीसूक्त' का पाठ करें तो लक्ष्मी जल्दी प्रसन्न होती है।
13. दुकान, फैक्टरी या कामर्शियल स्थल पर श्रीयंत्र-कुबेर यंत्र-कनकधारा यंत्र एक फ्रेम में जड़वाकर नित्य धूप अगरबत्ती दें। श्रीसूक्त का नियमित पाठ करें।
14. नवरत्न जड़ित 'श्रीयंत्र' गले में धारण करें।

इस यंत्र को लॉकेट के रूप में धारण करने से व्यक्ति को अनन्त ऐश्वर्य व लक्ष्मी की प्राप्ति होती है।



व्यक्ति को ऐसा आभास होता है जैसे लक्ष्मी उसके साथ है नवग्रह श्रीयंत्र से बंधे हुए होने के कारण ग्रहों की प्रतिकूल दशा का असर धारण करने वाले व्यक्ति पर नहीं होता। गले में होने के कारण यह यंत्र पवित्र रहता है एवं स्नान करते समय इस यंत्र से स्पर्श होकर जो जल बिन्दु शरीर को लगते हैं वह गंगा जल के समान पवित्र हो जाते हैं। अपरोक्ष रूप से एक प्रकार से व्यक्ति का नित्य प्रति रत्न स्नान भी हो जाता है। इसलिए यह सबसे सशक्त श्रीयंत्र कहलाता है। जिस प्रकार अमृत से ऊपर कोई औषधि नहीं उसी प्रकार लक्ष्मी प्राप्ति के लिए इस श्रीयंत्र से बढ़िया अन्य कोई यंत्र संसार में नहीं है। इस प्रकार के श्रीयंत्र शुभ मुहूर्त में प्राण प्रतिष्ठित करके हमारे कार्यालय में बनाए जाते हैं।

15. कर्ज अधिक हो तो 'दरिद्रतानाशक' अंगूठी धारण करें।

दरिद्रता नाशक अंगूठी–यदि हाथ में भाग्य रेखा छिन्न-भिन्न अवस्था में है। धनरेखा गायब है, तथा जीवन में रुपयों-पैसों की कमी लगातार बनी रहती है तो यह अंगूठी धारण करना बहुत जरूरी है। तंत्रोक्त 'शारदा तिलक' के अनुसार–

तारताम्र सुवर्णानांअर्क षोडशखेन्दुभिः।
पुष्यार्के घटिका मुद्री ऋणदारिद्र्य नाशिनी॥

अर्थात् सोलह रत्ती तांबा, बारह रत्ती चांदी एवं दस रत्ती सुवर्ण इन तीनों धातु की अंगूठी पुष्य नक्षत्र के घटीपल में बनाकर मंत्रपूत करके पहनी जाए तो कैसी भी दरिद्रता हो धीरे-धीरे नष्ट हो जाती है, कैसा भी कर्ज हो उतर जाता है। यह अनुभूत है। इस अंगूठी को धार्मिक भाषा में 'पवित्री' भी कहते हैं। यह धातु स्पर्श चिकित्सा का सबसे चमत्कारी पहलू है। किसी भी प्रकार की असुविधा होने पर उपर्युक्त सभी सामग्रियां हमारे जोधपुर कार्यालय में प्राप्त की जा सकती हैं।

16. वैशाख पूर्णिमा को व्रत, हवन एवं तीर्थ स्नान करने से स्थाई धन की प्राप्ति होती है।

वैशाखी पूर्णिमा–वैशाखी पूर्णिमा स्नान लाभ की दृष्टि से अंतिम पर्व है। इस दिन गंगा जैसी पवित्र नदी में स्नान करना चाहिए। दान के लिए मिष्ठान, सत्तू, वस्त्र आदि का विशेष महत्त्व है। श्रीकृष्ण के बचपन के सहपाठी दरिद्र ब्राह्मण सुदामा जब द्वारिका उनसे मिलने गए तो उन्होंने सत्य विनायक व्रत का उनको विधान बताया। इसी व्रत के प्रभाव से सुदामा की सब दरिद्रता जाती रही तथा वह अत्यन्त ऐश्वर्यशाली हो गए।

17. अभीष्ट सिद्धि हेतु घर की स्त्रियां को 'सोमप्रदोष' का व्रत करना चाहिए।

सोम त्रयोदशी प्रदोष व्रत–सूत जी बताने लगे–'सोम त्रयोदशी प्रदोष व्रत से शिव-पार्वती प्रसन्न होते हैं। व्रती के समस्त मनोरथ पूर्ण होते हैं।'

एक नगर में एक ब्राह्मणी रहती थी। उसके पति का स्वर्गास हो गया था। उसका अब कोई आश्रयदाता नहीं था, इसलिए प्रातः होते ही वह अपने पुत्र के साथ भीख मांगने निकल पड़ती थी। भिक्षाटन से ही वह स्वयं व पुत्र का पेट पालती थी। एक दिन ब्राह्मणी घर लौट रही थी तो उसे एक लड़का घायल अवस्था में कराहता हुआ मिला। ब्राह्मणी दयावश उसे अपने घर ले आई।

वह लड़का विदर्भ का राजकुमार था। शत्रु सैनिकों ने उसके राज्य पर आक्रमण कर उसके पिता को बन्दी बना लिया था और राज्य पर नियंत्रण कर लिया था, इसलिए वह मारा-मारा फिर रहा था। राजकुमार ब्राह्मण पुत्र के साथ ब्राह्मणी के घर रहने लगा। एक दिन अंशुमति नामक एक गंधर्व कन्या ने राजकुमार को देखा और उस पर मोहित हो गई। अगले दिन अंशुमति अपने माता-पिता को राजकुमार से मिलाने लाई। उन्हें भी राजकुमार भा गया। कुछ

दिनों बाद अंशुमति के माता-पिता को शंकर भगवान ने स्वप्न में आदेश दिया कि राजकुमार और अंशुमति का विवाह कर दिया जाए। उन्होंने वैसे ही किया। ब्राह्मणी प्रदोष व्रत करती थी। उसके व्रत के प्रभाव और गंधर्वराज की सेना की सहायता से राजकुमार ने विदर्भ से शत्रुओं को खदेड़ दिया और पिता के राज्य को पुन: प्राप्त कर आनन्दपूर्वक रहने लगा। राजकुमार ने ब्राह्मण पुत्र को अपना प्रधानमंत्री बनाया। ब्राह्मणी के प्रदोष व्रत के महात्म्य से जैसे राजकुमार और ब्राह्मण पुत्र के दिन फिरे, वैसे ही शंकर भगवान अपने दूसरे भक्तों के दिन फेरते हैं।

आकर्षण बढ़ाने हेतु, यश प्राप्ति एवं पराक्रम वृद्धि हेतु–

1. स्फटिक माला डॉयमण्ड कटिंग वाली गले में धारण करें। इसे आकर्षण मंत्रों द्वारा अभिमंत्रित करके पहनें तो शीघ्र प्रभाव होगा।
2. तृतीयेश बुध का रत्न पन्ना कनिष्ठिका अंगुली में सवा छ: रत्ती का धारण करें। कर्क लग्न में बुध दो अशुभ भावों तृतीय एवं द्वादश का स्वामी होता है। अत: यह रत्न सुवर्ण धातु में पहनना चाहिए चांदी में नहीं।
3. यदि कुण्डली में शुक्र की स्थिति अच्छी हो तो पन्ने के साथ हीरा या जिरकॉन भी समान वजन के पहन सकते हैं।
4. भगवती जगदम्बा को सौ सुगन्धित मालती के पुष्प 'चंद्र कवच' को पढ़ते हुए चढ़ाएं।
5. जेब में सफेद रुमाल रखें।
6. चमेली या मालती का अत्तर या स्प्रे प्रति सोमवार काम में लिया करें।
7. सोमवार को जब भी घर से बाहर निकलें कांच में मुंह देखकर निकलें।

माता, मकान एवं घर में सुख शान्ति हेतु–

1. आपकी कुण्डली की चतुर्थेश शुक्र का रत्न 'हीरा' या 'जिरकान' सवा पांच रत्ती, सवा चार रत्ती मोती के साथ 'बीसा यंत्र' में धारण करें तो माता के सुख, मकान के सुख, नौकर-चाकर के सुख, वाहन के सुख में अकल्पनीय वृद्धि होगी।
2. चंद्रमा के पौराणिक मंत्र का मोती की माला पर जप करें।
3. 28 सोमवार का नियमित व्रत करें।

4. दुर्गासप्तशती का पाठ वैदिक चंद्रमा के मंत्रों से सम्पुष्टित करके हवन करें तो तीन माह के भीतर नए मकान की प्राप्ति होती है।
5. सवा चार रत्ती का मोतीयुक्त चंद्रमा गले में धारण करें तो घर में कलह नहीं होगी।

सन्तान प्राप्ति हेतु

1. मूंगा सवा पांच रत्ती एवं मोती सवा पांच रत्ती दोनों रत्न शुद्ध सुवर्ण धातु में 'बीसा यंत्र' के साथ जड़वा कर मंत्रपूत करके गले में धारण करें।
2. प्रदोष व्रत के साथ शिवजी की विशिष्ट उपासना व अनुष्ठान प्रारम्भ करें।
3. सन्तान गोपाल स्रोत का पाठ करें।
4. पंचमेश का रत्न मूंगा सवा आठ रत्ती का धारण करना चाहिए।
5. श्रावण शुक्ला पंचमी (नागपंचमी) को व्रत रखना चाहिए। नाग की पूजा करनी चाहिए। दूध-खीर का भोग लगाना चाहिए। इससे सर्प दोष, पितृ दोष एवं कालसर्पजनिक दोष की शान्ति होकर 'पुत्र रत्न' की प्राप्ति होती है।

नागपंचमी—श्रावण शुक्ल पंचमी को नाग पंचमी कहते हैं। इस दिन नागों की पूजा की जाती है। गरुड़ पुराण में ऐसा सुझाव दिया गया है कि नागपंचमी के दिन घर के दोनों बगल में नाग की मूर्ति खींचकर अनन्तर प्रमुख महानागों का पूजन किया जाए।

पंचमी नागों की तिथि है, ज्योतिष के अनुसार पंचमी तिथि के स्वामी नाग हैं। अर्थात् शेष आदि सर्पराजों का पूजन पंचमी को होना चाहिए। सुगंधित पुष्प तथा दूध सर्पों को अति प्रिय है। गांवों में इसे 'नागचैया' भी कहते हैं। इस दिन ग्रामीण लड़कियां किसी जलाशय में गुड़ियों का विसर्जन करती हैं। ग्रामीण बच्चे तैरती हुई इन निर्जीव गुड़ियों को डंडे से खूब पीटते भी हैं। तत्पश्चात् बहन उन्हें रुपयों की भेंट तथा आशीर्वाद देती है।

कथा—प्राचीन दन्त-कथाओं से ज्ञात होता है कि किसी ब्राह्मण के सात पुत्रवधूएं थीं। सावन मास लगते ही छः बहुएं तो भाई के साथ मायके चली गई, परन्तु अभागी सातवीं के कोई भाई ही न था कौन बुलाने आता? बेचारी ने अति दुखित होकर पृथ्वी को धारण करने वाले शेषनाग को भाई रूप में याद किया। करुणायुक्त, दीन वाणी को सुनकर शेष जी वृद्ध ब्राह्मण के रूप

में आए, और उसे लिवाकर चल दिए। थोड़ी दूर रास्ता तय करने पर उन्हों अपना असली रूप धारण कर लिया। कुल परम्परा में नागों के बहुत से बच्च ने जन्म लिया। उस नाग बच्चों को सर्वत्र विचरण करते देख शेष नागरानी उस वधू को पीतल का एक दीपक दिया तथा बताया कि इसके प्रकाश स तुम अंधेरे में भी सब कुछ देख सकोगी। एक दिन अकस्मात् उसके हाथ से दीपक नाग टहलते हुए नाग बच्चों पर गिर गया। परिणामस्वरूप उन सबकी थोड़ी पूंछ कट गई।

यह घटना घटित होते ही कुछ समय बाद वह ससुराल भेज दी गई। जब अगला सावन आया तो वह वधू दीवाल पर नागदेवता को उकेर कर उसकी विधिवत् पूजा तथा मंगल कामना करने लगी। इधर क्रोधित नाग बालक माताओं से अपनी पूंछ काटने का आदिकारण जानकर इस वधू को मारकर बदला चुकाने के लिय आए थे, लेकिन अपनी ही पूजा में श्रद्धावनत देखकर वे सब प्रसन्न हुए और उनका क्रोध समाप्त हो गया। बहन स्वरूपा उस वधू के हाथ से प्रसाद रूप में उन लोगों ने दूध तथा चावल भी खाया। नागों ने उसे सर्पकुल से निर्भय होने का वर तथा उपहार में मणियों की माला दी। उन्होंने यह भी बताया कि श्रावण मास के शुक्ल पक्ष की पंचमी को हमें भाई रूप में जो पूजेगा उसकी हम रक्षा करते रहेंगे।

6. श्रावण शुक्ला एकादशी एवं पौष शुक्ला एकादशी, पुत्रदा एकादशी कहलाती है। इस दिन विष्णु भगवान की पूजन कर व्रत रखने से 'पुत्र रत्न' की प्राप्ति होती है।

पुत्रदा एकादशी—यह एकादशी सावन शुक्ल पक्ष में 'पुत्रदा एकादशी' के नाम से मनाई जाती है। इस दिन भगवान विष्णु के नाम पर व्रत रख कर पूजा करनी चाहिए। तत्पश्चात् वेदपाठी ब्राह्मणों को भोजन कराके दान देकर आशीर्वाद लेना चाहिये। सारा दिन भगवान के वंदन, कीर्तन में बिताएं तथा रात्रि में भगवान की मूर्ति के पास ही सोना चाहिए। इस व्रत को रखने वाले नि:संतान व्यक्ति को पुत्ररत्न की प्राप्ति होती है।

कथा—प्राचीन समय में महिष्मती नगरी मे महीसित नामक राजा राज्य करते थे। अत्यन्त धर्मात्मा, शान्ति प्रिय तथा दानी होने पर भी उनके कोई संतान नहीं थी। इसी से राजा अत्यन्त दु:खी थे। एक बार राजा ने अपने राज्य के समस्त ऋषियों को बुलाया तथा संतान प्राप्ति का उपाय पूछा। इस पर परम ज्ञानी लोमश ऋषि ने बताया कि आपने पिछले सावन मास की एकादशी को अपने तालाब से प्यासी गाय को पानी पीने से हटा दिया था। उसी के शाप से आपके

कोई संतान नहीं हो रही है। इसलिए आप सावन माह की पुत्रदा एकादशी का नियमपूर्वक व्रत रखिए तथा रात्रि जागरण कीजिये, पुत्र अवश्य प्राप्त होगा। ऋषि के आज्ञानुसार राजा ने परिवार सहित एकादशी व्रत रखा और उसे इससे पुत्ररत्न प्राप्त हुआ।

7. कार्तिक शुक्ला एकादशी को तुलसी विवाह करने से भी व्यक्ति को उत्तम संतति की प्राप्ति होती है।

8. हरिवंश पुराण की कथा का विधिपूर्वक श्रवण करने से भी उत्तम संतति की पुत्र प्राप्ति होती है। जिनके संतान होकर जीवित न रहती हो उन्हें आश्विन कृष्ण अष्टमी को जीवित पुत्रिका व्रत व कथा करनी चाहिए।

9. पुत्र सन्तान की प्राप्ति हेतु घर की स्त्रियों को 'शनिप्रदोष' का व्रत करना चाहिये।

शनि त्रयोदशी प्रदोष व्रत–सूत जी बोले–

'पुत्र कामना हेतु यदि, हो विचार शुभ शुद्ध।
शनि प्रदोष व्रत परायण, करें सुभक्त विशुद्ध।।'

कथा–प्राचीन समय की बात है। एक नगर सेठ धन-दौलत और वैभव से सम्पन्न था। वह अत्यन्त दयालु था। उसके यहां से कभी कोई भी खाली हाथ नहीं लौटता था। वह सभी को जी भरकर दान-दक्षिणा देता था। लेकिन दूसरों को सुखी दीखने वाले सेठ और उसकी पत्नी स्वयं काफी दु:खी थे। दु:ख का कारण था- उनके संतान का न होना। संतानहीनता के कारण दोनों घुले जा रहे थे। एकदिन उन्होंने तीर्थयात्रा पर जाने का निश्चय किया और अपने काम-काज सेवकों को सौंप कर चल पड़े। अभी वे नगर से बाहर ही निकले थे कि उन्हें एक विशाल वृक्ष के नीचे समाधि लगाए, एक तेजस्वी साधु दिखाई पड़े। दोनों ने सोचा कि साधु महाराज से आशीर्वाद लेकर आगे की यात्रा शुरू की जाए। पति-पत्नी दोनों समाधिलीन साधु के सामने हाथ जोड़कर बैठ गए और उनकी समाधि टूटने की प्रतीक्षा करने लगे। सुबह से शाम फिर रात हो गई। लेकिन साधु की समाधि नहीं टूटी। मगर सेठ पति-पत्नी धैर्यपूर्वक हाथ जोड़े पूर्ववत् बैठे रहे।

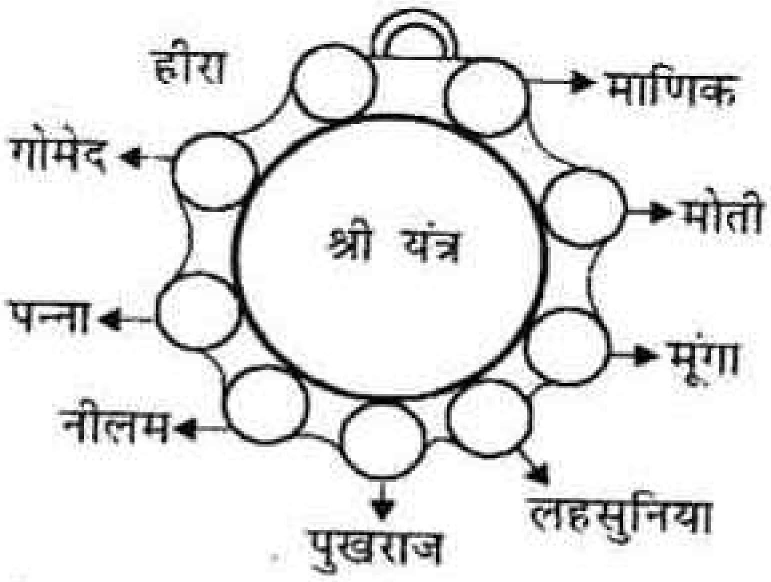
अंतत: अगले दिन प्रात: काल साधु समाधि से उठे। सेठ पति-पत्नी को देख मन्द-मन्द मुस्कराए और आशीर्वाद स्वरूप हाथ उठाकर बोले–''मैं तुम्हारे अन्तर्मन की कथा भांप गया हूं वत्स! मैं तुम्हारे धैर्य और भक्तिभाव से अत्यन्त प्रसन्न हूं। साधु ने संतान प्राप्ति के लिए उन्हें शनि प्रदोष व्रत करने की विधि समझाई और शंकर भगवान की निम्न वन्दना बताई–

हे! रुद्रदेव शिव नमस्कार। शिव शंकर जगद्बृहस्पति नमस्कार॥
हे! नीलकंठ सुर नमस्कार। शशि मौलि चंद्र सुख नमस्कार॥
हे! उमाकान्त सुधि नमस्कार। उग्रत्व रूप मन नमस्कार॥
ईशान ईश प्रभु नमस्कार। विश्वेश्वर प्रभु शिव नमस्कार॥

तीर्थयात्रा के बाद दोनों वापस घर लौटे और नियमपूर्वक शनि प्रदोष व्रत करने लगे। कालान्तर में सेठ की पत्नी ने एक सुन्दर पुत्र को जन्म दिया। शनि प्रदोष व्रत के प्रभाव से उनके यहां छाया अंधकार लुप्त हो गया। दोनों आनंदपूर्वक रहने लगे।

गुप्त एवं प्रकट शत्रु नाश तथा मुकदमे में विजय के लिए–

1. नित्य चंद्र कवच एवं चंद्रमा के अठाईस नामों वाले स्रोत का पाठ करें।
2. बगुलामुखी का जाप एवं दशांश हवन का अनुष्ठान करें।
3. बगुलामुखी यंत्र गले में धारण करें।



इस यंत्र को लॉकेट के रूप में धारण करने से व्यक्ति अपने शत्रु को नष्ट करने में सक्षम व समर्थ हो जाता है। व्यक्ति को ऐसा आभास होता है जैसे कोई गुप्त शक्ति उसके साथ चल रही है। इस यंत्र को हर समय नहीं पहनना चाहिए। रात्रिकाल में गृहस्थ के समय इसको उतार लेना चाहिए। इस यंत्र को पहनकर व्यक्ति कोर्ट में खड़ा हो जाए तो मन में बगलामुखी यंत्र का उच्चारण करता रहे तो प्रतिकूल मजिस्ट्रेट (न्यायाधीश) भी उसके खिलाफ फैसला नहीं दे सकता। कहने का तात्पर्य यह है कि इसे पहन कर व्यक्ति यदि जलती आग में भी कूद जाए एवं शत्रुओं के बीच में भी घुस जाए तो उस का बाल बांका नहीं होता है, यह अनुभूत है।

4. खोया हुआ राज्य पुन: प्राप्त हो जाए एवं सभी शत्रु नष्ट हो जाएं इसके लिए भाद्र शुक्ल एकादशी, परिवर्तनी एकादशी का व्रत व कथा करनी चाहिए।

परिवर्तनी एकादशी–भाद्रपद शुक्ल पक्ष की एकादशी को पद्मा एकादशी भी कहते हैं यह श्रीलक्ष्मी जी का परम आह्लादकारी व्रत है। इस दिन भगवान

विष्णु क्षीर सागर में शेष शय्या पर शयन करते हुए करवट बदलते हैं। इसीलिए इसे करवटनी एकादशी भी कहा जाता है। इस दिन लक्ष्मी पूजन करना श्रेष्ठ होता है, क्योंकि देवताओं ने अपने पुनः राज्य को पाने के लिए महालक्ष्मी का ही पूजन किया था।

5. चंद्रमा कुण्डली में कमजोर हो, नीच का हो, पद्च्युत हो, तो चंद्रमा को बलवान व प्रसन्न करने के लिए मार्गशीर्ष पूर्णिमा को व्रत एवं हवन करना चाहिए।
6. इसी प्रकार कोर्ट-कचहरी व मुकदमों में विजय प्राप्त करने के लिए माघ शुक्ल एकादशी 'विजया एकादशी' का व्रत रखकर हवन करना चाहिए।

   विजया एकादशी–यह व्रत फाल्गुन कृष्ण पक्ष एकादशी को किया जाता है। इस दिन भगवान विष्णु की पूजा करने से अत्यन्त पुण्य होता है। पूजन में धूप, दीप, नैवेद्य, नारियल आदि चढ़ाया जाता है।

   सप्त अन्न युक्त घट का स्थापन किया जाता है। जिसके ऊपर विष्णु की मूर्ति रखी जाती है। इस तिथि को 24 घंटे कीर्तन करके दिन-रात बिताना चाहिये। द्वादशी के दिन अन्न भरा घड़ा ब्राह्मण को दिया जाता है। इस व्रत को प्रभाव से दुःख दारिद्रय दूर हो जाते हैं, समग्र कार्य में विजय प्राप्त होती है। इसकी कथा भगवान राम की लंका विजय से सम्बन्धित है।

7. शत्रुनाश हेतु घर के स्त्री-पुरुषों को 'शुक्र प्रदोष' का व्रत करना चाहिए।

शीघ्र विवाह, सुयोग्य सुन्दर जीवनसाथी की प्राप्ति एवं दाम्पत्य सुख में वृद्धि हेतु–

1. आपकी कुण्डली में शनि सप्तमेश है अतः जीवनसाथी की प्राप्ति हेतु शनि का रत्न 'नीलम' अभिमंत्रित करके नीले रंग के रुमाल के साथ दो माह तक जेब में रखें। शनि की वस्तुओं का दान करें। कर्कलग्न वालों को नीलम तो भूल कर भी नहीं पहनना चाहिए क्योंकि वह सप्तम (मारक स्थान) और अष्टम (दुःख स्थान) का स्वामी होने के कारण अशुभ है।
2. ज्येष्ठ कृष्ण अमावस्या को वट्-सावित्री पूजन, कथा करने से सुहागिन स्त्रिओं के पति को दीर्घायु की प्राप्ति होती है।
3. श्रावण मास में जितने भी मंगलवार आते हैं उनका व्रत मंगलागौरी व्रत कहलाता है यह प्रायः सुहागिन स्त्रियां अपने पति की दीर्घायु के लिए करती हैं। यदि कुंवारी कन्या भी करे तो उसे उत्तम पति की प्राप्ति होती है।

4. भाद्रशुक्ल तीज हरितालिका तीज कहलाती है। इस दिन उपवास रखने पर पति प्रसन्न हो जाता है। पति-पत्नी के मध्य प्रेम बढ़ जाता है।
5. कार्तिक कृष्ण चतुर्थी करवा चौथ का व्रत करने से पति की आयु बढ़ती है। यह व्रत विवाहित स्त्री के लिए है।
6. माघ शुक्ल एकादशी 'जया एकादशी' का व्रत रखने पर गुस्सैल पत्नी भी अनुकूल हो जाती है। यह व्रत केवल पुरुषों क लिए है।

   जया एकादशी—यह व्रत माघ शुक्ल पक्ष एकादशी को किया जाता है। इस तिथि को भगवान केशव (कृष्ण) की पुष्प, जल, अक्षत, रोली तथा विशिष्ट सुगंधित पदार्थों से पूजन करके आरती उतारनी चाहिए। भगवान को भोग लगाये गए प्रसाद को भक्त स्वयं खाये।

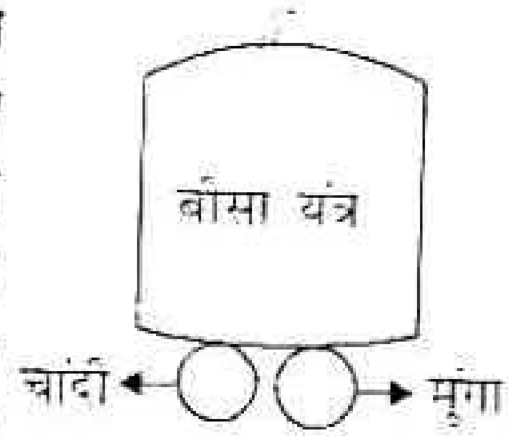
   कथा—एक समय की बात है इन्द्र की सभा में एक गंधर्व गीत गा रहा था, परन्तु उसका मन अपनी नवयौवाना सुन्दरी में आसक्त था। अतएव स्वर-लय भंग हो रहा था। यह लीला इन्द्र को बहुत बुरी तरह खटकी, तब उन्होंने क्रोधित होकर कहा—हे दुष्ट गंधर्व! तू जिसकी याद में मस्त है वह राक्षसी हो जाएगी। यह शाप सुनकर वह बहुत घबराया और इन्द्र से क्षमा याचना करने लगा। इन्द्र के कुछ न बोलने पर वह घर चला आया, यहां आकर देखने पर उसकी पत्नी सचमुच पिशाचिनी रूप में मिली। शाप निवृत्ति के लिए उसने करोड़ों यत्न किए, परन्तु सब असफल रहे तब हार कर बैठ गया। अकस्मात् एक दिन उसका साक्षात्कार ऋषि नारद से हो गया। तब उन्होंने दु:ख का कारण पूछा। गंधर्व ने सब बातें यथावत् बता दीं। वह सुनकर नारद ने माघ शुक्ल पक्ष की जया-एकादशी का व्रत तथा भगवत कीर्तन करने को कहा। गंधर्व ने एकादशी का व्रत किया जिसके प्रभाव से उसकी पत्नी अत्यन्त सौन्दर्यशाली हो गई।

7. पति-पत्नि में मनमुटाव हो जाए, तलाक की नौबत आ जाए तो कार्तिक कृष्ण एकादशी 'रम्भा एकादशी' का व्रत रखने से दोनों में प्रेम हो जाएगा।
8. सौभाग्य एवं स्त्री की समृद्धि हेतु पुरुष जातक को 'शुक्र प्रदोष' का व्रत करना चाहिए।

नौकरी प्राप्ति, व्यापार-व्यवसाय में उन्नति एवं शीघ्र भाग्योदय हेतु—

1. भाग्योदय हेतु मूंगा सवा पांच रत्ती एवं भाग्येश बृहस्पति का रत्न 'पुखराज' सवा पांच रत्ती का पैण्डल सुवर्ण धातु में 'बीसा यंत्र' के साथ बनवाकर गले में पहनना चाहिए।

बीसा यंत्र में यह दोनों रत्न **गजकेसरी योग** को प्रबल पुष्ट करते हैं। जिन लोगों को परिश्रम करने पर भी मेहनत का बराबर फल नहीं मिलता जिनका प्रमोशन पदोन्नति नहीं हो रहा हो, अथवा जिनको अपने राजनैतिक व सामाजिक महत्त्व का पूरा लाभ नहीं मिल रहा हो, उनको यह यंत्र



अवश्य धारण करना चाहिए। यह हमारा अद्‌भुत प्रयोग है कि इस यंत्र को धारण करने से व्यक्ति का प्रभाव, पराक्रम, प्रभुत्व बढ़ जाता है। ऐसा व्यक्ति दूसरों को शीघ्र प्रभावित करके अपना कार्य दूसरों से निकलवाने में सक्षम व समर्थ हो जाता है। महत्वाकांक्षी लोगों के लिए यह यंत्र अमृततुल्य उपादेय औषधि है जो ताकत की-कार्यकुशलता को कई गुना बढ़ा देता है।

2. चाहे तो उपरोक्त संयुक्त रत्नों की अंगूठी भी तर्जनी या अनामिका अंगुली में धारण कर सकते हैं।
3. मूंगा सवा चार रत्ती, पुखराज सवा चार रत्ती, मोती सवा चार रत्ती इन तीनों रत्नों को त्रिलौह धातु या शुद्ध सुवर्ण मे लॉकेट बनाकर मंत्रपूरित करके पहले तो मार्ग रुकावट दूर होकर शीघ्र भाग्योदय होगा।
4. चार श्वेत पुष्प प्रति सोमवार एवं पूर्णिमा को कुएं या बहते पानी में प्रवाहित करें। ऐसा २८ बार करने से कई बार अचानक भाग्योदय हो जाता है।
5. चांदी के बर्तनों में भोजन करें, जल पियें।
6. प्रत्येक सोमवार को बिल्व वृक्ष में दूध चढ़ाएं।
7. नवरत्न जड़ित स्पेशल पावरफुल 'श्रीयंत्र' सुवर्ण में धारण करें।

पिता सुख, राज्य व व्यापार में तरक्की हेतु–

1. नित्य शिवजी का पूजा करें। शिवरात्रि का व्रत एवं जागरण रखें।

महाशिवरात्रि व्रत– फाल्गुन कृष्ण पक्ष चतुर्दशी को शिवरात्रि का महोत्सव मनाया जाता है। त्रयोदशी को एक बार भोजन करके चतुर्दशी को दिन भर अन्न ग्रहण करना नहीं चाहिए। काले तिलों से स्नान करके रात्रि में विधिवत् शिव पूजन करना चाहिए। शिव पूजन विधान में बेलपत्र सबसे प्रमुख है। शिवजी पर पका आम चढ़ाने से विशेष फल प्राप्त होता है। शिवलिंग पर चढ़ाए गए पुष्प, फल तथा जल को नहीं ग्रहण करना चाहिए।

2. अमरनाथ की यात्रा अथवा द्वादश ज्योतिर्लिंगों की यात्रा करें।

3. घर की छत के नीच कुआं या हैण्ड पम्प न लगाएं।
4. चंद्र दोष पीड़ित व्यक्ति को प्रदोष व्रत एवं श्रावण के सोमवार को रुद्राभिषेक, शिव पूजन अवश्य करना चाहिए।
5. पंचमुखी रुद्राक्ष को पूजा स्थान पर रखकर नियमित पूजन करें।
6. 'ऊं नमः शिवाय' पंचाक्षर मंत्र की माला का नित्य जाप करें।

भागीदारी एवं मित्रों से लाभ प्राप्ति हेतु–

1. सोलह सोमवार की कथा करें।
2. चावल, चांदी, दूध का दान छोटे-बच्चों को करें।
3. सवा चार रत्ती सच्चे मोती की अंगूठी, चांदी में बनवाकर अभिमंत्रित करके पहनें।
4. ग्यारह ब्राह्मणों से दुग्ध-भांग मिश्रित रूद्राभिषेक करवा कर, ब्राह्मणों को खीर का भोजन कराएं।
5. शिव चालीसा का नियमित पाठ करें।

मानसिक तनाव कम करने, आत्मबल में वृद्धि एवं सुखपूर्वक नींद प्राप्त करने हेतु–

1. शुद्ध, सच्चे एवं गोल मोतियों की माला गले में धारण करें।
2. माला यदि मंत्रों द्वारा प्राण प्रतिष्ठित–अभिमंत्रित करके पहनें तो ज्यादा लाभ होगा।
3. चांदी की चार कीलें पलंग के सिरहाने वाले पाए पर लगाएं।
4. शयन करने के पूर्व हाथ-पांव धोकर 'रात्रिसूक्त' का पाठ करें।
5. शयनकक्ष मे ऊंटपटांग चित्र, डरावने फोटो, मूर्तियां, लाल रंग की बत्ती वगैरह नहीं होनी चाहिए।
6. तनाव रहित जीवन जीने हेतु, सर्वकामना सिद्धि हेतु घर के स्त्री-पुरुषों को 'बुध प्रदोष' का व्रत करना चाहिए।

बुध त्रयोदशी प्रदोष व्रत–सुत जी आगे बोले–'बुध त्रयोदशी प्रदोष व्रत से सर्व कामनाएं पूर्ण होती हैं। इस व्रत में हरी वस्तुओं का प्रयोग करना चाहिए। शंकर भगवान की आराधना धूप, बेल-पत्रादि से करनी चाहिए।'

व्रत कथा–एक पुरुष का नया-नया विवाह हुआ। विवाह के दो दिनों बाद उसकी पत्नी मायके चली गई। कुछ दिनों बाद वह पुरुष पत्नी को लेने उसके यहां गया। बुधबार को जब वह पत्नी के साथ लौटने लगा तो ससुराल पक्ष ने उसे रोकने का प्रयत्न किया कि विदाई के लिए बुधवार शुभ नहीं होता। लेकिन वह नहीं माना और पत्नी के साथ चल पड़ा। नगर के बाहर पहुंचने पर पत्नी को प्यास लगी। पुरुष लोटा लेकर पानी की तलाश में चल पड़ा। पत्नी एक पेड़ के नीचे बैठ गई। थोड़ी देर बाद पुरुष पानी लेकर वापस लौटा, उसने देखा कि उसकी पत्नी किसी के साथ हंस-हंसकर बातें कर रही है और उसके लोटे से पानी पी रही है। उसको क्रोध आ गया। वह निकट पहुंचा तो उसके आश्चर्य का कोई ठिकाना न रहा। उस आदमी की सूरत उसी की भांति थी। पत्नी भी सोच में पड़ गई। दोनों पुरुष झगड़ने लगे। भीड़ इकट्ठी हो गई। सिपाही आ गए। हमशक्ल आदमियों को देख वे भी आश्चर्य में पड़ गई। उन्होंने स्त्री से पूछा–'उसका पति कौन है?' वह किंकर्तव्यविमूढ़ हो गई। तब वह पुरुष शंकर भगवान से प्रार्थना करने लगा–'हे भगवान् हमारी रक्षा करें। मुझसे बड़ी भूल हुई कि मैंने सास-श्वसुर की बात नहीं मानी और बुधवार को पत्नी को विदा कर लाया। लोकोक्ति भी प्रचलित है–बुध बेटी, कभी ने भेंटी। मैं भविष्य में ऐसा कदापि नहीं करूंगा। जैसे ही उसका प्रार्थना पूरी हुई, दूसरा पुरुष अन्तर्धान हो गया। पति-पत्नी सकुशल अपने घर पहुंच गए। उस दिन के बाद से पति-पत्नी नियमपूवर्क बुध त्रयोदशी प्रदोष व्रत रखने लगे और सुखपूर्वक रहने लगे।

आह्वान–

ऋषिभि: स्तूयमानं च भौममावह्याम्यहम्॥ 1॥
उज्जनिन्यां समुत्पन्नो भोभो भौमश्चतुर्भुजः।
भारद्वाजकुले जातः खड्गशक्तिगदाधारः॥ 2॥
वरदो मेषमारूदः स्कन्दप्रावृड्तडित्प्रभो।
स्योना पृथ्वीति मन्त्रेण दलेयाम्ये प्रतिष्ठितः॥ 3॥
ॐ स्योनापृथिवीनोभवान्नृक्षरानिवेशनी–
पुच्छानः शर्म्मसप्रथाः॥ 4॥
दक्षिणे भौमं स्थापयामि–

धूमकेतु नामाग्नि, समिधा, खैर (खदिर), फल-सुपारी मंगल यंत्र की स्थापना करें।

मंगल ग्रह की प्रतिष्ठा का वैदिक मन्त्र

ॐ अग्निमूर्द्धादिव: ककुत्पति: पृथिव्याऽअयम्।
अपा: रेता: सिजिन्वति।।

तान्त्रिक मन्त्र

ॐ क्राँ क्रीं क्रौं स: भौमाय नम:।

मंगल अरिष्ट नाशन के विविध उपाय

1. मंगलकृत अरिष्ट निवारणार्थ मंगल व्रत सहित मंगल मन्त्र का विधिवत अनुष्ठान करना चाहिए।
2. समर्थ वृहस्पति के निर्देशन में भैरव (विशेष रूप से आयु वृद्धारक बटुक भैरव) मन्त्र का प्रयोग पापक्रान्त या नीच राशिस्थ भौम के लिए अयोग्य है।
3. सिंह और धनु राशिस्थ मंगल के लिए कार्तिकेय एवं द्विस्वभाव (3, 6, 12) राशिस्थ मंगल के लिए चामुण्डा की उपासना करनी चाहिए।
4. संयमी और शुद्र चरित्र का व्यक्ति हनुमान जी की भी साधाना कर सकता है।
5. मंगल की दशान्तर्दशा में आचार्य शंकर कृत सुव्रत्मव्यम भुजंग स्तोत्र या कार्तिकेय स्तोत्र का पाठ एवं कुमार कार्तिकेय की पूजा लाभदायक रहती है। इसके साथ ।। प्रदोष तिथियों में रुद्राभिषेक करना चाहिए।
6. शत्रुबाधा अथवा अभिचार पीड़ा में भगवती प्रत्यौंगरा अथवा पीताम्बरा के पंचाग का प्रयोग करना चाहिए।
7. वंश वृद्धि के लिए मंगल यंत्र को प्राण प्रतिष्ठित कर उसका विधिवत जप और पूजन करें।
8. ॠण और धन नाश की स्थिति में ॠण मोचन अंगारक स्तोत्र एवं बाल्मीकी रामायण के सुन्दर काण्ड का पाठ लाभदायक रहता है।
9. कन्याओं के मंगली दोष में श्रीमद् भागवत के अठाहरवें अध्याय के नवम श्लोक का जप करें।
10. रक्त पुष्पों से मंगल की पूजा 'तब जनक पाय वशिष्ठ आयसु हकारि के' इस सम्पुट के साथ तुलसी रामायण के सुन्दर काण्ड का पाठ, गौरी पूजन सहित अभीष्ट प्रद है।
11. मंगल यंत्र अथवा कवच और निर्दोष मृगा धारण करना एवं यथा शक्ति दान भी हितकारी सिद्ध होता है।

12. सामान्य मंगल पीड़ा बजरंग बाण एवं हनुमान जी के मंदिर में दीपदान से भी दूर होती है।
13. लक्ष्मी स्तोत्र, देवी कवच, गणपति स्तोत्र अथवा मोचन स्तोत्र में से किसी भी एक का नियमित वाचन करें।
14. 21 मंगलवार, 21 संकटीव्रत तथा 21 विनायकी व्रत करें।
15. ताम्रपात्र से जल पीएं।
16. मसूर की दाल तथा गुड़ अवश्य ही मंगलवार को ग्रहण करें।
17. श्री गणेश जी के दर्शन करें।
18. देवी भगवत का पाठन अथवा श्रवण करें।
19. लाल पुष्पों को जल में प्रवाहित करें।
20. तुलसी पत्र का भक्षण करें। काली मिर्च भी खाएं।
21. तुलसी के पौधो में जल चढ़ाएं।
22. मंगल के होरा में निर्जल रहें।
23. वृष या तुला लग्न में मंगल छठे, आठवें, बारहवे हो या कुण्डली मांगलिक हो तो भावी वैवाहिक जीवन की मंगल कामना के लिए, विवाह के समय दो बराबर वजन के मूंगे लें। फिर संकल्पपूर्वक एक मूंगा पानी में बहा दें तथा दूसरा मूंगा अपने पास रखें। जब तक यह मूंगा व्यक्ति के पास रहेगा। उसको मंगल का अशुभ प्रभाव स्पर्श नहीं करेगा तथा उसका वैवाहिक जीवन पूर्णत: सुखी रहेगा।
24. मंगलवार के नियमित 28 व्रत रखें। ध्यान रहे बीच में नियम टूटने पर पुन: 28 मंगलवार करने पड़ेंगे। कार्य सिद्ध होने पर मंगल का उद्यापन अनिवार्य है।
25. महागायत्री का पाठ करें, हनुमान जी को सिन्दूर लगाएं एवं खुद भी हनुमान जी के पैरों में रखे हुए सिन्दूर को लगाएं।
26. दाल मसूर, मूंगा, शहद या सिन्दूर आदि का दान देना या जल प्रवाह करना चाहिए।
27. खाने के बाद मेहमानों को मीठा (सौंफ, चीनी या मिश्री) खिलाना चाहिए।
28. मंगल (अशुभ हो तो) रेवड़ियां (गुड़ + तिल) जल में प्रवाहित करनी चाहिए।
29. मंगल (शुभ हो तो) मिठाई-मीठा भोजन का दान या बताशे चलते पानी में बहाएं।
30. मूंगा (लाल) धारण करें, मूंगे के अभाव में तांबा धारण करें।

31. भाई की सेवा करें।

32. मृगशाला (हिरण की खाल) पर सोएं।

33. जौ (अनाज) को गऊ मूत्र में धोकर लाल कपड़े में बांध कर रखें।

34. लाल वस्त्र धारण करें या लाल रूमाल पास रखें।

35. खालिस चांदी धारण करें।

36. ढेंक, काना, काला, गंजा, नि:सन्तान से दूर रहें।

37. मंगल उच्च हो तो उसकी चीजों का दान न दें।

38. मंगल नीच या अशुभ हो तो उसकी चीजों का दान न लें। उपरोक्त उपाय 5, 11 या 43 दिन या सप्ताह या मास लगातार करने चाहिए।

39. मंगल को शक्तिशाली बनाने के लिये ''मंगलयन्त्र'' धारण करें।

40. जिसको सुयोग्य जीवन साथी की अभिलाषा हो वह ''मंगलयन्त्र'' धारण करके, 28 मंगलवार का व्रत रखे निश्चय लाभ होगा।

41. निवृति की इच्छा के साथ जिस जातक को धनसंग्रह की कामना हो तो ''मंगलयन्त्र'' में मूंगे के साथ मोती लगाएं तो लक्ष्मीदेवी का कृपा हो जाएगी।

42. कर्जा अधिक बढ़ गया हो, उतर नहीं रहा हो तो ''ऋणमोचन मंगल स्तोत्र'' का नियमित पाठ करें।

43. मंगल पीड़ा की विशेष शान्ति हेतु बेलफल, जटामांसी, मुसली, लाल चंदन, बला, लाख पुष्प एवं हिंगलू मिला कर 8 मंगलवार तक स्नान करें।

44. यदि सन्तान प्रतिबन्धक ग्रह मंगल हो तो ग्रामदेवता, भगवान कार्तिक स्वामी, अथवा भाई-कुटम्बीजनों के शाप के कारण जातक को सन्तान सुख प्राप्ति नहीं होता। ऐसे में मंगल के वेदक्त मन्त्र का दस हजार जप करना चाहिए। मंगल सम्बन्धी वस्तुओं का दान करते हुए, मंगलवार का नियमित व्रत रखना चाहिए।

45. हरिवंश पुराण के अनुसार ऐसे जातक को महारुद्र या अतिरुद्र यज्ञ कराना चाहिए।

46. बाधक मंगल यदि गुणों से युक्त हो तो कुछ वताशे लेकर बहती नदी में डालें। श्रेष्ठफल देगा।

47. मंगल का अनिष्ट फल समाप्त करने हेतु मृगचर्म का आसन नित्य प्रयोग में लाएं।

48. मीठी रोटियां गरीबों में बांटें।

49. यवों को दूध में धोकर, चलते पानी में बहाएं।

50. यदि जातक की कुण्डली में मंगल चौथे स्थान में हो, कुण्डली में ''मांगलिक दोष'' हो, माता, सास व दादी का स्वास्थ्य चिन्ता का विषय हो, घर में अशान्ति, आर्थिक नुकसान रहता हो, वैवाहिक चिन्ता रहती हो तो जातक सुबह उठते ही नित्य कुएं के जल से दातुन किया करे।

51. मीठे दूध, बड़ की जड़ व जमीन की मिट्टी से मिश्रित तिलक को ललाट पर लगाएं, ऐसा करने से पेट की बीमारी को शीघ्र आराम मिलेगा।

52. यदि अग्निभय रहता हो तो शक्कर की बोरी छत पर डाल दें तथा छत के सबसे ऊपरी हिस्से पर कुछ शक्कर डाल दें।

53. यदि बीमारी की वजह से संतान व पत्नी के आयु का भय हो तो एक बर्तन में शहद डालकर शमशान घाट पहुंचा दे।

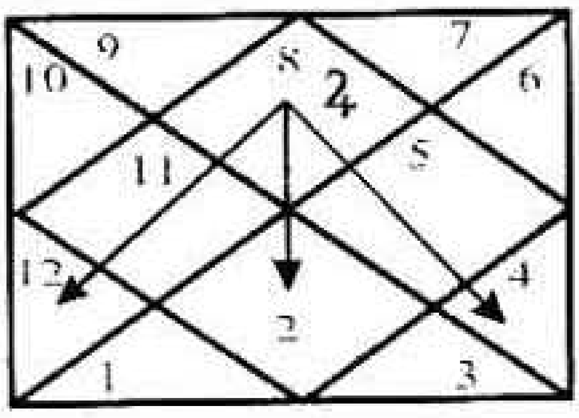
54. लम्बी बीमारी से बचने के लिए मृगचर्म अधिक से अधिक काम में लें तथा घर के दक्षिण द्वार की ओर लोहे के नाखून लटका दें या रख दें।

55. यदि मंगल आठवें स्थान में हो, जातक शत्रुओं से पीड़ित हो अथवा लम्बी बीमारी भुगत रहा हो तो मीठी रोटियां अथवा पराठें में मांस डालकर (लाल) कुत्तों को खिलाना चाहिए।

56. यदि पापी मंगल एकादश स्थान में हो, तीसरा घर खाली हो तो, जातक को पैतृक सम्पत्ति नुकसानदायक साबित होती है, जिन्दगी कर्जदार बीतती है। ऐसे जातक को घर में कुत्ता पालना लाभदायक रहता है।

57. मंगल द्वादश में हो, बुध 3, 8, 9, व 12 हो, तो जातक को द्वादश मंगल के दुष्परिणाम अवश्य भुगतने पड़ते हैं। ऐसी स्थिति में दूध में शहद डालकर दान करना चाहिए। कुत्तों को मीठी रोटी तथा हनुमान के मन्दिर में बताशे चढ़ाने चाहिए ।

वृश्चिकलग्न में रत्न धारण का वैज्ञानिक विवेचन



1. **माणिक्य**–वृश्चिकलग्न में सूर्य दर्शन भाव का स्वामी है। यहां सूर्य लग्नेश का मित्र होता है। अत: राज्य कृपा, प्रतिष्ठामान, व्यवसाय या नौकरी में उन्नति प्राप्त करने के लिए माणिक्य धारण करना शुभ फलदायक होता है। सूर्य की महादशा में इसका धारण करना विशेष रुप से शुभ होगा।

2. **मोती**–वृश्चिकलग्न में चंद्र नवम (भाग्य) स्थान का स्वामी होता है। अत: मोती धारण करने से धर्म, कर्म और भाग्य में उन्नति होती है। पितृसुख प्राप्त होता है, यश बढ़ता है।

3. **मूंगा**–वृश्चिकलग्न में मंगल लग्नेश है अत: इस लग्न के जातक के लिए मूंगा धारण करना उतना ही लाभप्रद होगा। यह आपका जीवन रत्न है। यह षष्ठेश भी है। लग्नेश को षष्ठेश का दोष नहीं लगता।

4. **पन्ना**–वृश्चिकलग्न के लिए बुध अष्टम और एकादश स्थान का स्वामी है। लग्नेश मंगल और बुध परस्पर मित्र नहीं हैं। अत: बुध इस लग्न के लिए शुद्ध ग्रह नहीं है तब भी यदि एकादश का स्वामी होने के कारण बुध के लग्न द्वितीय, चतुर्थ या पंचम तथा नवम या एकादश स्थान में स्थित होने के कारण ही बुध की महादशा में पन्ना धारण करने से आर्थिक लाभ होगा, सम्पन्ना में वृद्धि होगी।

5. **पुखराज**–वृश्चिकलग्न के लिए बृहस्पति द्वितीय एवं पंचम त्रिकोण का स्वामी होने के कारण शुभ ग्रह माने गये हैं। इसके अतिरिक्त लग्नेश मंगल और

बृहस्पति परस्पर मित्र हैं। अत: वृश्चिकलग्न के जातकों को पीला पुखराज पहनना चाहिए।

6. **हीरा**–वृश्चिकलग्न के लिए शुक्र व्यय भाव तथा सप्तम भाव (कारक स्थान) का स्वामी होता है। इसके अतिरिक्त लग्नेश मंगल और शुक्र में परस्पर मित्रता नहीं होती। अत: इन जातकों को हीरा धारण नहीं करना चाहिए।
7. **नीलम**–वृश्चिकलग्न के लिए शनि तृतीय और चुर्तथ स्थान का स्वामी है। शनि इस लग्न के लिए शुभ ग्रह नहीं माना जाता है। तब भी यदि शनि चतुर्थ का स्वामी होकर पंचम, नवम, दशम और एकादश में हो तो शनि की महादशा में रत्न धारण किया जा सकता है। क्योंकि शनि और लग्नेश मंगल परस्पर मित्र नहीं हैं। एक अग्नि है और दूसरा बर्फ है।

विशिष्ट उद्देश्यपूरक संयुक्त रत्न

1. **संतान हेतु**–पुखराज सवा पांच रत्ती, मंगल सवा पांच रत्ती।
2. **भाग्योदय हेतु**–मूंगा सवा पांच रत्ती। यह लक्ष्मी योग भी बनाता है।
3. **आरोग्य हेतु**–मूंगा सवा पांच रत्ती, मोती सवा पांच रत्ती त्रिलोह में
4. **स्थाई लक्ष्मी हेतु**–पुखराज-मोती-मूंगा सवा चार-चार रत्ती संयुक्त से बीसायंत्र में धारण करें तो यह '**गजकेसरी योग** के साथ किम्बहुना योग भी बनाता है। इसे स्वर्ण में पहनने से जातक तीनों लोकों में सभी प्रकार का काम कराने में समर्थ हो जाता है।

❑❑❑

प्रबुद्ध पाठकों के लिए अनमोल सुझाव
फलादेश करते समय कृपया ध्यान रखें

1. फलादेश करते समय कृपया जल्दबाजी न करें। फलादेश करते समय अपने खुद के साथ जोर-जबरदस्ती न करें। यथा आपका ध्यान अन्य कार्य में है। आपके पास समय का अभाव है, परन्तु सामने वाला पृच्छक आप पर दबाव डाल रहा है कि मेरी तो ट्रेन जा रही है, बस जा रही है, प्लेन जा रहा है, अभी के अभी बताओ क्या होने वाला है? जो फलादेश आवेश व जल्दीबाजी में होगा वो फलादेश गलत हो जायेगा। क्योंकि फलादेश करते समय चित्त शान्त होना चाहिए।
2. जन्म कुण्डली का अध्ययन एकान्त में करें। गम्भीरतापूर्वक करें। आलतू-फालतू लोगों को पास न बैठायें। जहां तक हो सके दैवज्ञ विद्वान् के पास अकेला पृच्छक (जिज्ञासु) ही होना चाहिए।
3. दैवज्ञ को फलादेश करने के पूर्व सरस्वती अथवा अपने इष्ट देव का स्मरण करना चाहिए।

   रिक्त पाणि न पश्येत् राजानां देवतां गुरुः।
4. फलादेश प्रारम्भ करने के पूर्व जिज्ञासु सज्जन से फल-पुष्प दक्षिणा भेंट इत्यादि स्वीकार करके, उसे प्रभु चरणों में समर्पित करके ही आगे प्रवृत होना चाहिए।
5. यह शास्त्र वचन है कि जो दैवज्ञ ज्योतिषी के समीप और ईश्वर के दरबार में खाली हाथ जाता है, वह खाली हाथ ही वापस लौटता है।
6. आगन्तुक पृच्छक से हमेशा प्रश्न लिखित में लिखकर लें और प्रत्युत्तर हमेशा हस्ताक्षर, तारीख और समय के साथ लिखित में लिखकर देने का साहस रखें, तभी आत्मविश्वास एवं साधना दोनों बढ़ेंगे।

7. घटना घटित होने के बाद उसकी सफलता एवं असफलता के कारणों की पुष्टि ज्योतिषीय सिद्धान्तों के आधार पर निरन्तर करते रहना चाहिए। फलित सत्य होने पर, स्व प्रशंसा न करें, ज्यादा फूले नहीं? क्योंकि यह सत्यखोजी ऋषियों की कृपा से हुआ है तथा फलित असत्य होने पर निराश या हताश नहीं होना चाहिए क्योंकि गलती हमेशा व्यक्तिगत ही होती है। **'मनुष्य मात्र भूल का पात्र'** गलती हममें है, ऋषियों की वाणी में नहीं, ऐस विश्वास रखना चाहिए।
8. जन्मपत्रिका को लग्न के अनुसार देखना सीखें।

शास्त्र कहते हैं–

9. **फलानि ग्रहचारेण सूचयन्ति मनीषिण।**
को वक्तां तारतम्यस्य तमेकं वेधसं विना॥

ग्रहों की स्थिति पर से जानकार दैवज्ञ ज्योतिषी शुभ-अशुभ फलों की सूचना करते हैं, परन्तु (फलों के) कम अथवा अधिक प्रमाण तो एक मात्र जगत्सृष्टा ब्रह्मा के सिवाय कौन कह सकेगा? फिर भी ईश्वर के पश्चात् ज्योतिषी वह पहला व्यक्ति है, जो निश्चयपूर्वक आपके भूत, भविष्य एवं वर्तमान बताने का सामर्थ्य रखता है।

10. **पापत्वे सति नीचत्वे ऊच्चत्वे वापि किं फलम्।**
ते योगाः कि करिष्यन्ति स्वदशानामनागमे।

ग्रहों का अशुभत्व, नीचत्व अथवा उच्चत्व इनका योग होने पर भी यदि उनकी दशा नहीं आती हो तो उनके फल कहां से प्राप्त होंगे? और क्यों मिलना चाहिये? दशाओं में ग्रहों के शुभ-अशुभ फल प्राप्त होते हैं। इस जगह **'दशा'** शब्द से **'महादशा'** और **'अंतर्दशा'** इन दोनों का बोध होता है। दशा में विशेष फल मिलता है।

11. **मित्रशत्रुसमायोगे फलं मिश्रं शुभं विदुः।**
केन्द्रत्रिकोणेप्युच्चत्वे मित्रग्रहसमन्विते॥

मित्र और शत्रु ग्रहों का योग हो तो मिश्रफल जानना चाहिए। केन्द्र त्रिकोण अथवा उच्च, स्थानों में मित्र ग्रहों से युक्त ग्रह हों तो शुभ फल जानना चाहिये।

12. **मित्रराशिगते वापि मन्त्रिणा यदि वीक्षिते।**
मित्रयुक्ते बलवपि राजतुल्यो भवेन्नरः॥

मित्र ग्रहों के स्थान में स्थित, मित्रग्रह से युक्त और दिग्बली एवं अशों में बलवान ऐसा ग्रह यदि बृहस्पति से दृष्ट हो तो मनुष्य उस समय राजातुल्य ऐश्वर्य को भोगता है।

13. कोई ग्रह यदि राहु के साथ बैठा है। जब ऐसे ग्रह की दशा हो तो उस दशा में अरिष्ट होता है।

14. जब लग्नेश अष्टम स्थान में हो तो उस दशा में बहुत दुःख, कष्ट एवं परेशानी होती है।

15. जब ग्रह '**दिग्बल**' से युक्त हो तो उसकी दशा में बड़ी प्रतिष्ठा उसी दिशा (Direction) में मिलती है, जिस दिशा का वह ग्रह स्वामी हो।

16. जब पाप ग्रह (शनि, राहु, केतु या दुःस्थान के स्वामी) की महादशा हो, और उसमें शुभ ग्रह की अंतर्दशा हो, तो आरंभ में कष्ट होता है और अंत में सुख होता है।

17. जब शुभ ग्रह की (चंद्र, बुध, बृहस्पति, शुक्र) महादशा हो, और उसमें पाप ग्रह की अंतर्दशा हो तो आरंभ में सुख होता है और अंत में भय होता है।

18. जब क्रूर (सूर्य या मंगल) ग्रह की महादशा हो, उसमें क्रूर ग्रह की अंतर्दशा, यदि वे दोनों आपस में शत्रु हों तो मृत्यु होती है, परन्तु जब वे आपस में मित्र हों तो जीवन में संदेह होता है।

19. जब दो ग्रह एक दूसरे से छठे अथवा आठवें स्थान में स्थित हों तो उनकी अंतर्दशा में बड़ा भय होता है।

20. जब मंगल (मारकेश) की महादशा में शनि (अन्य मारकेश) की अंतर्दशा हो तो मनुष्य की मृत्यु संभव है।

21. जब पाप ग्रह, क्रूर या शत्रु राशि में स्थित छठे अथवा आठवें स्थान में हों, शुक्र अथवा सूर्य की उस पर दृष्टि हो, तो अपनी दशा में मृत्यु करता है।

22. जब लग्नेश की दशा में, लग्नेश के शत्रु की अंतर्दशा हो तो अकस्मात् मृत्यु हो जाती है। ऐसा सत्याचार्य कहते हैं।

23. जिस ग्रह की महादशा हो उससे 6, 8, 12 स्थानों में स्थित ग्रह की अंतर्दशा शुभ नहीं होती है। शेष स्थानों में स्थित शुभ ग्रह की महादशा तथा पाप ग्रह की अंतर्दशा कष्ट देने वाली होती है।

24. जब दशम लग्न, लाभ, पराक्रम, सुख तथा त्रिकोण (पंचम, नवम) स्थित शुभ ग्रह हो और वह स्वगृही हो अथवा उच्च का हो, अथवा मित्र घर का हो, अथवा मित्र नवांश का हो तो उस ग्रह की दशा शुभ होती है। परन्तु जो ग्रह 8-12, 6-7-2 स्थानों में अथवा अष्टमेश में हो अथवा शत्रु के घर का हो पाप ग्रह हो, अथवा नीच का हो अथवा अस्तगत हो उसकी दशा शुभ नहीं होती है।

25. जब मित्र ग्रह की महादशा में, मित्र ग्रह की अंतर्दशा हो, अथवा शुभ ग्रह की महादशा में शुभ ग्रह की अंतर्दशा हो तो वह शुभ होती है। परन्तु जब शत्रु ग्रह की महादशा में शत्रु ग्रह की अंतर्दशा हो, अथवा पाप ग्रह की महादशा में, पाप ग्रह की अंतर्दशा हो तो शुभ नहीं होती है। यदि शुभ तथा पाप ग्रह अथवा शत्रु तथा मित्र ग्रहों की दशा और अंतर्दशा मिश्रित हो तो मिश्रित फल प्राप्त होता है।

26. उक्त दशाओं के साथ-साथ गोचर में चलायमान ग्रहों का शुभाशुभ प्रभाव जन्मकुण्डली पर अवश्य पड़ता है। इस तथ्य को घटित करके देखना चाहिए तथा बाद में अन्तिम निर्णय पर पहुंचना चाहिए।

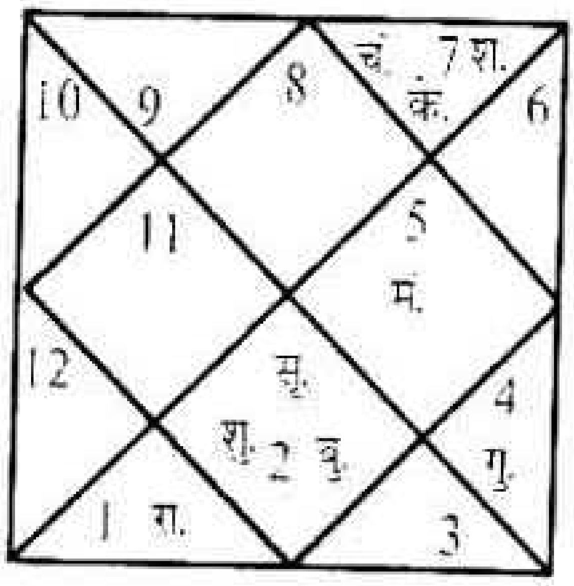
27. पृच्छक जब आपके पास आता है। उस समय शकुन क्या कहते हैं? प्रकृति की रहस्यमय घटनाओं का सूक्ष्म अध्ययन भी मन-मस्तिष्क में रखना चाहिए। वे तत्काल फल चमत्कारी रूप में देते हैं। मान लीजिए कोई आपसे प्रश्न पूछने आया और बिजली चली गई। कोई बर्तन अचानक गिर कर टूट गया? पास में रोने की, झगड़े का कलह की आवाजें आ गई तो जातक का कार्य हर्गिज नहीं होगा। जिज्ञासु सज्जन के आते ही कहीं से कोई फल-मिठाई पुष्प लेकर आ गया। अचानक रोशनी आ गई। टेलीफोन से अचानक शुभ समाचार मिल गये। बैन्ड-बाजे, नगाड़े की आवाज आ गई तो निश्चित ही आगन्तुक सज्जन का कार्य होगा। ज्योतिषशास्त्र के विद्वान् को शुभाशुभ शकुन शास्त्र का भी पूरा-पूरा ज्ञान होना चाहिए।

❑❑❑

दृष्टांत कुण्डलियां

A. अवतार, संत-महात्मा एवं विद्वान्

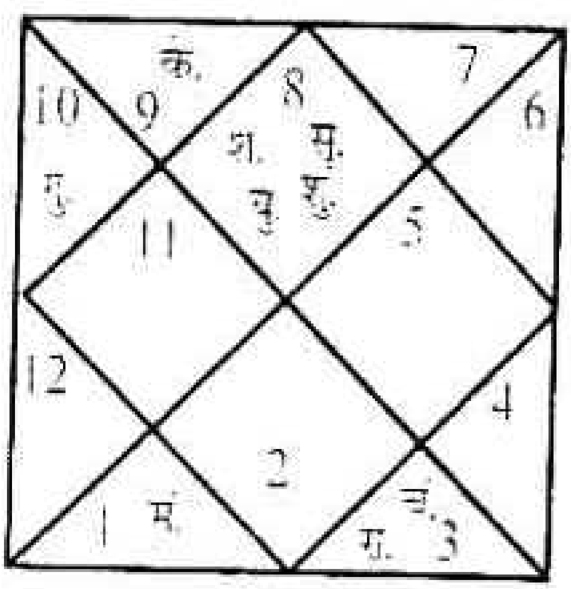
श्री सत्य साईं बाबा





जन्म तिथि-23.11.1926, जन्म समय-6.00 प्रात:।

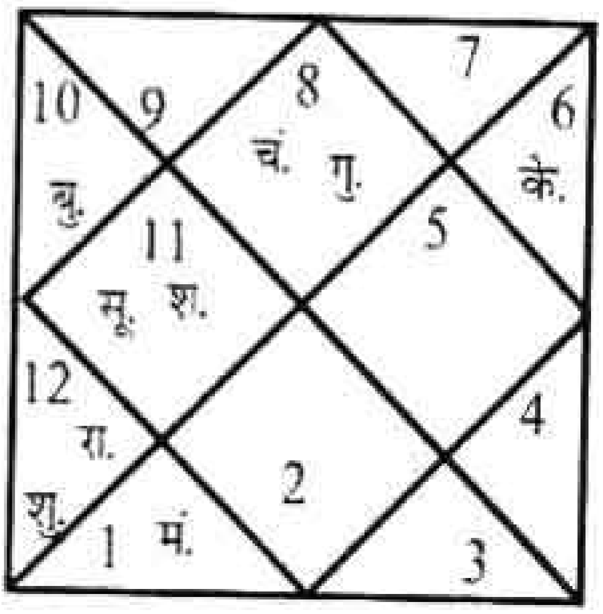
शिरडी के साईं बाबा





जन्म तिथि-18.3.1837, जन्म समय-20.21 रात्रि, जन्म स्थान-पथरी।

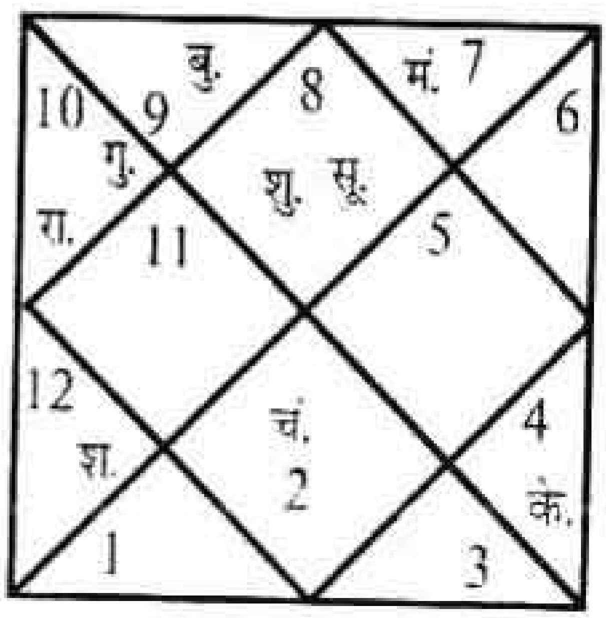
पोप जॉन पॉल (ईसाई धर्मगुरु)





लग्न में बृहस्पति होने से व्यक्ति धार्मिक होता है। बृहस्पति+चंद्र की युति से **'गजकेसरी योग'** बना। शनि केन्द्र में स्वगृही होने से **'शशयोग'** बना। ऐसे व्यक्ति का पराक्रम राजा के समान ऐश्वर्यशाली एवं प्रतापी होता है। शुक्र उच्च का होने से ऐसा व्यक्ति धर्मध्वज होता है।

चक्रवर्ती राजगोपालाचार्य





जन्म तिथि-19.11.1978, जन्म समय-7.00 प्रात:, जन्म स्थान-कलकत्ता। एक ही ग्रह बलवान होकर केंद्र या त्रिकोण में हो तो श्रेष्ठ राजयोग होता है।

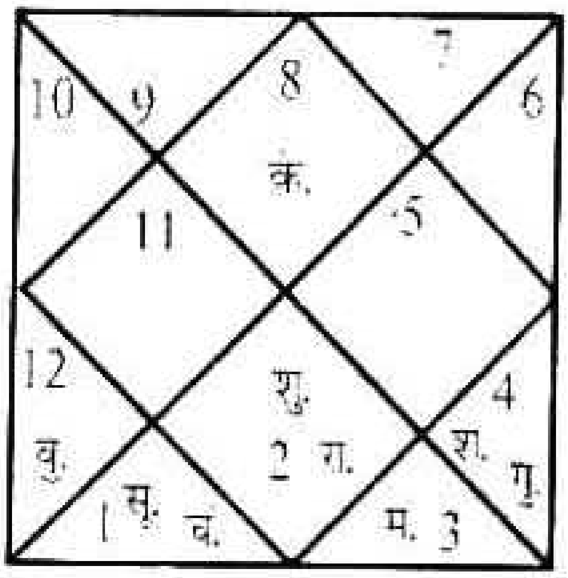
एकोपिकेंद्रभवने नवपंचमे वा।
भास्वन्मयूख-विमली कृत दिग्विभाग।
नि:शेषदोषमहृत्य शुभप्रसूतं।
दीर्घायुषं विगतरोगभयं करोति॥

—मानसागरी श्लोक 3/पृ. 223

जन्म समय में कोई एक भी ग्रह केंद्र या त्रिकोण स्थान में स्थित हो तो वह सूर्य की किरणों के समान प्रकाशमान बड़ी उमर वाला, रोगरहित मनुष्यों का राजयोग

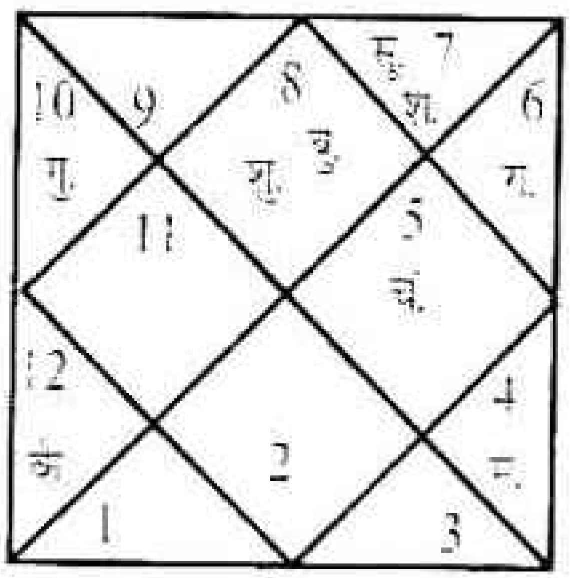
करता है। यह भारत के सर्वप्रथम जनरल की जन्मकुण्डली है अत: बड़ी महत्त्व की कुंडली है। राजयोग कारक उच्च का चंद्रमा लग्न को देखकर, '**लग्नाधिपति योग**' की सृष्टि कर रहा है। दशमेश सूर्य में शुभ ग्रह के साथ है। शनि एवं बृहस्पति से उत्तम श्रेणी एवं पंचमेश ने परस्पर '**परिवर्तन योग**' बनाया जो कि हर प्रकार से उत्तम श्रेणी का राजयोग कहा गया है। चंद्रमा ने '**यामिनीनाथ योग**' तथा सूर्य ने '**पद्मसिंहासन योग**' बनाया है।

जॉन मिल्टन (विश्व कवि)



जॉन मिल्टन जन्म से अंधे थे। सूर्य एवं चंद्रमा छठे स्थान में नेत्र ज्योति का नाश करते हैं। शुक्र राहु के साथ पाप पीड़ित होने से व्यक्ति अंधा होता है। क्योंकि ये तीनों रोशनी देने वाले ग्रह पापाक्रान्त हैं। स्वगृही शुक्र के केन्द्रस्थ होने से '**मालव्य योग**' बना। उच्च का बृहस्पति भाग्य स्थान में होने से इस जातक को उत्तम कवित्व शक्ति एवं ईश्वरीय प्रेरणाएं मिली।

विश्वप्रसिद्ध अंकशास्त्री कीरो

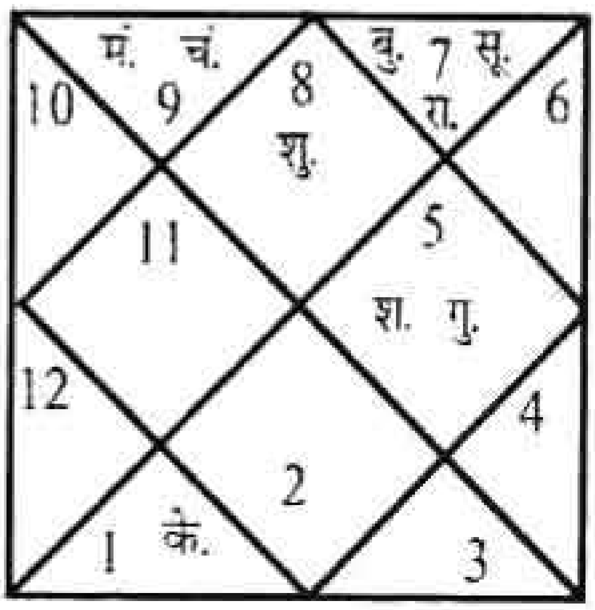




विश्व विख्यात हस्तरेखा विशेषज्ञ एवं अंकशास्त्री 'कीरो' की कुण्डली में द्वादश स्थान में '**किम्बहुनानामक राजयोग**' बना। लग्न में बुध ने बुद्धि की प्रखरता

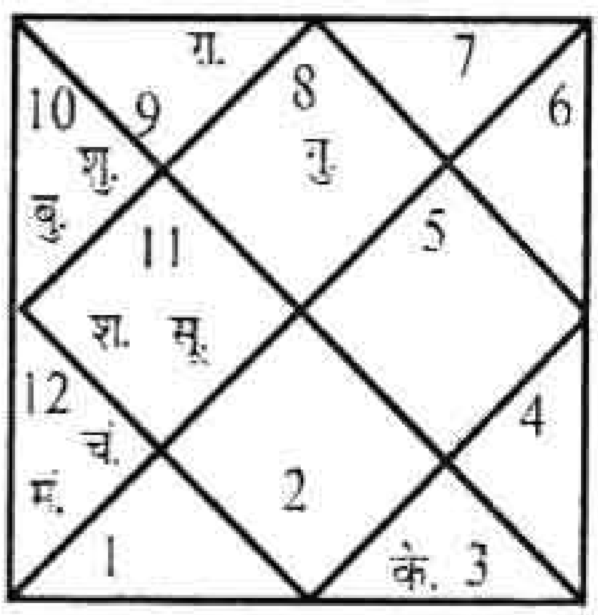
प्रदान की। मंगल व बृहस्पति का परस्पर उच्च दृष्टि संबंध होने से जातक **'भाग्य शूर'** एवं पराक्रमी था।

श्री पाण्डुरंग शास्त्री आठवले (महाराष्ट्र)



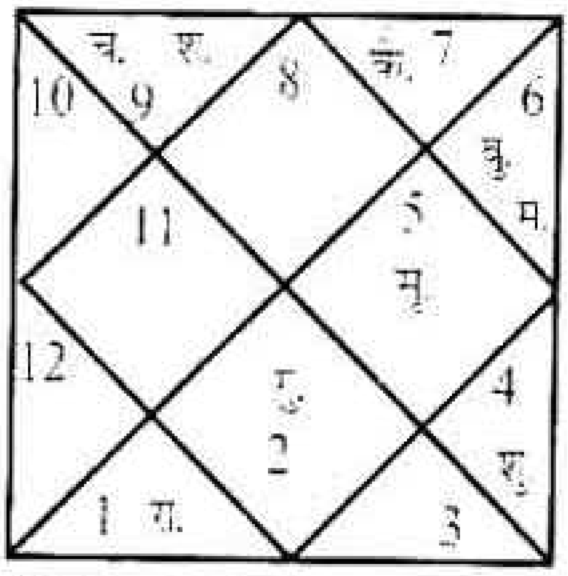
स्वाध्याय मण्डल के प्रणेता। चंद्र+मंगल युति के कारण धन स्थान में **'महालक्ष्मी योग'** के कारण जातक के ट्रस्ट के पास करोड़ों-अरबों को सम्पत्ति है। सूर्य+बुध की युति द्वादश भाव में **'बुधादित्य योग'** बना रही है। जिससे जताक को देश से ज्यादा विदेश में कीर्ति मिली। **आंशिक कालसर्पयोग** के काररण जातक को पुत्र संतति का अभाव रहा।

प्रो. दयानन्द भार्गव



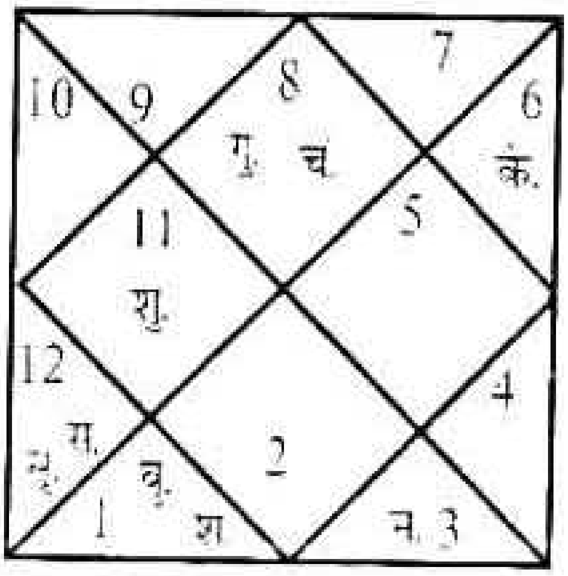
अध्यक्ष व आचार्य संस्कृत विभाग, जोधपुर विश्वविद्यालय। चंद्र+मंगल युति पंचम स्थान में होने के कारण जातक के पुत्र अत्यधिक विद्या सम्पन्न एवं पैसे वाले होंगे। बृहस्पति लग्न में जातक को धर्मध्वज, धार्मिक शिक्षक एवं विद्वान के रुप में प्रतिष्ठा दिलायेगा। उच्च का मंगल जनसम्पर्क एवं पराक्रम की दृष्टि से अतिश्रेष्ठ है।

तांत्रिक जे. नाथ



जन्म तिथि-13.9.1929, जन्म समय-13.20, जन्म स्थान-सिरसा। यहां दशम भाव में सूर्य स्वगृही होने से जातक की कुण्डली में **रविकृत राजयोग** बना। जातक भाभा परमाणु संस्थान में उच्च वैज्ञानिक के पद पर कार्यरत रहा एवं केंद्र में बृहस्पति होने से पुनः तंत्र-मंत्र व आध्यात्म के क्षेत्र में प्रवेश किया।

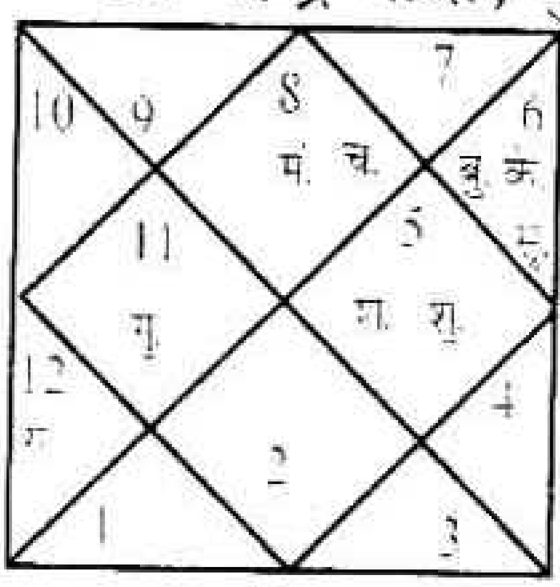
पं. जगन्नाथ भारद्वाज



पं. जगन्नाथ भारद्वाज का नाम भारत व विदेशों में अग्रगण्य है। ज्योतिष में **'लग्नमापक यंत्र, 'दशागणना यंत्र'** की इन्होंने रचना करके एवं भारतीय खगोल विज्ञान पर पुस्तक लिखकर इन्होंने अपना विशिष्ट स्थान ज्योतिष जगत् में बनाया है।

B. राजा, राजपुरुष व राजनेता

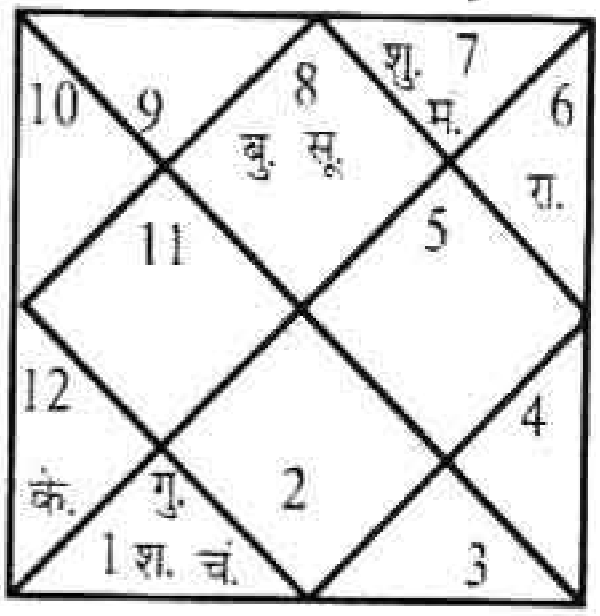
श्री नरेन्द्र मोदी, मुख्यमंत्री (गुजरात)





जन्म तिथि-17.9.1950, जन्म समय-11.00 प्रातः, जन्म स्थान-मेहसाना। श्री नरेन्द्र मोदी का प्रादुर्भाव गुजरात की राजनीति में भूचाल की तरह हुआ। उन्होंने भाजपा की कार्यशैली को रचनात्मक रुप देकर नया मोड़ दिया। लग्न में मंगल के कारण वे दबंग व साहसी व अदभ्य पराक्रम के धनी है।

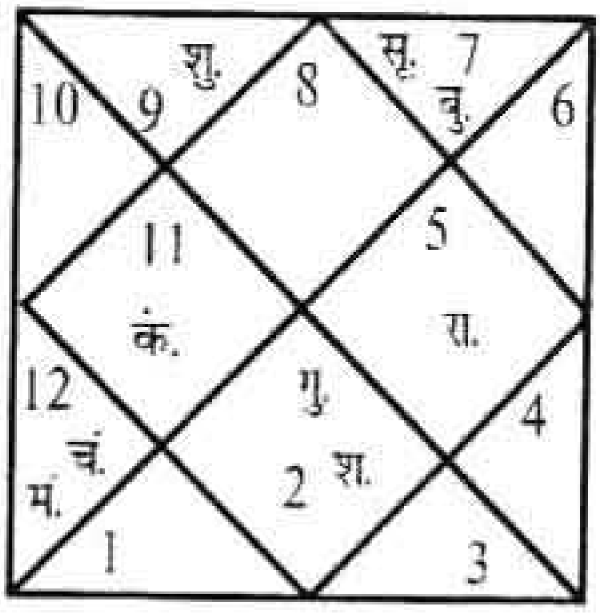
श्री शरद पवार, (महाराष्ट्र क्षत्रप एवं राष्ट्रीय राजनेता)





जन्म तिथि-12.12.1940, जन्म समय-5.30 प्रातः, जन्म स्थान-बारामती। लग्नस्थान में सूर्य+बुध युति **'राजयोग'** प्रदाता है। द्वादश स्थान में स्वगृही शुक्र एवं मंगल होने से हर्षनामक **'विपरीत राजयोग'** बन रहा है। कुण्डली में आंशिक **'कालसर्प योग'** संतति सुख, पराक्रम सुख को भंग कर रहा है।

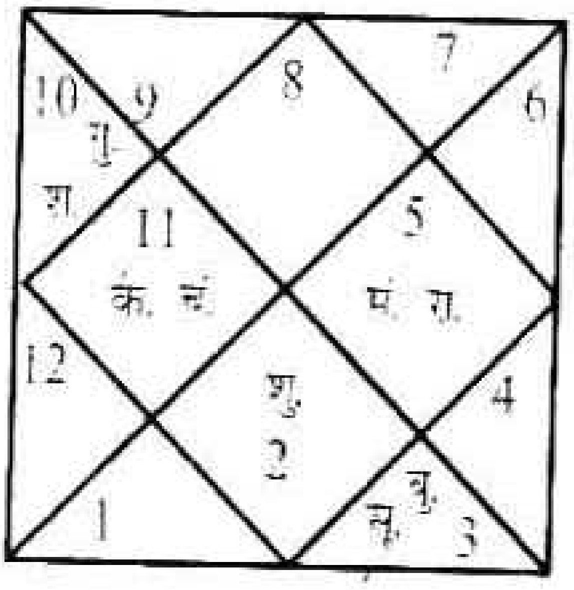
श्री अरुण शौरी (प्रसिद्ध पत्रकार एवं केन्द्रीय मंत्री)





जन्म तिथि-2.11.1941, जन्म समय-9.01 प्रातः, जन्म स्थान-प. पाकिस्तान। केन्द्रस्थ बृहस्पति शनि के साथ **'राजयोग कारक'** है। चंद्र+मंगल **'लक्ष्मी योग'** एवं द्वादश भाव में **'बुधादित्य योग'** भी राजयोग प्रदाता है। यहां कुण्डली में बृहस्पति व शुक्र का परस्पर राशि परिवर्तन योग भी विशेष दृष्टव्य है।

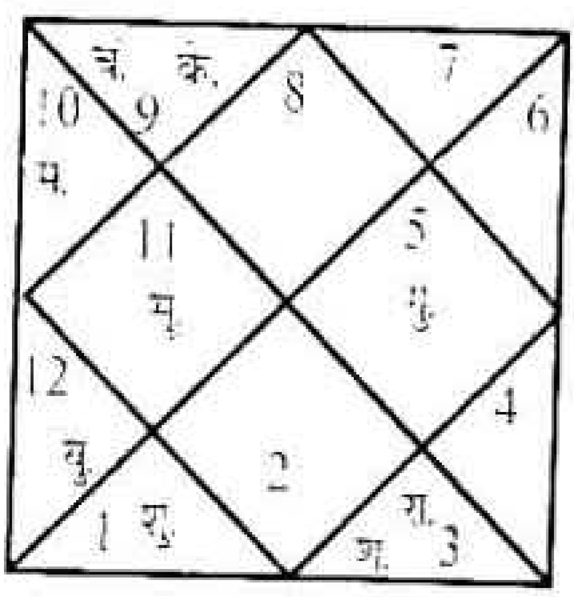
प्रिंसेज डायना





जन्म तिथि-1.7.1961, जन्म समय-17.00 प्रातः, जन्म स्थान-लंदन (सडरिधम)। प्रिंसेज डायना **'आंशिक कालसर्प योग'** के कारण अकाल मृत्यु का शिकार हुई। केन्द्रस्थ स्वगृही शुक्र ने **'मालव्य योग'** के कारण राजकुल में जन्म दिया। बृहस्पति+शनि की युति से **'नीचभंग राजयोग'** भी यहां दृष्टव्य है। बुधादित्य योग अष्टम भाव में है। अष्टमेश अष्टम में बलवान होने से अकाल मृत्यु कराता है।

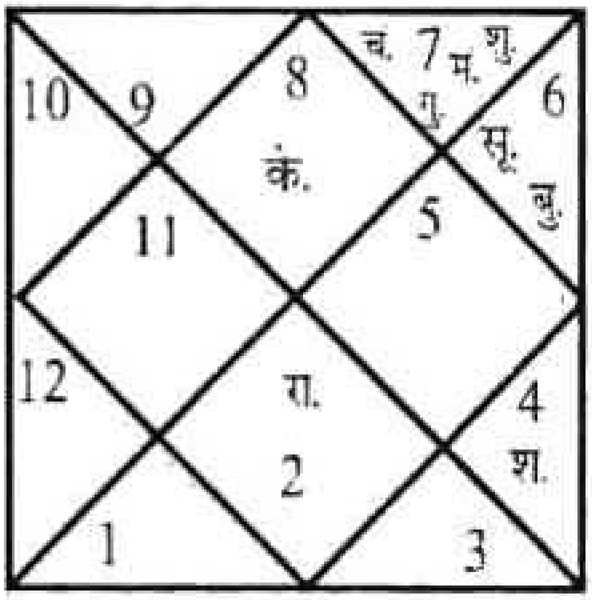
श्री माधवराव सिंधिया





जन्म तिथि-9.3.1945, जन्म समय-24.00 रात्रि, जन्म स्थान-ग्वालियर। केन्द्रस्थ शुक्र राजयोग बना रहा है। दशमेश दशम को पूर्ण दृष्टि देने से भी बलवान राजयोग बना। उच्च का मंगल पराक्रम स्थान में होने से श्री सिंधिया का पराक्रम अद्वितीय था। वे प्रधानमंत्री पद के दावेदार थे। परन्तु **'आंशिक कालसर्प योग'**, सप्तमेश का छठे जाना तथा शनि के आठवें स्थान में राहु के साथ जाने से अकाल मृत्यु हुई।

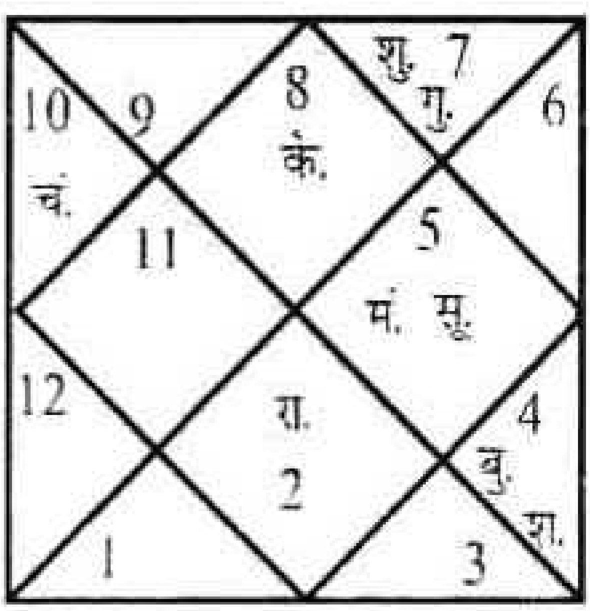
श्रीमति हुसैन वाजेद (प्रधानमंत्री बंगलादेश)





जन्म तिथि-28.9.1946, जन्म समय-11.00 प्रात:, जन्म स्थान-ढाका। बंगलादेश की प्रधानमंत्री की कुण्डली में एकादश स्थान में उच्च के बुध तथा **'बुधादित्य योग'** ने उन्हें प्रधानमंत्री पद की कुर्सी दी। बारहवें स्वगृही शुक्र ने भी उन्हें राजयोग दिया परन्तु **'पूर्ण कालसर्प योग'** के कारण पति का सुख नहीं मिला। उनका कार्यकाल यशस्वी नहीं रहा। वे सदैव मानसिक तनाव में रहीं। उल्लेखनीय है कि कुण्डली के आधार पर ही हमने बेगम खालिदा के पुन: प्रधानमंत्री बनने की भविष्यवाणी 'राशिफल 2000' में की थी और वे 2002 में पुन: प्रधानमंत्री बन गईं।

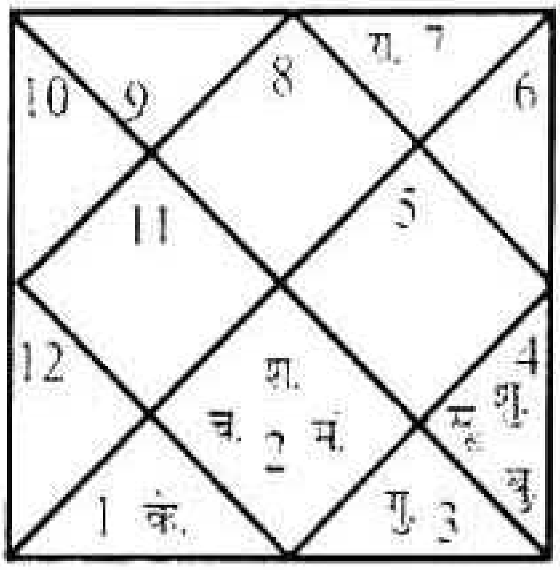
नेपोलियन बोनापार्ट

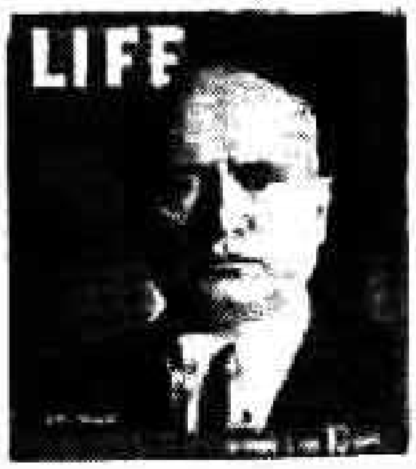




जन्म तिथि-15.8.1769। इस कुण्डली में दशम भाव में स्थित **'रविकृत राजयोग'** बना रहा है। साथ में दिक्बली मंगल भी राजयोग दे रहा है। द्वादश में स्थित स्वगृही शुक्र भी 'राजयोग' प्रदाता है। **'आंशिक कालसर्पयोग'** के कारण उनकी दुखान्त मृत्यु हुई।

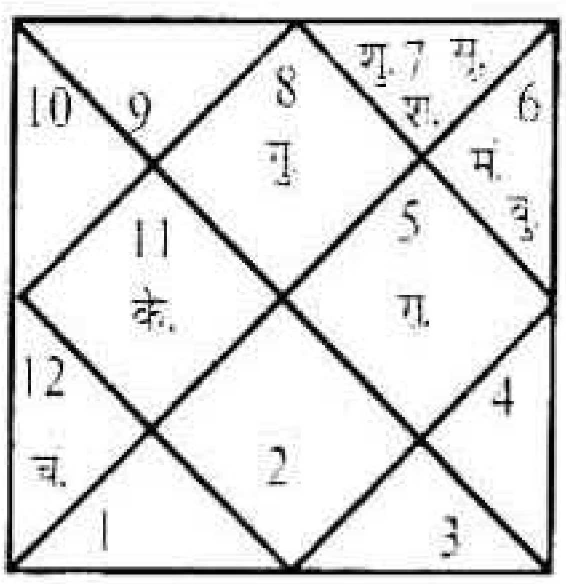
मुसोलिनी





जन्म तिथि-29.7.1883, जन्म समय-15.00 दोपहर, जन्म स्थान-इटली (फ्रांस)। प्रस्तुत कुंडली इटली के शासक व प्रबल राजनेता श्री मुसोलिनी की है। लग्न से या अन्य कोई भी स्थानों से क्रम से सब ग्रह लगातार होने से श्रेष्ठ राजयोग हुआ। यह 'एकावली' नाम राजयोग सर्वश्रेष्ठ राजयोग कहा गया हैं उच्च का चंद्रमा मंगल के साथ लग्न को देख रहा है। जिससे **'लग्नाधिपति योग'** की सृष्टि हुई। सूर्य दशमेश होकर भाग्य स्थान में होने से **'पद्मसिंहासन योग'** बना। शनि पराक्रमेश, सुखेश होकर लग्न को देखने से व्यक्ति का पराक्रम अक्षुण्ण बना रहा। शुक्र व चंद्रमा अर्थात् भाग्येश एवं सप्तमेश ने परस्पर स्थान बदलकर 'परिवर्तन योग' की सृष्टि की है। **'पूर्ण कालसर्पयोग'** ने उन्हें दु:खान्त मृत्यु दी।

श्री भैरोसिंह शेखावत (उपराष्टपति) भारत सरकार



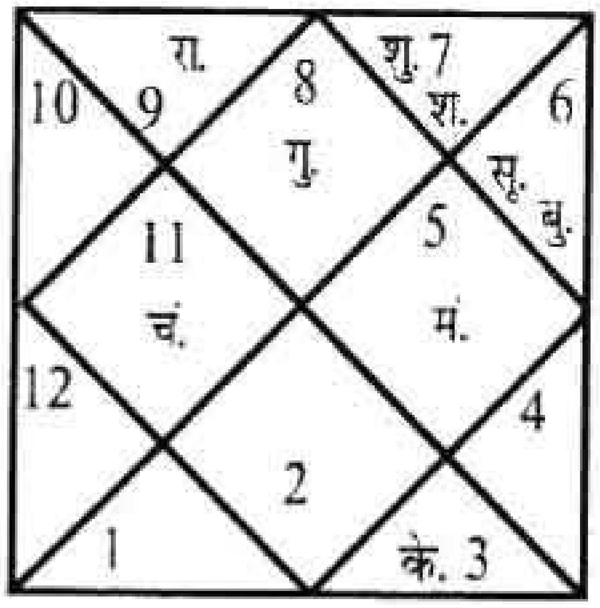


जन्म तिथि-28.10.1923, जन्म समय-9.30 प्रात:, जन्म स्थान-खार्राचयावास। राजयोग की कुंडली के संदर्भ में श्री भैरोसिंह शेखावत की कुंडली सबसे विचित्र है। बृहस्पति केंद्र में तथा लग्नेश मंगल लाभ स्थान में उच्च के बुध के साथ स्थित है। भाग्येश चंद्रमा पंचम भाव मे राजयोग की सृष्टि कर रहा है। सबसे उत्तम योग

शुक्र+सूर्य+शनि की युति है। यह **'नीचभंग राजयोग'** का उत्कृष्ट उदाहरण है। जिसके कारण शेरे राजस्थान श्री भैरोसिंह शेखावत तीन बार विपक्षी नेता के रूप में जीत कर राजस्थान के मुख्यमंत्री पद पर आरुढ़ हुए तथा अपने क्षेत्र के अजेय कीर्तिशाली नेता माने जाते हैं, जिसकी तुलना में दूसरे किसी नेता का नाम नहीं लिया जा सकता।

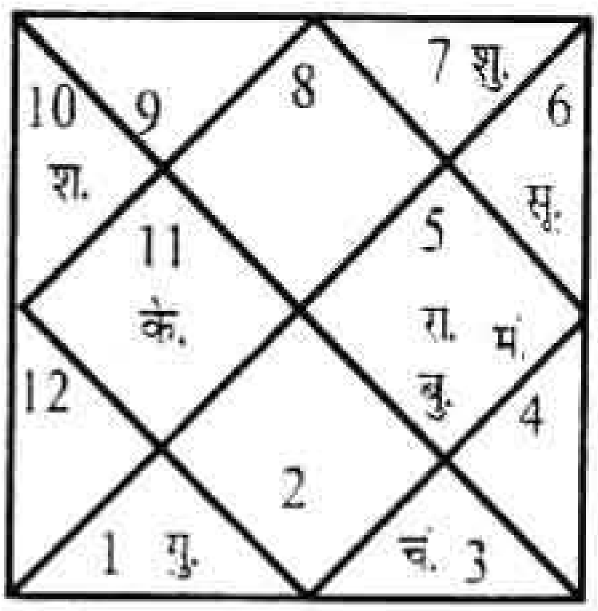
यह विरोधी नेता के रुप में सफलता प्राप्त कर, सत्ता के विरुद्ध संघर्ष करके अनुपम विजय प्राप्त करने वाले नेता की विलक्षण कुंडली है जो ज्योतिष प्रेमियों का मार्गदर्शन करेगी।

माधव सेन मधोक (आई. जी., पुलिस)



डी.आई.जी माधव सेन पुलिस विभाग में विशिष्ट पहचान रखते हैं। लग्न में बृहस्पति होने के कारण जातक तंत्र-मंत्र के जानकार व आध्यात्म के पूरे जानकार रहे।

पूर्व प्रधानमंत्री लालबहादुर शास्त्री

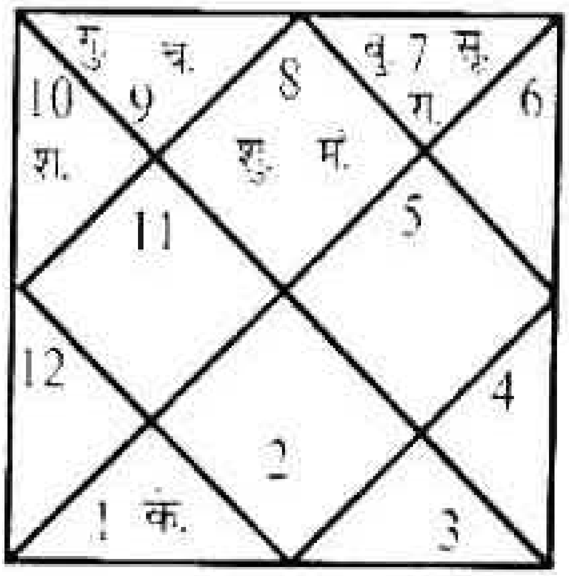




जन्म तिथि-2.10.1904, जन्म समय-10.10 प्रात:, जन्म स्थान-वाराणसी। लग्न का स्वामी केंद्र या त्रिकोण में बलवान् हो तो श्रेष्ठ राजयोग होता है। यहां मंगल दिग्बली है। बुध केंद्रवर्ती होकर उच्चाभिलाषी है तथा चलित में उच्च का हो गया है। शुक्र एवं शनि स्वगृही हैं। फलत: एक ग्रह उच्चाभिलाषी दो, स्वगृही, एक

दिग्बली होने के कारण प्रबल राजयोग बना जिससे वे भारत के प्रधानमंत्री के पद तक पहुंच गए। यद्यपि नवमांश में सूर्य केंद्रवर्ती होकर सुधर गए हैं तथापि दशमेश एवं लाभेश सूर्य, बुध के परस्पर स्थान परिवर्तन ने भी सुंदर राजयोग की सृष्टि की है, जिसे नहीं भूलना चाहिए। चलित में बुध उच्च का हो गया है। तृतीय भाव में स्वगृही शनि ने इन्हें अद्वितीय कीर्ति दी फलतः भारत की धरती में इनके जैसा लोकप्रिय, ईमानदार एवं निष्ठावान प्रधानमंत्री आज तक नहीं हुआ। चंद्रमा शत्रुक्षेत्री होकर आठवें में जाने से इनकी अकाल मृत्यु हुई।

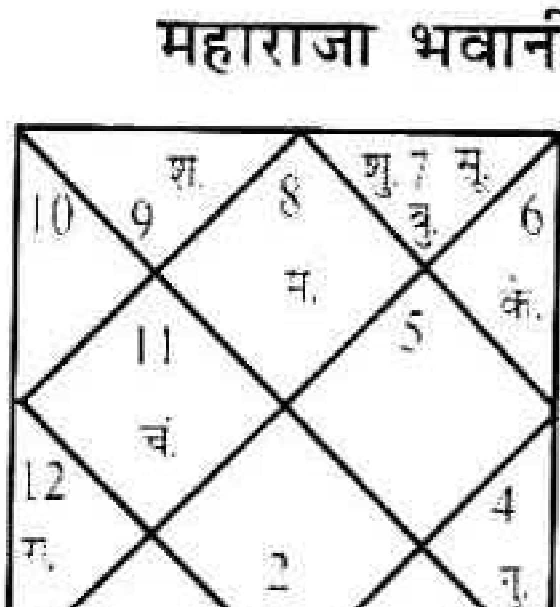
राष्ट्रपति अय्यूब खान (पाकिस्तान)





जन्म तिथि-18.10.1901, जन्म समय-10.00 प्रातः, जन्म स्थान-रावलपिंडी (पाकि.)। यह कुंडली पाकिस्तान के क्रूर राष्ट्रपति अय्यूब खान की है। ज्योतिषशास्त्र के अनुसार यदि 2/6/8/12 स्थानों में ग्रह हो तो **'सिंहासन नामक'** श्रेष्ठ राजयोग होता है। यही योग भारत के पूर्व प्रधानमंत्री श्री मोरार जी देसाई के कुंडली में पड़ा है। यहां मंगल लग्न में स्वगृही, राजयोग कारक बृहस्पति स्वगृही होकर चंद्रमा के साथ **'गजकेसरी योग'** बना रहा है। पराक्रमेश शनि स्वगृही होकर भाग्य स्थान एवं अपनी उच्चराशि को देख रहा है।

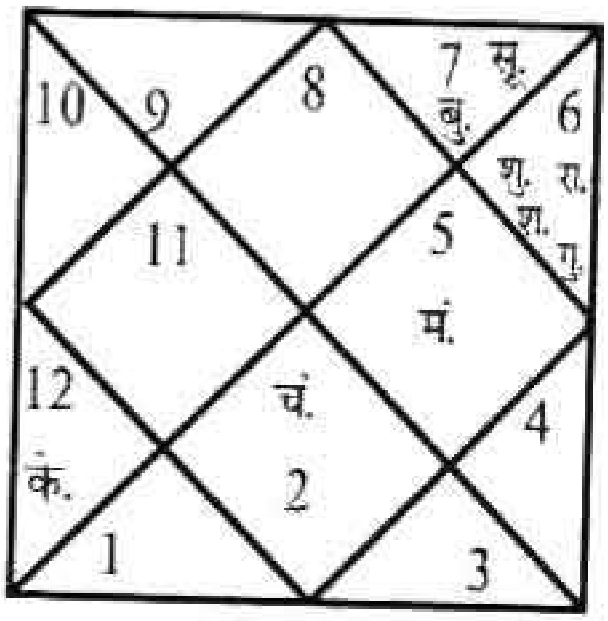
महाराजा भवानी सिंह (जयपुर)





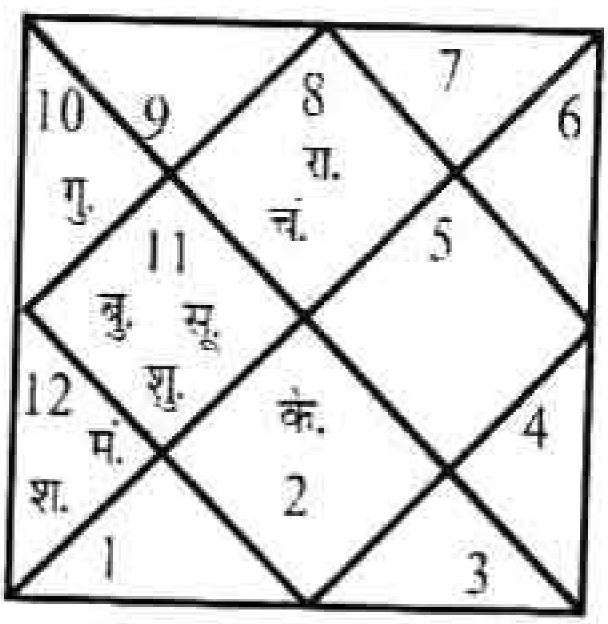
लग्न में स्वगृही मंगल ने इन्हें '**रुचक योग**' में जन्म दिया फलत: वे जन्म से ही राजा थे तथा बड़े होकर सेना में उच्च पद को मंगल के कारण ही प्राप्त किया। द्वादश भावे सूर्य+शुक्र युति से '**नीचभंग राजयोग**' एवं '**बुधादित्य योग**' ने उनकी कुण्डली को ताकतवर बनाया।

राजनेता नाथूराम मिर्धा



जन्म तिथि-20.10.1921, जन्म स्थान-कुचेरा (नागौर)। पूर्व खाद्यमंत्री एवं राजस्थान के अजेय राजनेता को केन्द्रस्थ मंगल ने '**राजयोग**' दिया तथा उच्च का चंद्रमा केन्द्र में होने से '**यामिनीनाथ**' नामक बलवान राजयोग दिया। द्वादश में '**बुधादित्य योग**' ने उन्हें राजस्थान का मंत्री बनाया। लाभ स्थान में चतुष्ग्रह युति ने उन्हें अपने क्षेत्र का अजेय व यशस्वी राजनेता बनाया।

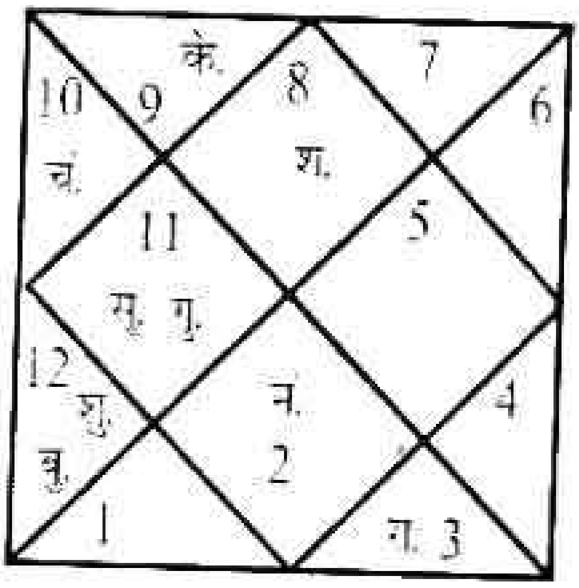
श्रीमति सूर्यकान्ता व्यास, (विधायक जोधपुर)



जन्म तिथि-22.2.1934, जन्म समय-2.12 रात्रि, जन्म स्थान-जोधपुर। जन्म नक्षत्र ज्येष्ठा होने से इनका नाम पड़ा जेठीबाई पर जोधपुर के सभी लोग 'जीजी' के नाम से पुकारते हैं। केन्द्र में '**बुधादित्य योग**' ने उन्हें उत्तम राजयोग दिया। सूर्य

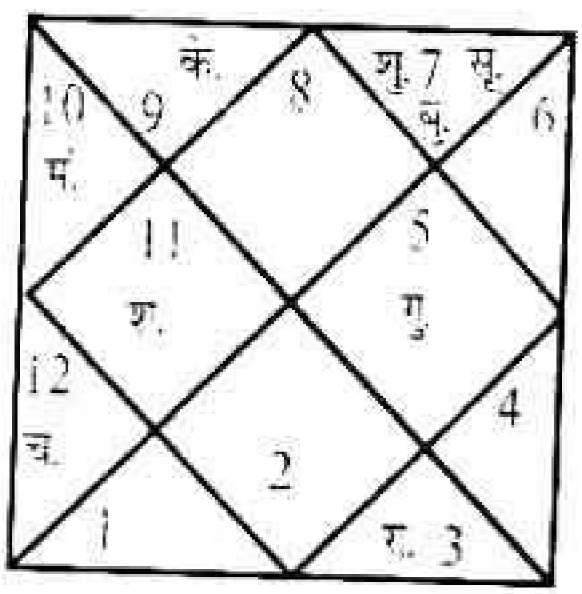
अपने स्थान को पूर्ण दृष्टि से देख रहा है। बृहस्पति नीच का है। चंद्रमा नीच का है। **'पूर्ण कालसर्प योग'** है। दो बार अच्छे मतों से विधायक पद पर निर्वाचित होने के बाद भी वे मंत्री पद पर नहीं पहुंच पाईं।

श्री चम्पालाल सालेचा



जन्म तिथि-28.2.1927, इष्ट 43/45, जन्म स्थान-पचपदरा (बालोतरा)। पंचम भाव में शुक्र+बुध की युति **'नीचभंग राजयोग'** बना रही है। केन्द्रस्थ सूर्य की दृष्टि दशम भाव में राजयोग बना रही है। फलत: श्री चम्पालाल जी जोधपुर के मेयर पद को सुशोभित कर चुके हैं। जोधपुर के सरसंघ चालक रह चुके हैं तथा समाज के कर्मठ कार्यकर्त्ता रह चुके हैं।

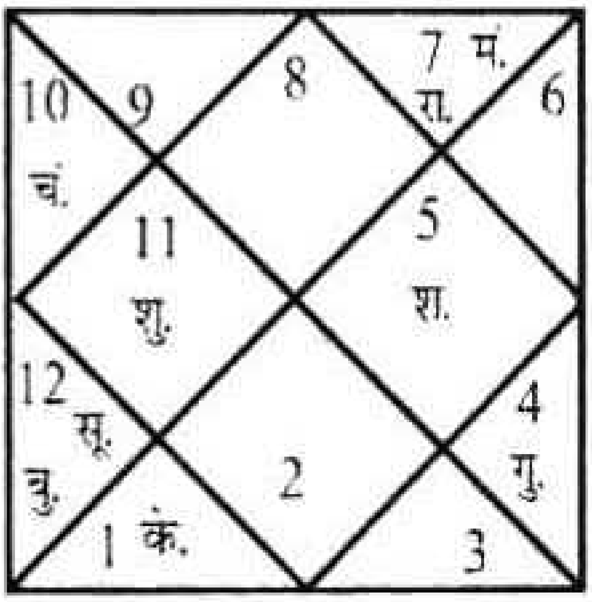
शहीद भगतसिंह





जन्म तिथि-19.10.1907, जन्म समय-9.00 बजे, जन्म स्थान-लायलपुर (पाकिस्तान)। शहीद भगतसिंह की कुण्डली में स्वगृही शनि ने **'शशयोग'** बनाया। उच्च का बृहस्पति भाग्य स्थान में होने से जातक में उत्तम संस्कार कूट-कूट कर भरे हुए थे। साथ ही चंद्र एवं बृहस्पति ने परस्पर राशि परिवर्तन भी किया। द्वादश सूर्य, बुध व शुक्र ने उनको कीर्ति भी दी तथा अकाल मृत्यु भी दी।

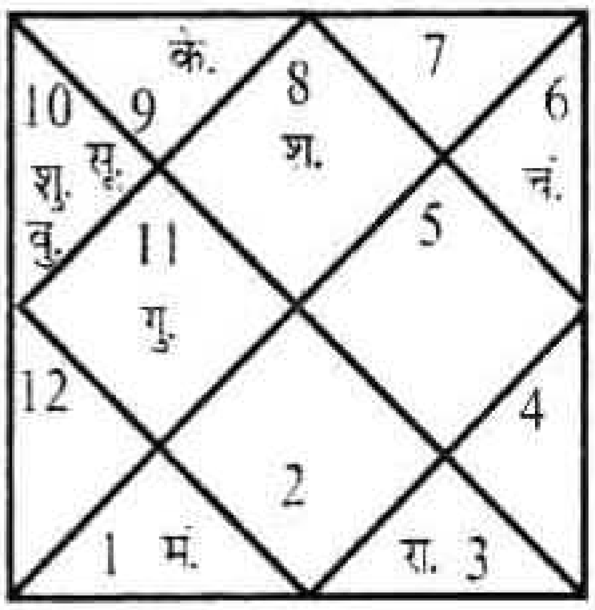
शेख मुजीबुर्रहमान (बंगबन्धु)





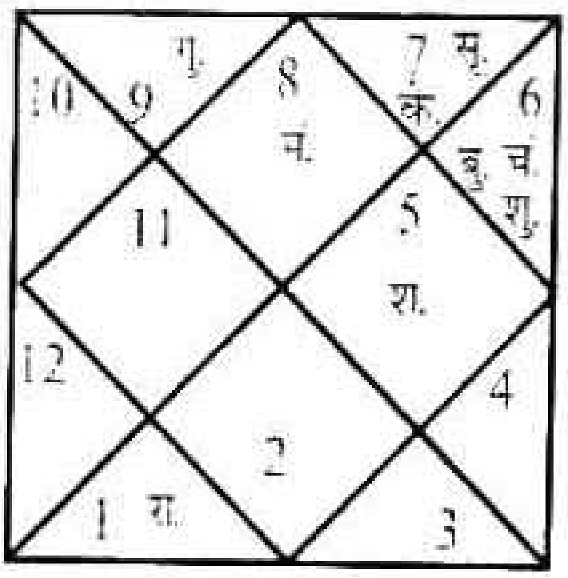
जन्म तिथि-17.3.1920, जन्म समय-11.30 रात्रि, जन्म स्थान-बंगाल। बंगलादेश के राष्ट्रपति शेख मुजीबुर्रहमान 'बंगबन्धु' के नाम से विख्यात थे। **'बुधादित्य योग'** ने उत्तम राजयोग दिया। उच्च के बृहस्पति ने राष्ट्रभक्ति व लोकप्रियता दी परन्तु मंगल व राहु द्वादश में होने से उन्हें अकाल मृत्यु का सामना करना पड़ा।

(शिवसेना प्रमुख) श्री बाल ठाकरे



जन्म तिथि-23.1.1927, जन्म समय-3.30 प्रात:, जन्म स्थान-महाराष्ट्र। केन्द्र में बृहस्पति 'राजयोग' दे रहा है। छठे मंगल स्वगृही होने से शत्रुनाश की ताकत प्रदान कर रहा है। आठवें राहु उन्हें दीर्घजीवी बना रहा है। पराक्रम स्थान में **'बुधादित्य योग'** से जनसम्पर्क तेज रहेगा। पराक्रम स्थान में तीन-तीन ग्रहों की युति जातक का पराक्रम में अद्वितीय वृद्धि करती है।

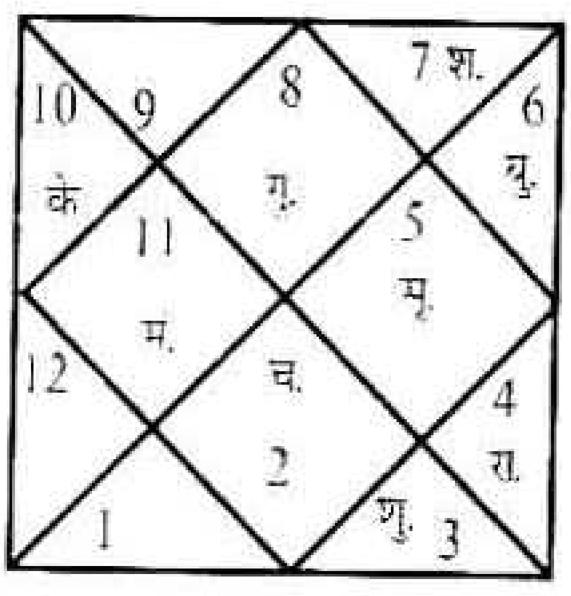
(युवा राजनेता) श्री प्रमोद महाजन





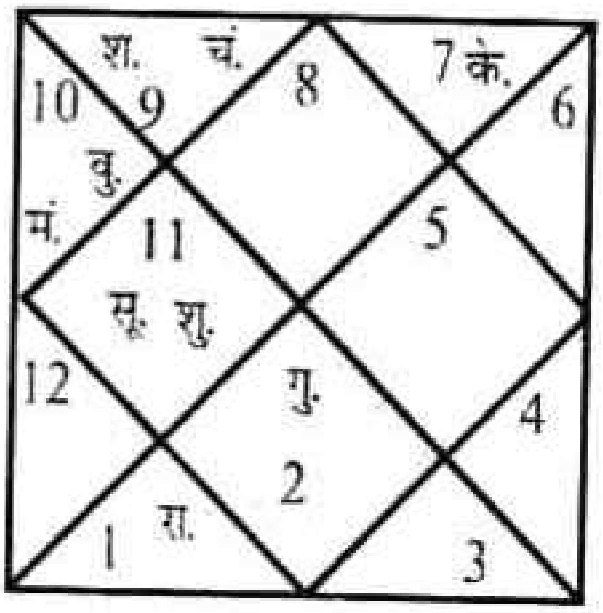
जन्म तिथि-30.10.1948, जन्म समय-13.15 प्रात:, जन्म स्थान-महबूब नगर। लग्न में स्वगृही मंगल '**रुचक योग**' बना रहा है। यह एक ही तेजस्वी योग जातक को महान् ऊंचाईयों के पद पर स्थापित कर रहा है। धन स्थान में स्वगृही बृहस्पति जातक की वाक्शक्ति में, भाषा में शिष्टता-सौम्यता में वृद्धि कर रहा है। लाभ स्थान में उच्च का बुध '**त्रिग्रह युति**' करके बैठा है। यह भी जातक के राजनैतिक प्रभाव को बढ़ा रहा है।

श्री रामनिवास मिर्धा (पूर्व केन्द्रीय मंत्री)



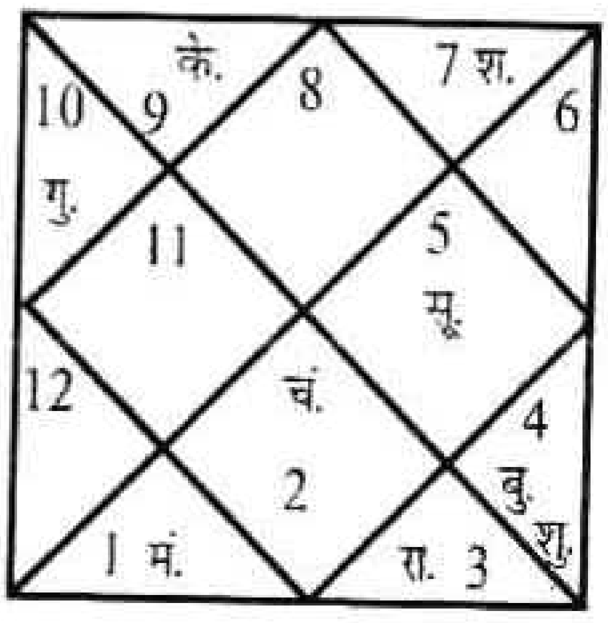
जन्म तिथि-24.8.1924, जन्म समय-12.00 प्रात:, जन्म स्थान-कुचेरा (नागौर) राज.। चारों केंद्र भरे हुए होने से '**आसमुद्रात योग**' बना। फलत: राजनेता व जाटनेता के रुप में जातक की कीर्ति अक्षुण्ण रही। दशम भाव में '**रविकृत राजयोग**' बना। इसके कारण जातक हमेशा केन्द्र में मंत्री पद ही आरुढ़ रहे। सांसद रहे तथा राजस्थान की राजनीति में इनका प्रभाव अक्षुण्ण है।

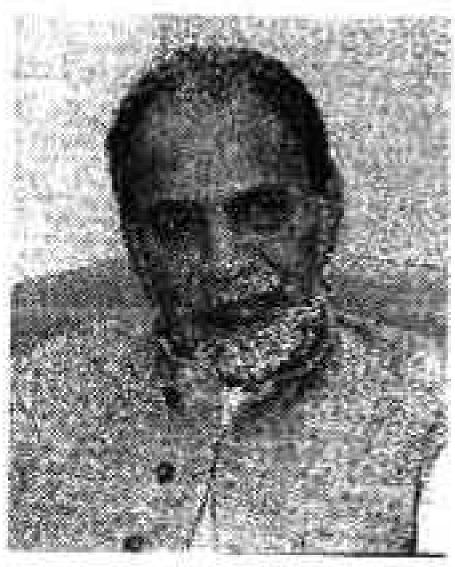
श्री धर्मनारायण माथुर (राजनेता)



जोधपुर में वयोवृद्ध कांग्रेसी नेताओं में अग्रगण्य धर्मनारायण माथुर के तृतीय स्थान में मंगल उच्च का पराक्रम में अद्वितीय वृद्धि कर रहा है। केन्द्रस्थ बृहस्पति भी राजयोग कारक है। सूर्य दशम स्थान को पूर्ण दृष्टि से देख रहा है। यह भी राजयोग की दृष्टि से उत्तम संकेत है।

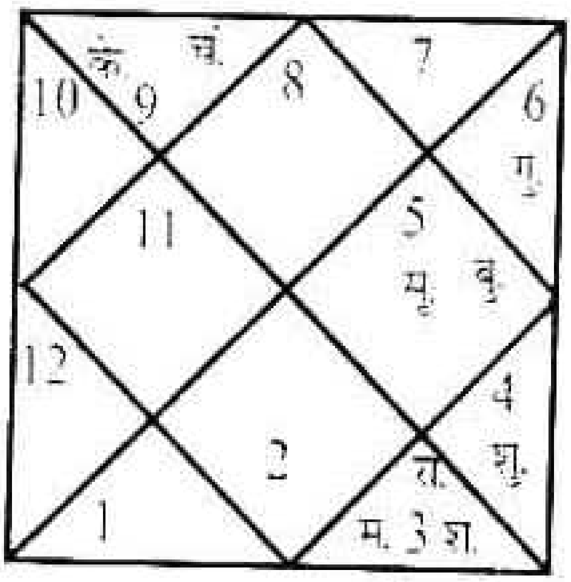
श्री रामकृष्ण हेगड़े (मुख्यमंत्री कर्नाटक)





जन्म तिथि-29.9.1926, जन्म समय-12.15 दोपहर, जन्म स्थान-बैंगलोर। इस कुण्डली में दशम भाव में **'रविकृत राजयोग'** ने इन्हें कर्नाटक के मुख्यमंत्री पद पर पहुंचाया। उच्च का चंद्र केन्द्र में होने से **'यामिनीनाथ योग'** तथा स्वगृही मंगल छठे होने **'विपरीत राजयोग'** ने इन्हें राजा जैसा वैभव वर्चस्व दिया। यहां अष्टम राहु ने दीर्घायु दी है।

श्री पी. चिदम्बरम् (केन्द्रीय मंत्री)

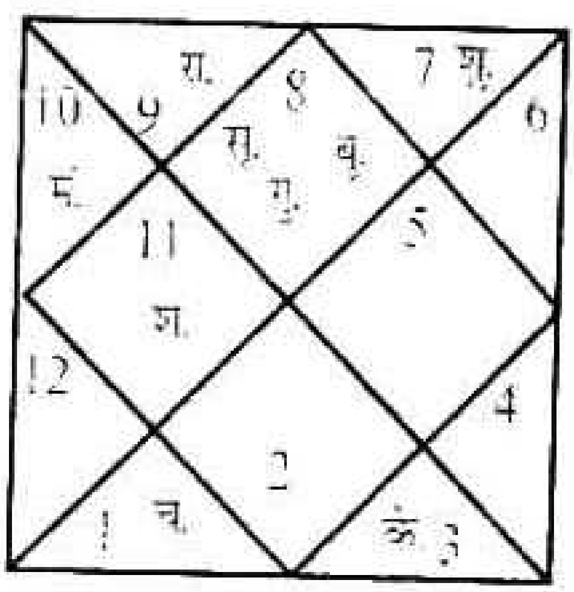




जन्म तिथि-16.9.1945, जन्म समय-11.47, जन्म स्थान-केरीकुड्डी। पी. चिदम्बर की कुण्डली में 'बुधादित्य योग' शक्तिशाली है परन्तु दसम स्थान में स्वगृही सूर्य के कारण '**रविकृत राजयोग**' ने इन्हें केन्द्र में मंत्री पद दिया। षष्टेश होकर मंगल का अष्टम में जाने से 'हर्षनामक' **विपरीत राजयोग** भी दिया।

C. फिल्म अभिनेता

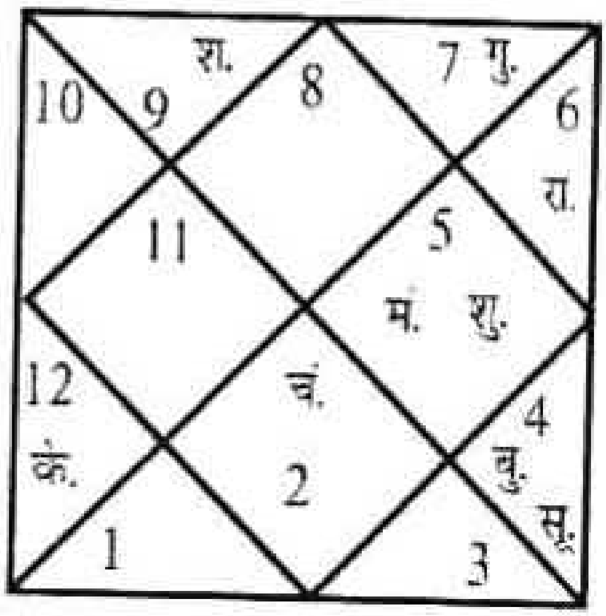
अभिनेता धर्मेन्द्र





जन्म तिथि-8.12.1935, जन्म समय-6.00 प्रात:, जन्म स्थान-दिल्ली। केन्द्र में शनि ने '**शशयोग**' बनाया। जिससे उनके पास राजातुल्य ऐश्वर्य है। लग्न में 'बुधादित्य योग' ने उन्हें फिल्मों में सफलता दी तथा स्वगृही शुक्र द्वादश में होने से उन्हें अभिनय के क्षेत्र में अद्वितीय सफलता देता है।

संजय दत्त





जन्म तिथि–29.7.1957, जन्म समय-15.00 दोपहर:, जन्म स्थान-मुम्बई। संजयदंत की कुण्डली में केन्द्रस्थ शुक्र अभिनय की विशे प्रतिभा देता है। भाग्य स्थान में 'बुधादित्य योग' ने इन्हें पिता का ऐश्वर्य व सम्पत्ति दी। **'यामिनीनाथ योग'** माता का अच्छा नाम विरासत में देता है परन्तु द्वादश स्थान में बृहस्पति उनकी राष्ट्र भक्ति के संदेह के घेरे में डालता है।

'खलनायक' फिल्म से संजय दत्त को बहुत प्रसिद्धि मिली। उनकी कुंडली में भी खलनायक वाले ग्रह दिखाई दे रहे है। वृश्चिकलग्न वाले व्यक्ति धनु के धनी और दु:साहसी होते है। फिल धनस्थान में शनि, पंचक भाव में केतु, केन्द्र में शुक्र और मंगल व्यक्ति को अधैर्यशाली एवं नकारात्मक प्रवृत्तियों से जोड़ देता है। धर्म, समाज सेवा एवं परोपकार का कारक पंचमेश बृहस्पति बारहवें चला गया है फलत: व्यक्ति को धर्म, परोपकार, जनकल्या व स्वजाति सेवा प्राचीन संस्कारों के प्रति श्रद्धा से दूर कर देता है। इतना ही नहीं इनकी संतान भी इन कार्यों से दूर रहेगा, क्योंकि पंचमेश दूषित है।

शनि का प्रभाव–संज की वृषभ राशि की साढ़े साती दिनांक 17.4.98 से शुरु हुई। दिनांक 23.7.2002 को सुबह से शनि मिथुन राशि में प्रवेश कर गया है। यहां से उनकी राशि से शनि दूसरे भाव में रहेगा। अढ़ाई वष तक शनि की साढ़े साती का अंतिम चरण रहेगा। बृहस्पति शुभप्रद रहेगा और शनि देव के अशुभ फलों को कम करेगा। शनि की साढ़े साती का भ्रमण इनके लिए परेशानी का कारण बनेगा।

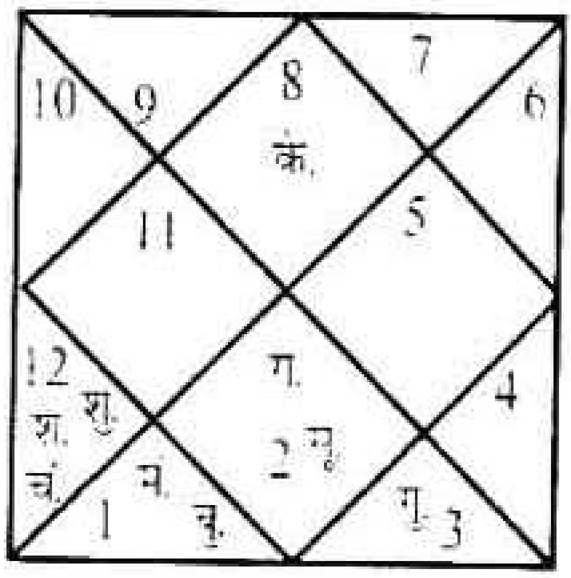
जन्म पत्रिका में सप्तम भाव में उच्च का चंद्रमा निर्बल है क्योंकि उसके दूसरे व बारहवें भाव खाली है। कोई भी शुभ ग्रह चंद्रमा को नहीं देख रहा है। अत: पत्नी सुंदर होगी, पर उससे खट-पट होती रहेगी। चंद्रमा लग्न पर अपनी नीच राशि को देख रहा है। फलत: आत्मशांति के साधन कमजोर रहेंगे। आंतरिक दृष्टि से जातक में हीनभावना रहेगी। बन्दूक वाली घटना जिसको लेकर उन्हें जेल भेजा गया, कोई

साधारण घटना नहीं थी। उनकी मानसिकता इसी चंद्रमा के कारण अति विचित्र है। केन्द्र में मंगल और शुक्र की अग्नि राशि में विस्फोटक स्थिति है। वे कहीं भी, कुछ भी कर सकते हैं, क्योंकि नवमांश में मंगल बली, वर्गोत्तमी होकर नीच राशि में है।

आने वाला समय–आने वाला समय चुनौतियों और खतरे से परिपूर्ण होगा। बृहस्पति में बुध व केतु का अंतर 2006 तक कठिन परिस्थितियों का सूचक होगा। 7 अप्रैल 2000 से 5 सितम्बर 2004 तक का समय शनि प्रभावित रहेगा। इस समय दाम्पत्य जीवन में कटुता आएगी।

व्यापार में रुकावट, शारीरिक कष्ट, अशांति और तनाव रहेंगे। शनि का उपाय ही जातक को शांति प्रदान करेगा।

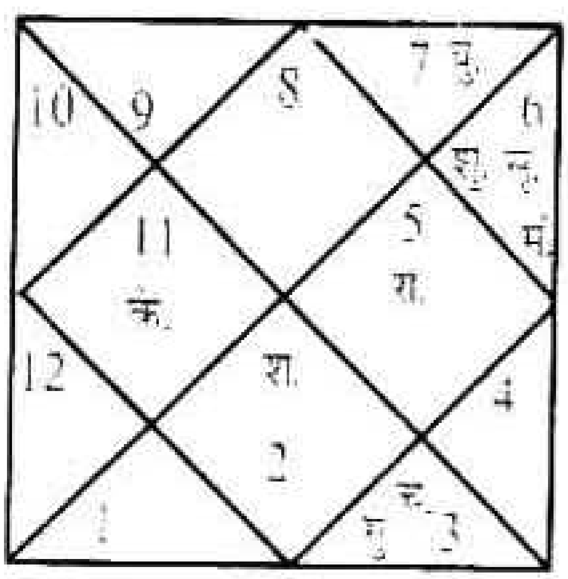
अभिनेत्री माधुरी दीक्षित





जन्म तिथि-15.5.1966, जन्म समय-20.00, जन्म स्थान-रतनगिरि। पंचम स्थान में उच्च का शुक्र ने इन्हें अभिनय क्षेत्र में सफलता दी। उच्च का शुक्र के साथ चंद्रमा ने इन्हें अद्वितीय सौन्दर्य दिया। छठे स्थान में स्वगृही मंगल उन्हें '**विपरीत राजयोग**' व उच्च का ससुराल सुख देता है।

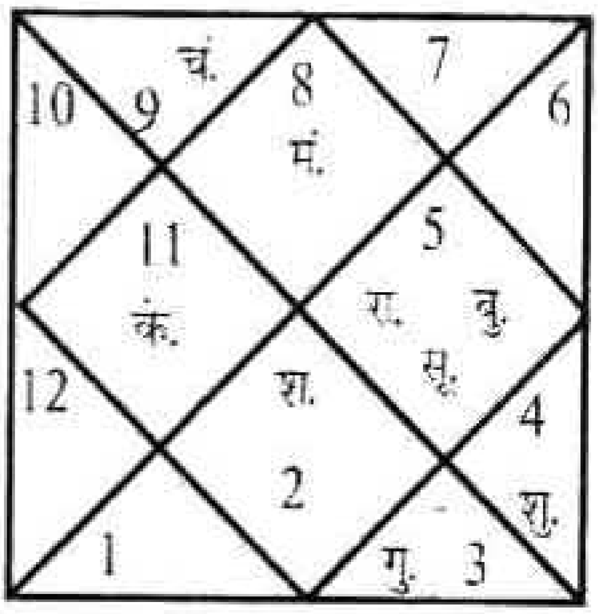
अभिनेत्री आशा पारिख





जन्म तिथि-2.10.1942, जन्म समय-12.00, जन्म स्थान-मुम्बई। आशा पारीख की कुण्डली में '**गजकेसरी योग**' बना है। लाभ स्थान में शुक्र अभिनय क्षेत्र में बड़ा नाम दिया। लाभ स्थान में '**त्रिग्रह युति**' ने आशा पारीख को अपने व्यवसाय में उन्नति दी, बड़ा नाम पद व प्रतिष्ठा पदान की।

अभिनेत्री सायराबानो

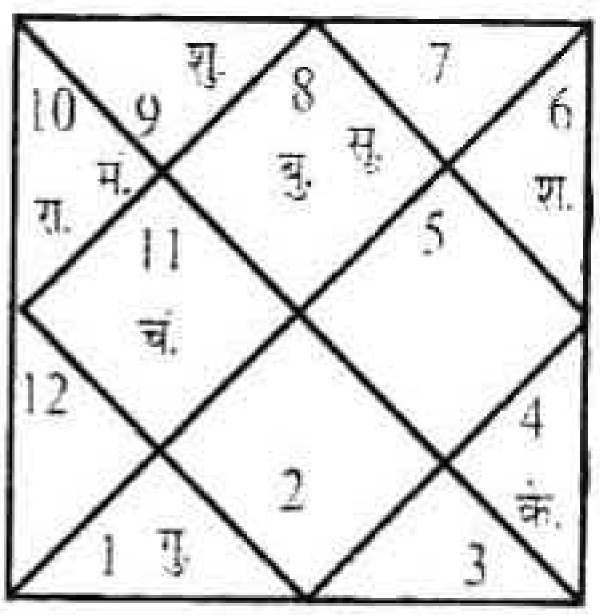




श्रीमति सायराबानो की कुण्डली में '**रुचक योग**', '**रविकृत राजयोग**', '**बुधादित्य योग**' विशेष दृष्टव्य है। भाग्य में शुक्र ने अभिनय क्षेत्र में सफलता दी। परन्तु वैभवशाली पति का सुख उपरोक्त तीनों राजयोग ने दिया। पंचमेश बृहस्पति आठवें होने से '**संतानहीन योग**' बना।

D. खिलाड़ी

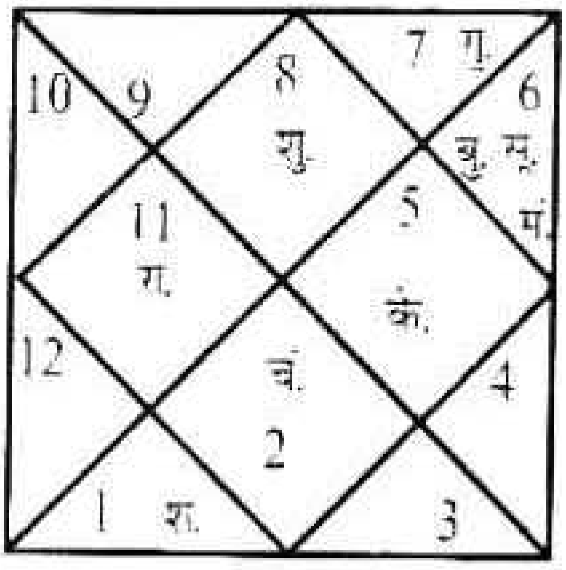
खिलाड़ी इमारान खान





जन्म तिथि-25.11.1952, जन्म समय-6.45, जन्म स्थान-लाहौर (पाक.)। इमरान खान की कुण्डली में '**बुधादित्य योग**' मुखरित है। तृतीय स्थान में मंगल उच्च का है। भाग्येश चंद्रमा केन्द्र में उत्तम कीर्ति एवं किक्रेट खेलों में सफलता दे रहा है।

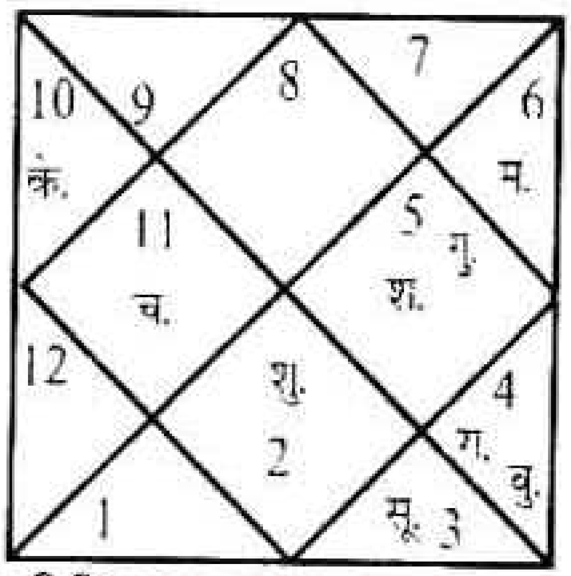
श्री अनिल कुंबले





जन्म तिथि-17.10.1970, जन्म समय-9.50 प्रातः, जन्म स्थान-बैंगलोर। चारों ग्रह केंद्र में होने से '**आसमुद्रात् योग**' बना है। चंद्रमा उच्च का '**यामिनीनाथ योग**' बना रहा है। एकादश भाव में बुध उच्च का होकर '**बुधादित्य योग**' बनाकर इन्हें खेल के मैदान में बराबर सफलता दे रहा है।

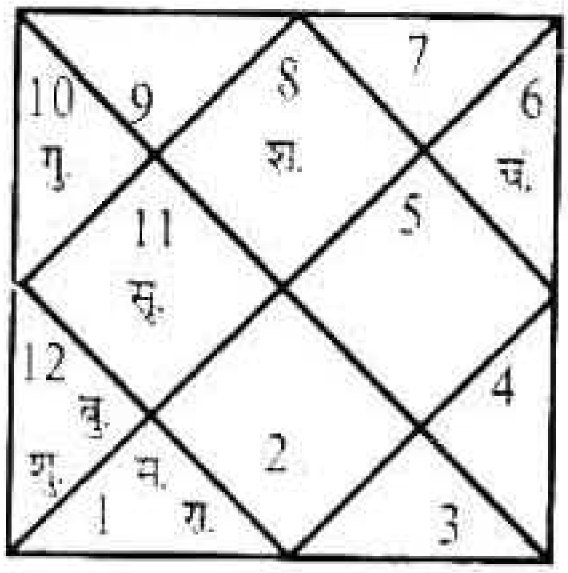
श्री हरभजन सिंह





जन्म तिथि-3.7.1980, जन्म स्थान-पंजाब। शुक्र स्वगृही होकर केन्द्र में होने से '**मालव्य योग**' बना। बृहस्पति केन्द्र में तथा मंगल लाभ स्थान में होने से खेलों में बराबर लाभ हुआ, सफलता मिली तथा कीर्ति मिली। चंद्रमा भाग्येश होकर केतु में है। शनि दशम में '**करोड़पति योग**' बना रहा है।

पार्थिव

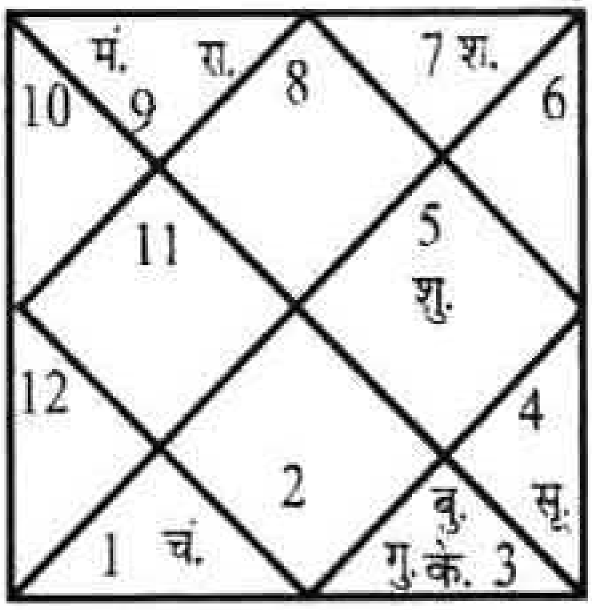




जन्म तिथि-9.3.1985, जन्म स्थान-अहमदाबाद (गुजरात)। यहां मंगल स्वगृही होकर छठे होने से '**हर्षनामक विपरीत राजयोग**' के कारण खेल में सफलता मिली। सूर्य अपने घर दशम भाव को पूर्ण दृष्टि से देख रहा है। शुक्र एवं बुध के कारण '**नीचभंग राजयोग**' बना। जो पूर्ण सुख, साम्राज्य व सफलता दे रहा है।

E. चर्चित व्यक्तित्व

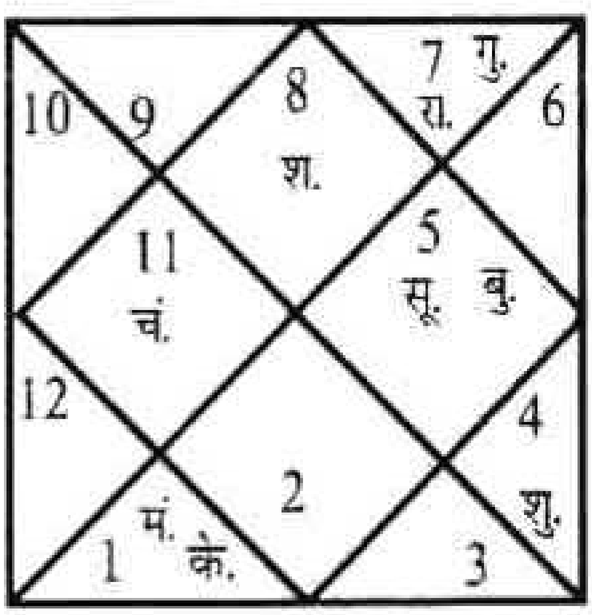
हर्षद मेहता, प्रसिद्ध शेयर ब्रोकर





जन्म तिथि-24.7.1954, जन्म समय-14.30 प्रांत:। हर्षद मेहता की कुण्डली में शनि उच्च का है। शुक्र केन्द्रवर्ती है। बुध अष्टम स्थान में स्वगृही है। अत: '**सरल नामक विपरीत राजयोग**' बना। हर्षद मेहता के धन स्थान में राहु ने उन्हें दिवालिया घोषित किया। तथा अष्टम स्थान में बृहस्पति+बुध+केतु तथा छठें चंद्रमा ने अकाल मृत्यु दी।

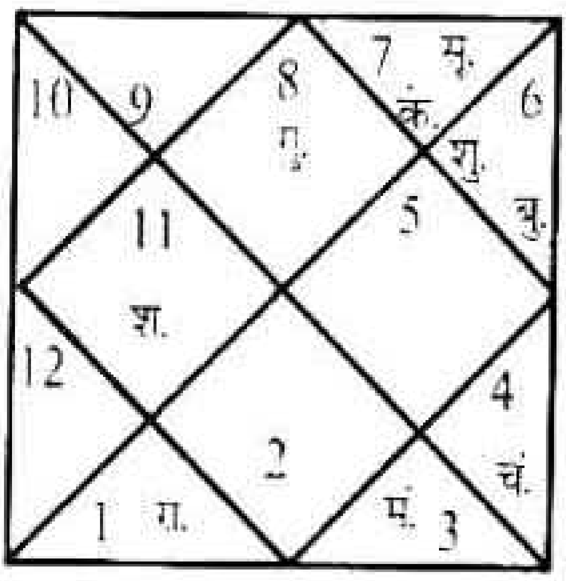
माईकल जैकसन (पॉप सिंगर)





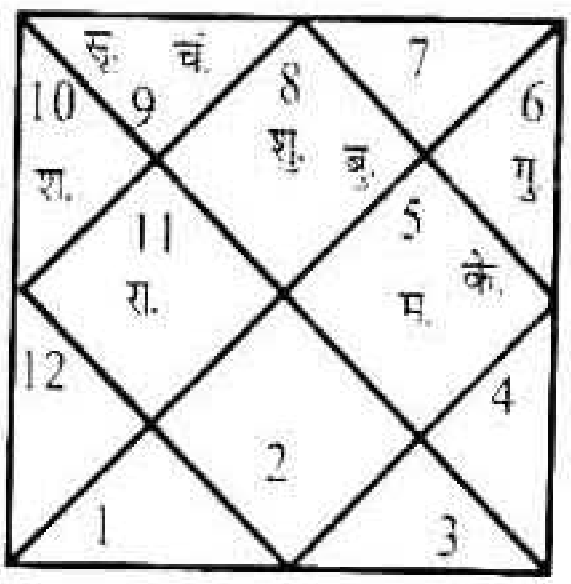
जन्म तिथि-29.8.1958, जन्म समय-13.30, जन्म स्थान-अमेरिका। माईकल जैकसन की कुण्डली में '**रविकृत राजयोग**', '**बुधादित्य योग**' शक्तिशाली है। षष्टेश मंगल छठे स्थान स्वगृही होने से '**हर्षनामक विपरीत राजयोग**' बना। शनि लग्न में होने से रंग काला है तथा बृहस्पति बारहवें अपसंस्कृति के प्रणेता के रुप में इन्हें प्रसिद्धि दे रहा है।

कुख्यात डाकू मानसिंह



कुख्यात डाकू मानसिंह की कुण्डली में शनि केन्द्रस्थ होकर **'शश योग'** बना रहा है। चंद्रमा स्वगृही भाग्य में होने से भाग्यशूर रहे। उच्च बुध लाभ स्थान में **'नीचभंग राजयोग'** बना रहा है। लग्नस्थ बृहस्पति होने से राष्ट्रीयता इनमें कूट-कूट कर भरी हुई थी। राहु छठे होने शत्रु इनके नाम से भयभीत रहते थे।

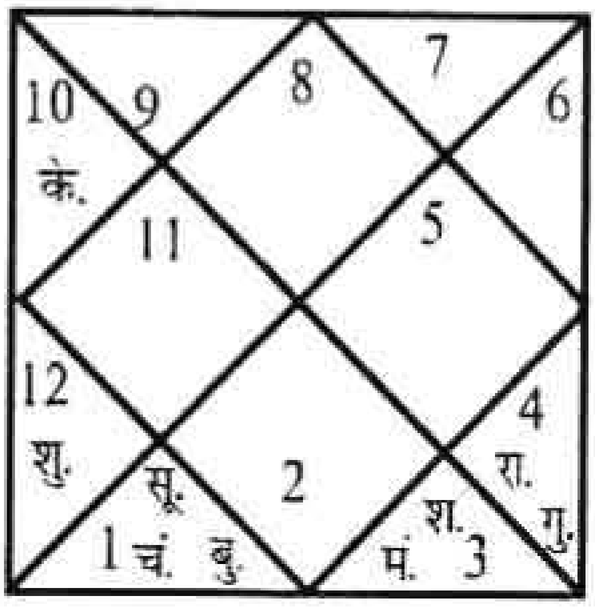
श्री धीरुभाई अम्बानी, प्रसिद्ध उद्योगपति





जन्म तिथि-28.12.1932, जन्म समय-6.37 प्रातः, जन्म स्थान-चोखाड। धीरु भाई अम्बानी के धन स्थान में सूर्य एवं चंद्रमा दोनों राजा ग्रह होने से वे महाधनी रहे। शनि स्वगृही पराक्रम स्थान में होने से पराक्रम तेज रहेगा। शुक्र केन्द्र में, मंगल केन्द्र में, बुध केन्द्र में राजयोग में वृद्धि दे रहे हैं।

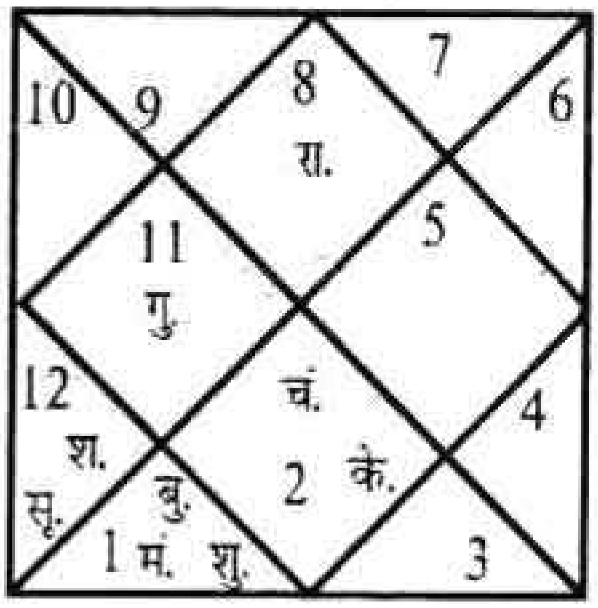
श्रीमति राधा भालोटिया



जन्म तिथि-23.4.1944, जन्म समय-22.00, जन्म स्थान-मुम्बई। चारों केन्द्र खाली होते हुए भी शुक्र उच्च का, बृहस्पति उच्च का सूर्य उच्च का है। फलतः जातक अरबपति है। कलकत्ता, गोरना व जोधपुर में व्यापार है।

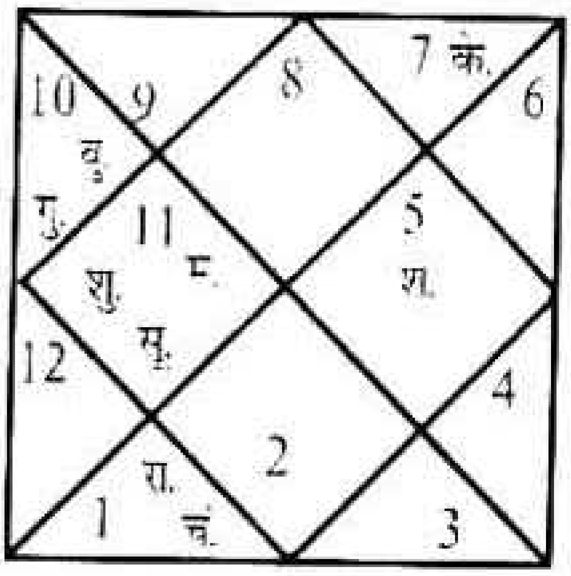
F. अनुभव का खजाना

श्री चैनसिंह (S.H.O.)



'पूर्ण कालसर्पयोग' जातक को लगातार मानसिक चिंता एवं तनाव में रख रहा है। बृहस्पति केन्द्र में, चंद्रमा उच्च का केन्द्र में **'यामिनीनाथ योग'** बना रहा है। मंगल षष्टेश होकर षष्टम में स्वगृही **'हर्षनामक विपरीत राजयोग'** बना रहा है। जातक पुलिस विभाग S.H.O. पद पर रहा और यशस्वी रहा।

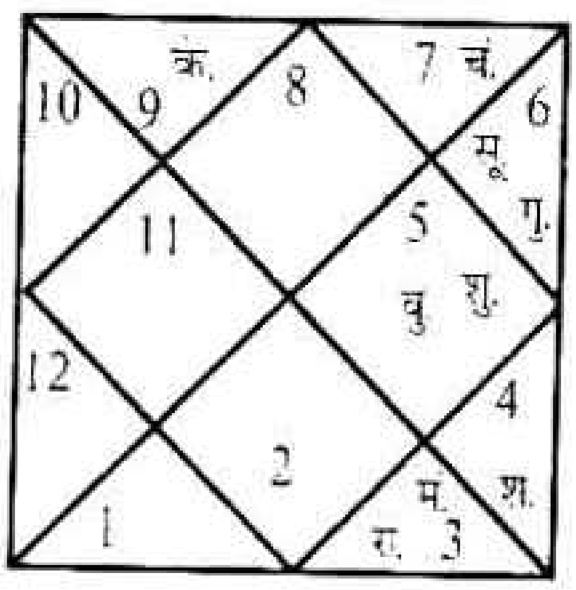
श्रीमति गायत्री देवी





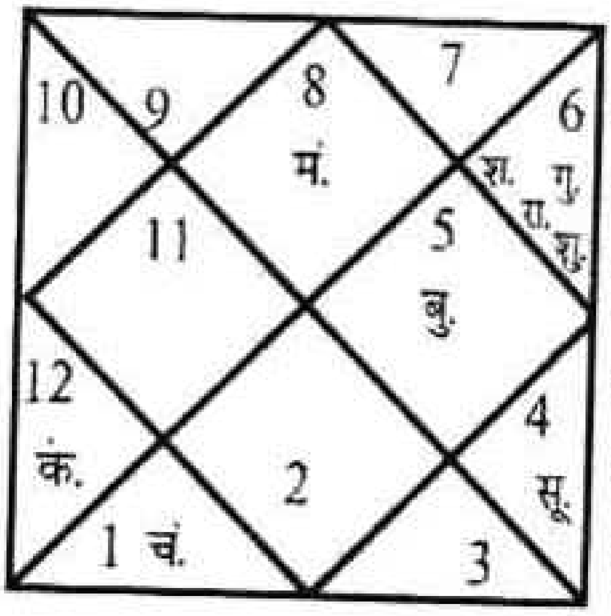
जन्म तिथि-5.3.1949, इष्ट 46/14, जन्म स्थान-जोधपुर। मंगल केन्द्र में सूर्य की दृष्टि दशम भाव में होने से सरकारी नौकरी मिली। सप्तमेश शुक्र अपने शत्रु ग्रह के साथ पाप पीड़ित है। कुण्डली 'मांगलिक' है। राहु छठे होने से पति की अकाल मृत्यु हुई। पुत्रवधू की भी मृत्यु हुई। चंद्रमा भाग्येश होकर छठे होने से 'भाग्यभंग योग' बना। चंद्रमा छठे मानसिक तनाव एवं गृहस्थ सुख में न्यूनता देता है।

श्री उत्तमचंद बाघमार



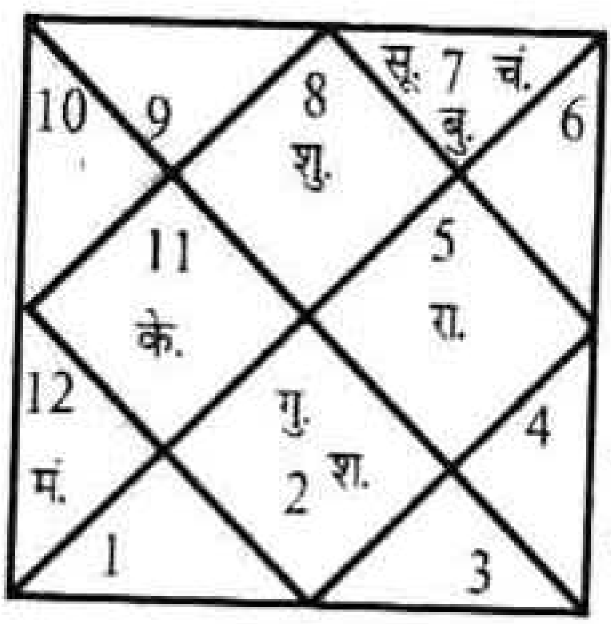
जन्म तिथि-9.11.1950, जन्म समय-8.15 प्रातः, जन्म स्थान-पीपाड (राज.)। लग्नेश आठवें '**लग्नभंग योग**' बना रहा है। मंगल आठवें राहु के साथ '**द्विभार्यायोग**' बना रहा है। जातक के दो विवाह हुए। चंद्रमा बारहवें '**भाग्यभंग योग**' बना रहा है भाग्य साथ नहीं देगा।

सेठ चुन्नी लाल दवे



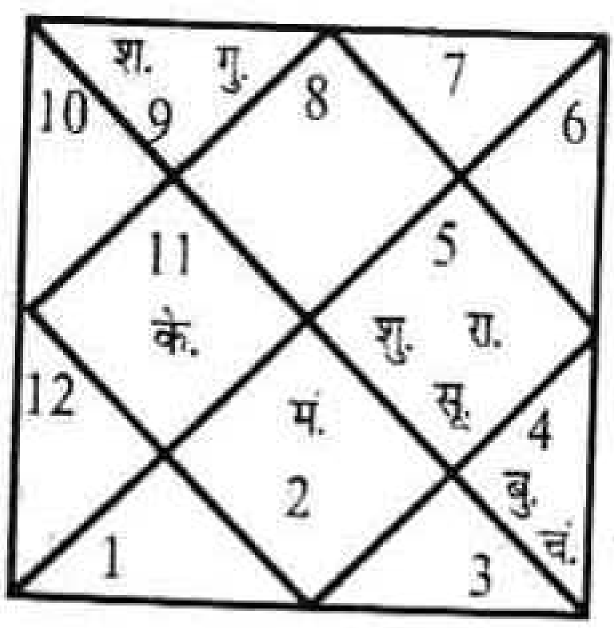
जन्म तिथि-14.8.1922, जन्म समय-13.52, जन्म स्थान-समदंडी (राजस्थान)। लग्न में मंगल **'रुचक योग'** बना रहा है। जिसके कारण श्रीमाली ब्राह्मण समाज में वे 'सेठ' के नाम से प्रसिद्ध हुए। शनि, शुक्र, बृहस्पति व राहु की चतुष्ग्रह युति लाभ स्थान में होने से उन्हें व्यापार में चारों दिशाओं से लाभ हुआ। पंचम भाव में केतु होने से पुत्र उनके मुकाबले यशस्वी नहीं हो पाये। केन्द्रस्थ बुध होने से जातक ने समाज जाति व कुटुम्ब का नाम दीपक के समान रोशन किया।

श्री डी.पी. शर्मा सीनियर स्टेशन मास्टर



जन्म तिथि-22.10.1941, जन्म समय-10.18 प्रातः, जन्म स्थान-मेरठ। चारों ग्रह केन्द्र में भरे हुए होने से राजयोग शक्तिशाली रहा। वे गृहमंत्री बूटासिंह के निजी सचिव रहे। बृहस्पति की दृष्टि लग्न पर होने से जातक धार्मिक, सैद्धान्तिक एवं आध्यात्मिक स्वभाव का है।

श्री अशोक दवे ज्योतिषी



जन्म तिथि-21.8.1960, जन्म समय-14.00 प्रातः, जन्म स्थान-पाली (राजस्थान)। सूर्य यहां **'रविकृत राजयोग'** बना रहा है परन्तु साथ में राहु बाधक है। चंद्रमा भाग्य स्थान में स्वगृही है। जातक कीतिवान् होगा। जातक को पंडिताई, कर्मकाण्ड से फायदा होता रहेगा।

❑❑❑